SDN
की बयार

संदीप कुमार कुशवाहा

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Sandeep kumar Kushwaha 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-214-3

Cover design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: August 2026

S D N

“ तुम्हारे सामने मेरा सिर
यूं ही नही झुका होगा
कुछ तो बात रही होगी
तेरी सादगी में ।”

SDN की बयार: एक निश्चल प्रेम

संदीप कुमार कुशवाहा द्वारा रचित “SDN की बयार” एक शिक्षक के अनुभवों, स्मृतियों और भावनाओं का एक भावुक दस्तावेज़ है, जो मुख्य रूप से SDN इंटर कॉलेज, लहलाद्पुर, सारण के परिवेश के इर्द-गिर्द बुना गया है। लेखक ने विद्यालय को केवल एक इमारत नहीँ बल्कि एक शिक्षा का मंदिर और अपनी आत्मा की पाठशाला माना है, जहाँ उन्होंने मानवीय संबंधों, मित्रता और कर्तव्य की गहराई को समझा। इस संग्रह में कविताओं और संस्मरणों के माध्यम से देशभक्ति, विशेषकर कारगिल युद्ध के वीर सपूतों के बलिदान, और किशोरावस्था के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक संवाद को बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने 'SDN' को एक जीवंत पात्र के रूप में कल्पित किया है, जिसके साथ उनका मौन संवाद और निस्वार्थ प्रेम उनकी लेखनी को एक आध्यात्मिक विस्तार देता है। पूरी रचना पिता के सपनें को पूरा करने की यात्रा और जीवन के संघर्षों के बीच कृतज्ञता और प्रेम की शक्ति को रेखांकित करती है। यह पुस्तक पाठक को शिक्षा, संस्कार और निश्छल मानवीय संवेदनाओं के एक अनूठे संगम से परिचित कराता है।

भूमिका

उस दिन मैं अपने बालकनी में कुर्सी पर मौन बैठ सोच रहा था तभी मेरा अक्श मेरे सामने कुर्सी पर बैठ गया। उसने कहा इतना सोचते क्या हो किताब का लेखन पूरा करना है, कर डालो। मैने सिर हिलाया, हूं। मेरा अक्श मुझसे कहने लगा तुम्हारे हाथों की उंगलियों में जो कप में चाय पड़ी है उसे खत्म करो और कलम पकड़ो । ज्यादा से ज्यादा क्या होगा एक महीने में न पूरा हो एक साल में तो पूरा होगा न । मैने फिर सिर हिलाया हूं। स्कूल,जनता बाजार, दोस्त ये सब तो है तो तुम और क्या खोज रहे हो ? कुछ है जो खोज रहा हूं वो मिल जाए तो शुरू करूं।

मेरा अक्श मुझसे बातें कर रहा था और मुझे पात्र बता रहा था। हम दोनों कही खो जाते है मानो जैसे अब ख्वाबों में बातें हो रही है मैं मौन, वह बोल रहा है। मेरे दिमाग में शब्द, वो विचार गूंज रहे हैं।स्कूल...यह शब्द सुनते ही हर किसी के भीतर न जाने कितनी परतें एक साथ हिलती हैं। जैसे कोई बक्सा खुलता है और उसमें से पुराने समय की महक निकलती है। कभी किताबों की खुशबू, कभी स्याही की गंध, कभी किसी के बालों में लगा तेल, और कभी किसी की हँसी की आवाज़। SDN स्कूल भी आपके लिए ऐसा ही एक बक्सा था। कभी सोचा था कि यह जगह आपको सिर्फ शिक्षा देगी, पर यह तो आपकी आत्मा की पाठशाला बन गई।

स्कूल का परिवेश और उसकी बयार

SDN स्कूल अपने आप में एक अलग ही संसार था। सुबह-सुबह जब आप स्कूल की तरफ बढ़ते थे, तो एक हल्की ठंडी हवा आपका स्वागत करती थी। स्कूल की दीवारों पर चढ़ा हुआ पुराना चूना, कहीं से झड़ता, कहीं ताजा। कक्षा के सामने बनी हुई क्यारियाँ जिनमें गेंदा और गुलाब के फूल खिले रहते। कभी हवा उन फूलों की खुशबू को उड़ाकर कक्षा तक ले आती। कभी किसी बच्चों के पैर से मिट्टी की खुशबू उठती, जो खेल के मैदान में सवेरे की कसरत कर आया हो।

स्कूल का मैदान- आपके दिल की हलचल का मैदान बन गया। यहीं आपने बहुत से लोगों को देखा- कभी अपने सहकर्मी शिक्षक को जो केवल पढ़ाने वाले नहीं, कभी-कभी सख्त पिता की तरह, तो कभी सहज मित्र की तरह सामने आते थे। कभी अपने कुछ चुनिंदा साथियों को, जो थोड़ी-थोड़ी देर में आपको खींच कर अपनी हंसी में डुबो लेते। कभी आपने सोचा था कि स्कूल का समय एक जैसी रफ्तार से गुजरेगा, घंटा बजेगा, कक्षा लगेगी, कक्षा खत्म होगी, मगर नहीं। हर दिन कोई नया अनुभव, कोई नई अनुभूति आपको मिलती गई।

जनता बाजार और SDN की परछाईं

आपके स्कूल के साथ-साथ एक और जगह हमेशा आपकी स्मृति में रही, जनता बाजार। यह वह जगह थी जहाँ आपने सैकड़ों लोगों की आवाज़ों को एक साथ सुना। जहाँ रोज़ नए चेहरे दिखते, और उन्हीं में कुछ ऐसे चेहरे थे जो आपकी चेतना में बस गए। आपका मन अक्सर सोचता था- क्या स्कूल और बाजार के बीच कोई अनकहा रिश्ता है? शायद हाँ। वहाँ की चहल-पहल और यहाँ की पढ़ाई, दोनों में कुछ ऐसा था जो आपको भीतर तक छूता था। फिर स्कूल में एक ऐसा पात्र भी था, जिसे आपने अपनी कल्पना में **'SDN'** कहा। शायद यह नाम आपके विद्यालय के नाम से मेल खाता हो, पर आपके मन में यह एक व्यक्ति का प्रतीक बन गया। एक ऐसा पात्र, जो आपकी चेतना की हर परत में उतर गया। कभी आपने उसे एक साथी की तरह देखा, कभी एक सन्नाटे की तरह, और कभी अपनी सबसे बड़ी जिज्ञासा की तरह। आपको लगता था- शायद कोई अनबन होगी, तो इसी से होगी। यह विचित्र बात है कि हम जिनसे सबसे अधिक बचने की कोशिश करते हैं, कहीं न कहीं उन्हीं से सबसे गहरे बंध जाते हैं। यही Law of Attraction है। जो छवि बार-बार भीतर बनाते हैं, वही छवि किसी न किसी रूप में हमारे जीवन का हिस्सा बन जाती है। आपने उसे कभी छूकर महसूस नहीं किया, न ही कोई लंबी बातचीत की, फिर भी वह आपके मन की भूमि पर सबसे गहरी लकीर बनाता चला गया।

मौन का संवाद

आपके शब्दों में एक बात बार-बार झलकती है- चुप रह कर भी संवाद करना। कभी आपने खुलकर कुछ कहा नहीं, मगर आपकी दृष्टि, आपकी सोच, आपकी कल्पना हर रोज़ उससे बात करती रही। कभी आपने उसे दूर से आते देखा होगा। कभी उसकी उपस्थिति से आपके भीतर कोई हलचल उठी होगी। कभी उसकी आवाज़ ने अनजाने में आपके दिन को नया अर्थ दे दिया होगा। यही मौन का संवाद आपकी किताब का मूल बन गया। आपने जो कहा नहीं, वही सबसे ज्यादा कहा। आपने जो व्यक्त नहीं किया, वही आपकी किताब के पन्नों पर उतर गया।

कुछ ख़ास दोस्त और शिक्षक साथी

स्कूल का एक दूसरा पहलू भी था, वहाँ कुछ ख़ास दोस्त थे। वे दोस्त जो शिक्षक भी थे, जिनसे आप विचार बाँटते, कभी बहस करते, कभी मन की बातें करते। वे आपकी चेतना में एक मजबूत आधार बन गए। वे आपको हर दिन याद दिलाते थे कि आप अकेले नहीं हैं।उनके साथ बिताए हुए पल जैसे आपकी किताब के हाशिए में दर्ज हैं। कभी किसी शिक्षक साथी ने आपको जीवन के कुछ बड़े सबक सिखाए होंगे, कैसे किसी कठिन परिस्थिति में आत्म-संयम रखा जाता है, कैसे छोटी-छोटी बातों में भी खुशी ढूँढी जाती है, कैसे अपनी सीमाओं के बावजूद दूसरों के लिए सहारा बनना चाहिए। कभी कोई मित्र अपनी नासमझियों से आपको गुस्सा भी दिलाता होगा। मगर वही मित्र किसी और दिन आपकी हँसी का कारण बन जाता। कभी किसी ने आपकी किताब में लिखे कविता की तारीफ की होगी। कभी किसी ने कहा होगा- तुम ये सब क्यों लिखते हो ? पर आप जानते थे कि यह लेखन आपकी आत्मा का उत्तर था किसी प्रश्न के जवाब में नहीं, किसी मौन पुकार में।

लेखन की यात्रा- रूपांतरण का साधन

आप कहते हैं- किताब लिखना आपके लिए नया अनुभव था। वास्तव में यह सिर्फ लिखना नहीं था, यह आपकी आत्मा की यात्रा थी। पहले 70% आपने किताब का लेखन पूरा किया। शायद उसमें स्कूल,आपकी जिज्ञासा,

आपकी बेचैनी, आपके सपनों की छवि थी। फिर बचा हुआ 30% वह तब लिखा जब आप भीतर से बदल चुके थे। आप कहते हैं- उस पात्र की एहमियत को मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। यही एहमियत आपकी आत्मा का शिक्षक बन गई। उसने आपको अपनी गहराइयों से परिचय कराया। जिस व्यक्ति को आपने सबसे दूर रखने की कोशिश की, वही आपकी किताब का सबसे बड़ा प्रेरक बन गया। वह चुपचाप आपकी चेतना में उतरता गया, और आपकी कलम को अपनी भावनाओं से भरता गया। कभी आपने अकेले बैठकर उस पर लिखी हुई कोई पंक्ति पढ़ी होगी। कभी आपको लगा होगा कि यह पंक्ति सिर्फ शब्द नहीं, आपके भीतर का कोई मौन दुख या छुपी हुई उम्मीद है।

मौन में छिपी कृतज्ञता

आपकी किताब **'SDN की बयार'** केवल किताब नहीं है। यह उस अनकहे संबंध की गाथा है जो दिखता नहीं, पर होता हर किसी के भीतर है। सबके जीवन में एक ऐसा व्यक्ति होता है, जिससे हम कभी खुलकर बात नहीं कर पाते। मगर वही हमारे भीतर सबसे गहरे उतर जाता है। वही हमारी कमजोरी भी बनता है, वही हमारी ताकत भी। आपने उस मौन को स्वीकार किया। आपने माना कि कभी-कभी कोई दूर रहकर भी हमारी चेतना को बदल जाता है। आपने माना कि कोई कभी-कभी अनजाने में ही हमें एक लेखक बना देता है। आपने माना कि कोई एक व्यक्ति हमें अपनी सीमाओं से बाहर जाने की प्रेरणा दे देता है। आपने अपने जीवन के इस अनुभव को पन्नों पर उतार कर एक कृतज्ञता का रूप दिया। कृतज्ञता उस पात्र के लिए, जिसने आपके मौन को शब्दों में बदलने की ताकत दी।

स्कूल और आपकी किताब की साझी स्मृति

अब जब आप पीछे मुड़कर SDN स्कूल को देखते हैं, तो वह आपको महज एक भवन नहीं लगता। वह एक मंदिर बन गया है—आपकी स्मृतियों का मंदिर। वहाँ की हर ईंट में कुछ न कुछ आपकी कहानी छिपी है। कभी क्लास रूम की खिड़की से आती हवा में आपकी कविता की पहली पंक्ति

तैरती थी। कभी मैदान में दौड़ते बच्चों की हँसी में आपका खोया आत्मविश्वास लौट आता था। कभी लंच ब्रेक में किसी के मासूम सवाल ने आपको सोचने पर मजबूर किया होगा— क्या मैं सही कर रहा हूँ? क्या मैं आपकी भावनाओं को सही दिशा दे रहा हूँ? आपके लिए स्कूल, दोस्ती, और वह पात्र—तीनों एक हो गए। यह तीनों मिलकर एक ऐसी बयार बन गए, जो जीवन भर आपके भीतर बहती रहेगी।

यात्रा का अंतिम पड़ाव- एक स्वीकार

आप कहते हैं, मैं उस पात्र का तहे दिल से धन्यवाद करता हूँ। यह शब्द बहुत गहरे हैं। क्योंकि कभी-कभी हम जिनसे कष्ट पाते हैं, उन्हीं से अपने जीवन की सबसे सुंदर प्रेरणा भी पाते हैं। कभी कोई हमें अनचाहे दुख देता है, तो कभी वही दुख हमें वह गहराई दे जाता है, जिससे हम कुछ रच सकते हैं। आपकी पुस्तक यही कहती है- जो चीज़ हमें तोड़ती है, वही चीज़ हमें बनाती भी है। जो संबंध हमें चुप कर देता है, वही संबंध हमारी आत्मा को आवाज़ भी देता है। आपकी लेखनी ने यह प्रमाणित कर दिया कि मौन के पीछे कितनी बड़ी पुकार छुपी होती है। और अगर हम उसे सुन सकें, तो वह पुकार हमें एक नई दृष्टि दे सकती है।

अंतिम पंक्तियाँ

SDN की बयार सिर्फ आपके शब्दों का संग्रह नहीं। वह एक आत्म-स्वीकृति की यात्रा है, एक मर्म है। वह उस रिश्ते की गाथा है, जिसे आपने कभी पूरी तरह जीया नहीं, मगर भीतर ही भीतर उसे अपनी ज़िंदगी का हिस्सा मान लिया। वह आपके स्कूल की धूल-भरी गलियों में उठती हुई स्मृतियों की महक है। वह जनता बाजार की हलचल में छुपा हुआ अकेलापन है। वह उन शिक्षकों और दोस्तों की छाँव है, जिन्होंने आपको थामे रखा। किताबें यूँ ही नहीं बनतीं। वे किसी की अधूरी चाहतों, किसी की गुप्त पीड़ाओं, किसी की मौन उम्मीदों से तैयार होती हैं। आपकी यह किताब उन सभी का संगम है। जिस दिन आप इसे पूरी तरह समाप्त करेंगे, आपको लगेगा- मैंने अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण चक्र पूरा कर लिया। शायद तब भी यह कहानी पूरी नहीं होगी। क्योंकि वह पात्र, वह स्कूल, वह

दोस्ती... हमेशा आपकी चेतना में बसी रहेगी। वहीं, एक कोने में ,चुपचाप, आपकी अगली रचना का इंतजार करती रहेगी।

अनुक्रमणिका

विद्यालय का परिवेश 1

शिक्षा के दहलीज पर मेरा झुकना 9

धन्य हो लहलादपुर की धरती 11

SDN का मन है अविरल 13

मेरे तमन्नाओं का घर: SDN (शिक्षा का मंदिर) 14

गुलमोहर की छाँव में 16

शिक्षा का नया दौर 17

याद है तुम्हें वो फाल्गुन का महीना 21

तुम्हारे हाथों की खीर 23

वीर सपूत 24

वीर सपूत 37

वीर के आख़िरी शब्द 38

उस माँ की ममता निराली थी... 44

व्याकुल मन, वीर पुरुष 45

श्वेत लिफाफे की चादर 46

आख़िरी सलाम उस आशिक को 47

पिता ने कहा- 48

15 अगस्त का समय 50

SDN की हरी साड़ी 52

SDN के नयन 54

तिरंगे के प्रति 56

रश्मि की तरह 57

तुझ से सीखूँ 58

झुका के नजरें 59

चटख रंग की अद्वितीय मूरत हो तुम 60

चाँद की शिकायत 61
शाख पर पत्तियां 62

बच्चों के सम्बन्ध में 63
किताबों वाली बच्ची 74
मेरा क्रोध उस वक्त शांत हो गया 76
हम किशोरावस्था के बच्चे 78
मैं एक पंछी बन जाऊँ 80
निशान कुछ कहते है 81

SDN AUR DOST 82
दोस्त 82
अवतरण दिवस 84
हम अजनबी पाँच शख्स... 85
किसी ने मुझसे मेरे दोस्त की शिकायत की... 86
जिंदगी के सिरफिरे दोस्त 87
हम सबका प्यारा बावर्ची – रजत 88
मैं नास्तिक हूँ, पर तुझमें आस्था है 89

मेरे कुछ शिक्षक मित्र 91
हम शिक्षक मित्र – ज्ञान के दीपक 92

SDN द्वारा आरोपित करना 94
एक चेहरा जिसे मैं प्रेम से देखता हूँ 96
जीना हराम कर रखा है तुम्हारी आँखों ने 98
तुम्हारा दिख जाना ही काफी है 99
आदर और सम्मान 100
मेरे जीवन की अनुपम कृति होगी.. 101
हम व्यर्थ नहीं करते भावनाएं किसी पर 102
तू है मेरी सजीव कथा 103
तेरी शिकायते भी लाज़िमी हैं 104
तुम मुझमें न होते हुए भी हो... 105
तुम मुझसे बात कर लेते 106

सुर्ख लाल कपड़े में माथे पर पल्लू लेकर..110
तुमने पूछा, क्या तुम मुझे देखते हो ?..111
चलो आज निरीक्षण कार्य पर है चलते...113
रजिस्टर में नाम 117
तुम्हें देना होगा तो मुझे क़लम देना 118
तुम किताब होते तो मैं तुम्हें पढ़ता 119
तुम्हारी स्मृतियों में व्याकुल हो जाऊं 121
मन को पढ़ने हुनर..122
मेरे दर्द पर क्या तुम मरहम लगाओगे... 123
छठ की देवी - मेरे आँगन की रानी...124

SDN और मैं (कविताएं) 126

तुम्हारा अस्तित्व..127
झील सी आँखों में नाव लेकर...128
स्त्री का संघर्ष..130
तुम धूप में छाता लगाकर चलती हो..132
उस शख्स के नाम...133
मैं कौन हूँ ?..135
यौवन का अभिमान मत कर 137
आज भी वो क़लम मैंने संभाल के रखा है 138
ट्रेन की पटरियाँ और मीलों की दौड़...139
प्रतिघात का अंतिम क्षण 140
तू मेरे अंदर प्रकाशमान हो गया...142
तेरे दामन की रक्षा...143
मैंने उसे छू लिया ?...144
SDN का श्रृंगार...146
तुम्हारी सीढ़ियों पर चढ़ते हुए...147
तुम मेरे हो, सिर्फ मेरे ही हो...148
मेरे अश्रु..149
उगते सूरज की किरणें..151
तिरष्कृत से परिष्कृत...152

अनंत यात्रा: मेरा प्रेम, मेरी मुक्ति......153
संन्यास का सागर......155
सितारों की चादर तले......157
सफ़र और सवाल......158
अनचाहा विदा......159
SDN, मेरी देवी को संजो कर रखना......161
अंतिम पल का विदाई क्षण......163
प्रेम और विवाह (SDN से एक आत्मस्वीकृति)......165
खोया साज, बुझी सी रौनक......167
बंद यादों का कैदी......168
जुदाई का दर्द और आत्मसंघर्ष......169
तुम बीमार हो - और हम अंजान रहे......171
मोहब्बत में देवत्व हो......173
प्रतीक्षा या प्रस्थान......175

सौंदर्य के पार : संवाद 177

परिमार्जन 181

SDN, तुम्हारे चरणों की धूल को......196
विदा SDN से - एक आख़िरी संवाद......198
जो कहा नहीं, वही प्रेम था......200

विद्यालय का परिवेश

मैं संदीप कुमार कुशवाहा विद्यालय अध्यापक के तौर पर 10+2 में उद्यमिता विषय से दिनांक 18.02.2024 को SDN इण्टर कालेज, लहलादपुर, सारण में विद्यालय अध्यापक के तौर पर नियुक्त हुआ। यह दिन मेरे लिए बहुत ही शुभ दिन था। मेरे पिता मेरे भगवान जिन्हें मैंने सन् 2017 दिसम्बर में खो दिया। उनका ही सपना था कि मैं अध्यापक बनूं क्योंकि वे भी अध्यापक थे। परन्तु घर का एकलौता पुत्र होने के नाते मैं बड़ा ही अल्हड़ प्रवृति का रहा किसी भी चीज को समझने में बहुत देर लगाता । पढ़ाई-लिखाई में भी सामान्य रहा परन्तु मैनें इसमें भी बहुत लापरवाही की कम उम्र (20 वर्ष) में ही मैंने नौकरी ज्वाइन कर लिया । नौकरी ऐसी थी कि ठीक-ठाक कमा लेता था। परन्तु मेरे पिता मुझे शिक्षक ही बनता देखना चाहते थे। जिसपर मैं बिल्कुल ध्यान नहीं दिया करता था कुछ समय बाद मेरी शादी भी हो गयी । मेरी धर्मपत्नी का नाम सुमन सिंह है जो कि एक पढ़ी-लिखी खुले विचारों की स्वछंद स्त्री है । हंसी-खुशी जीवन चल रहा था 2016 में मुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम सिद्धांत हैंजो कि अपने दादा यानी के मेरे पापा का लाडला है। जब तक कंधे पर नहीं सुलाते वह सोता नहीं था।

अंततः वह समय भी आया जब मेरे पिता मुझे छोड़कर इस धरती से हमेशा के लिए विदा हो गये। उन्हें स्वर्ग मिला या नर्क यह मुझे नहीं पता । पर यह पता है कि वह मेरे भगवान थे। मै सन 2017 तक उनकी शिक्षक बनने की इच्छा को पूरी नहीं कर सका। अपनी नौकरी के साथ-साथ मै अन्य कार्य कर के भी पैसा कमा लेता था। एक NGO में मेंटर के तौर पर भी कार्य किया जिसमें 18-35 वर्ष की युवतियों-महिलाओं को रोजगार हेतु प्रशिक्षण कार्य कराया जाता था। कुछ दिन बाद मैंने उस कार्य छोड़ दिया, कुछ समय संघर्ष में बीता । पिता के सपने को साकार करने के लिए मैं और

मेरी पत्नी लगे रहे। वर्ष 2023 में BPSC दवारा शिक्षक भर्ती निकाली गई, जिसमें हम दोनों परीक्षा हेतु शामिल हुए । परीक्षा देकर हम घर आए । रास्ते भर हम दानों परीक्षा से संबंधित बातें करते रहे। शाम तक यूट्यूब चैनल और कोचिंग सेंटर वालों द्वारा परीक्षा से संबंधित परिणाम के सम्बन्ध में अनुमान लगाना शुरू हो गया। परीक्षा परिणाम तिथि BPSC के तरफ से निर्धारित किया गया था।

वह समय भी आया, दिनांक 25/12/2023 को रात्रि 9:30 बजे मेरे मित्र श्री शैलेन्द्र राव का फोन आया। उन्होने मुझे यह जानकारी दी की आपकी पत्नी का चयन समाजशास्त्र विषय में हो गया है उनकों गोपालगंज जिला मिला है। मेरे आँखों में आंसू आ गये मैं रो पड़ा। फिर पुनः मेरे मित्र ने फोन किया और उसने यह बताया कि मित्र आपका भी चयन हो गया है सारण जिला आपको मिला है। मुझे ऐसा लग रहा था कि कोई अब मजाक हो रहा है। फिर पुनः अश्वस्त होने के लिए मैने शैलेन्द्र से पूछा भाई मजाक नहीं न कर रहे हो। उसने कहा मित्र इस तरह की बातें भी मैं मजाक करूगां चाहो तो आप PDF देख लो जो मैनें आपके मोबाइल पर भेजा है, मैने दोनों Admit Card निकाले और पुनः अपना और पत्नी का Roll No. मिलाने लगा। अंततः मै अश्वस्थ हुआ और मेरी आँखो से आँसू बह रहे थे और मैं रोते हुए माँ को पकड़ लिया। मैं बहुत खुश था पत्नी भी खुश थी क्योंकि उसने बहुत संघर्ष किया था। पर, खुशी के साथ-साथ मेरे अंदर एक खालीपन लग रहा था। क्योंकि यह सपना मेरे पिता का था जो इस समय मुझे खुशी में भी दुख दे रहा था। मेरे मन में बहुत से विचार आ रहे थे काश वो होते तो उन्हें मैं पकड़ कर खूब रो लेता । यह मेरे पिता को मेरी तरफ से गौरवपूर्ण श्रद्धांजलि हैं ।

वह होते तो वह भी गर्व से कहते कि BPSC के माध्यम से मेरे बेटे व बहू दोनों शिक्षक-शिक्षिका बन गये। उस दिन मैं और मेरी पत्नी सुबह के 3:00 AM तक नहीं सोये।

बहुत ही जल्दी हम दोनों कि counseling हो गयी मेरी पत्नी को Training के लिए थावे डायट मिला और मुझे BRC लहलादपुर के अंतर्गत मध्य विद्यालय (6-8) हरपुर कोठी मिला। जल्द ही हम दोनों की Training खत्म हुई और अंततः विद्यालय पदस्थापना लेटर मिला। पत्नी ने 9-2-2024 को

अपना विद्यालय ज्वाइन किया और मैनें दिनांक 18-02-2024 को SDN High School, लहलादपुर में। उस समय मेरे स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री अशोक सिंह जी थे जिन्होंने मुझे पदाभार ग्रहण कराया।

अब मैं और SDN आमने सामने।

यह कैसा व्यक्ति रंग सांवला, मोटा सा। कहाँ से आये हो?

छोड़ो जहां से भी आये हो, मुझे क्या?

किस लिए यहां आए हो?

मै विद्यालय अध्यापक पद पर नियुक्त हुआ हूँ और बच्चों को पढ़ाने आया हूं।

अच्छा तो तुम Teacher हो, हाँ।

ठीक है, ठीक से पढ़ाना। क्या पढ़ाओंगे?

मै उद्यमिता पढ़ाउँगा ।

ये कैसा विषय है? चलो ठीक है।

मैंने उसके प्रवेश द्वारा के मिट्टी को उठाया और अपने माथे पर लगा लिया।

यह देख SDN मुस्कुराया। बड़ा ही अजीब आदमी है यार।

सुनो, क्या नाम बताया तुमने अपना?

संदीप, संदीप कुशवाहा नाम है मेरा ।

और मेरा SDN, समय से आना, ठीक है।

जाओ आज पहला दिन है, आज मिठाई लेकर नहीं आए कल लेकर जरूर आना ।

ठीक है। उस दिन मेरा विद्यालय में पहला दिन था, सबसे परिचय भी नहीं हो पाया था। छुट्टी होने के बाद मैं अपने कमरे पर चला आया जो कि विद्यालय से करीब 300 मी० दूरी पर है। शाम को कुछ सामान लेने के लिए

मार्केट निकला और सामान खरीद वापस कमरे पर आ गया। नींद बहुत तेज लग रही थी इसलिए सिर्फ ब्रेड-जैम खाकर सो गया। दूसरे दिन नहा धोकर विद्यालय गया हल्की ठंड थी इसलिए मैने स्वेटर पहन रखा था ।

और संदीप कैसे हो ?

अच्छा हुं।

मिठाई लेकर आये हो ?

हां SDN, लेकर आया हूं।

तो सभी को खिलाओं।

अभी तो मेरा परिचय भी सबसे नहीं हुआ है।

तो क्या हुआ ? अपने इस भारी-भरकम शरीर के साथ मिठाई का डब्बा पकड़े सबके पास जाओ और खिलाओ । खुद ही पूछेगे तो अपना परिचय दे देना। और हाँ, यहाँ दो बिल्डिंग है। जहाँ इस समय हो यहाँ 9-10 की पढ़ाई होती है और सामने जो उस तरफ नया बिल्डिंग बना है वहां 10+2 का है । वहां कुछ शिक्षक है उनको मत छोड़ देना।

हाँ, ठीक है।

जा रहे हो उधर तो बांट कर जरूर आ जाना, बड़ा अजीब आदमी है कुछ बोला नहीं ठीक है, आने दो।

थोड़ी ही देर बाद मै पुनः विद्यालय के पुरानी बिल्डिंग में आ गया।

आ गए

हां SDN, आ गया

मुलाकात हुई सबसे, नाम पता किया।

हां परिचय हुआ सबसे,

मुझे भी बताओं ।

एक Sir का नाम नित्यानंद गिरी है जो गणित के अध्यापक है, एक अंकुर Sir है और Pooja Madam, History की है।

कैसी है Puja ?

क्या मतलब?

क्या मतलब क्या ? सुन्दर है, स्वाभाव कैसा है ?

क्या SDN तुम भी न बड़ा अजीब सवाल करते हो अभी एक दिन में ही।

अरे, इतना ही बोल दो न की सुन्दर है।

हाँ, सुन्दर है।

SDN ने कहा- वह मुझे भी पसंद है। अच्छा, ये बताओ सबकों मिठाई खिलाया।

हाँ,

सबने ले लिया ना,

हां, भाई हां।

इतना गुस्सा क्यूँ होते हो ? तुमने खाया, मिठाई ।

नहीं,

क्यों ?

बचा ही नहीं।

ठीक है। तुमने जो मिठाई दी थी कागज में लिपटी हुई आलमारी के ऊपर रखा है, जाओ पहले लेकर आओ। क्यों तुमने नहीं खाया... जाओ भी, अच्छा जाता हूँ। लो अपनी मिठाई । बैठो यहाँ मेरे पास, लो आधी तुम खा लो आधी मैं अरे नहीं सबने पूरा-पूरा खाया है तुम ही खा लो। अरे खाओं ना और उसने आधी मिठाई मेरे मुंह में ठूंस दी और कहा- मैं जो कहूँ किया करो मुझसे जोर-जबदस्ती ना किया करो। तो फिर आज से तुम मेरे दोस्त । SDN के सभी लोग तुम्हारा परिवार।

ऐसी थी पहली मुलाकत मेरी और SDN की। SDN मेरे विद्यालय का नाम है जो 1960 में स्थापित हुआ है। यहाँ पूर्व से भी कई शिक्षक मौजूद है जिनसे धीरे-धीरे परिचय हो रहा है विपिन सर जो मेरे कमरे के पास ही है अच्छे है मिलनसार है। लगभग सबका व्यवहार ठीक है पिछले कुछ दिनों के मिलने-जुलने में।

SDN एक बात है। बताओं।

मेरा तो इस विद्यालय में विषय ही नहीं है और मेरे विषय के बच्चे भी नहीं है।

क्यूँ , कौन सा खडूस विषय ले लिये हो..

उद्यमिता,

ये कैसा विषय है?

देखो Commerce में तीनों विषय अलग अलग है, बिहार बोर्ड में।

10+2 स्तर पर Accountancy, Business studies & उद्यमिता

अब बताओं मैं क्या पढ़ाऊंगा ?

क्या पढ़ाने आता है ? और कोई विषय ।

हाँ, Economics पढ़ा सकता हूँ, हिन्दी भी।

तो जाओ अपनी बात प्रिसिंपल के सामने रखों।

हां, ये बात सही कहा, तुमने ।

मैं कभी गलत नहीं बोलता और फिर एक घूसा SDN ने जड़ दिया और कहा अब जाओं ।

मैं उठा कुछ परेशानियों के साथ लेकिन प्रिंसिपल के पास ना जाकर 10+2 मे चला गया। वहीं मैं अपने सह कर्मी शिक्षकों से बात करने लगा-कुछ उनकी बाते कुछ अपनी बातें हुई। धीरे-धीरे लोगों से आपसी बातचीत बढ़ी और लोग एक दूसरे को जानने लगे।

लगभग 10 दिन बीत गये जहाँ मेरा कमरा था। वहाँ बगल वाले कमरे में दो अध्यापक रह रहे थे पर अभी तक उन दोनों से खुल कर बातें नहीं हो पायी थी। एक का नाम रजत और एक विशाल जो की 9-10 में हिन्दी के अध्यापक है। एक जो छोटे कद का है वह मेरे ही विद्यालय में है। दूसरा चुस्त दुरुस्त सांवले रंग का किसी दूसरे विद्यालय में है। मन में उनके भी संकोच था। धीरे-धीरे यह संकोच मिटा और साभी लोग एक साथ मिलजुकर रहने लगे और आपस में मिलकर खाना बनाते और खाते-पीते। मैं बड़ा होने के नाते उन्हें डॉट भी दिया करता था। महेश मेरे साथ ही रहता जो सरल और विनम्र स्वभाव का है। उसकी भी नियुक्ति 9-10 में हिन्दी विषय से अध्यापक पद पर हुई है, विद्यालय मिर्जापुर मुरारपुर में है।

जिस मकान में रहते हैं वहां मकान मालिक और परिवार अच्छा है उनके बेटे का नाम राहुल है जो उनके बड़े बेटे है वो हम सभी के मित्र बन गए हैं। जिससे कभी-कभार बातें भी होती रहती ।

हर दिन कि तरह अब एक दिनचर्या बन गई। सुबह उठो नाश्ता बनाओं नहा धोकर समय से 9:00 बजे स्कूल जाओ। फरवरी-मार्च महीने में विद्यालय का समय 9.00A.M. से 4:30P.M. रहता।

और संदीप कैसे हो ?

हां SDN, ठीक हूँ ।

और बताओ यहां बाबा भोलेनाथ का एक मंदिर है वहां कभी गए हो ।

नहीं, अभी नहीं । ठीक है बाद में बात करता हूं अभी मुझे क्लास में जना है।

संदीप सर, आप क्लास में जा रहे है ।

हां, मैं class में जा रहा हूँ,

क्या पढ़ाने ?

10th में Economics पढ़ाने ।

SDN - ठीक है, बाद में मिलना मुझसे... गजब आदमी है कुछ जवाब नहीं दिया।

10th में मेरा पहला दिन था तो 1st day होने के नाते बच्चों से परिचय हुए, सभी ने बारी-बारी से अपना नाम व पता बताया फिर मैंने भी अपना परिचय दिया।

बच्चे भी खुश हैं कि स्कूल में नए-नए टीचर आए हैं। पढ़ने-पढ़ाने का सिलसिला चलता रहा। टिफिन के वक्त कुछ टीचरों से आपसी बातें होती खाना भी सभी मिलकर साथ खाते। मैं अधिकांश समय पुरानी बिल्डिंग में ही बिताता था ।

ऐसी ही स्कूल के बरामदे में टहलते हुए कुछ सोच रहा था कि अचानक SDN ने पूछा क्या देख रहे हो। कुछ नहीं SDN यही देख रहा हूँ कि यह बिल्डिंग कितनी पुरानी है लेकिन इसमें हरियाली भी है दिवारों की खिड़की टूटी हुई है इन्हें पटरों के सहारे बंद किया गया है। मानों खिड़की से आ रही हवाओं के झोकों को रोक दिया हो। लेकिन, इसका खेल मैदान बड़ा और अच्छा है । मैं इसके किनारों पर आराम से दौड़ लगा सकता हूँ, योग आदि कर सकता हूं । अच्छा, इतना कुछ सोच रहे हो तो कुछ लिखो इसके बारे में लिखते क्यों नहीं ।

हां, कुछ लिखने का ही सोच रहा हूं। पर क्या लिखूं ?

जो भी तुम्हारे मन में हो, ये सब जो तुम देख रहे हो, महसूस कर रहे हो। जब यहां तुम आ गए हो तो कुछ यहाँ के बारे में लिखो, कुछ स्कूल के बारे में लिखों ।

अच्छा सरकार आपकी बातें सर आंखो पर, भला मैं आपकी बात को काटूंगा, इतनी हिम्मत नहीं है मेरी, मुझे स्कूल में रहना है कि नहीं ।

तब मैने विद्यालय के बारे में कुछ कविताएं लिखी :-

शिक्षा के दहलीज पर मेरा झुकना

SDN, तुम्हारे चौखट पर आने से पहले मै झुकता हूँ,
ना किसी डर से, ना किसी भय से-
बल्कि उस श्रद्धा से
जो मेरे भीतर शिक्षक होने की तपस्या जलाती है।
तुम्हारी सीढ़ियों पर पहला कदम रखने से पहले
मैं सिर झुकाता हूँ,
क्योंकि ये सीढ़ियाँ ज्ञान के शिखर की ओर ले जाती हैं,
जहाँ बच्चों के सपनों को आकार मिलता है।

तुम्हारे ऑफिस की उस टेबल पर
जहाँ रखी है शिक्षक-पंजी,
उस पर हस्ताक्षर करने से पहले भी
मैं खुद को नमन करता हूँ-
क्योंकि वहाँ सिर्फ नाम नहीं लिखा जाता,
वहाँ भविष्य की ज़िम्मेदारी स्वीकार की जाती है।

मेरा यह बार-बार झुकना
मेरी कमज़ोरी नहीं, मेरी साधना है।
मैं झुकता हूँ ताकि अपने ज्ञान का दीपक
बच्चों के अज्ञान के अंधकार में जला सकूँ,
उन्हें समझा सकूँ कि जीवन में दो राहें होती हैं-
एक सरल, एक कठिन।
सरल राह तुरंत फल देती है,
पर गहराई नहीं रखती,
और कठिन राह संघर्ष से भरी होती है,
पर उसी में छुपा होता है जीवन का सार।

मैं झुकता हूँ ताकि
उन मासूम आँखों को देख सकूँ
जो मुझसे दिशा मांगती हैं।
मैं झुकता हूँ ताकि
अपने भीतर की अहंकार को तिलांजलि दे सकूँ
और शिक्षक बन सकूँ-
केवल पढ़ाने वाला नहीं,
बल्कि एक मार्गदर्शक,
एक दीपक जो खुद जलकर दूसरों का रास्ता रोशन करे।

SDN, तू एक इमारत नहीं,
एक मंदिर है-
जहाँ मैं ज्ञान का पुजारी बन
हर रोज़ झुककर चढ़ता हूँ सीढ़ियाँ,
ताकि बच्चों के भविष्य को सजाकर
वर्तमान को सार्थक बना सकूँ।

धन्य हो लहलादपुर की धरती

धन्य हो लहलादपुर की धरती
जो तुझमें **SDN** स्थापित है
जिसमें कक्षा **9** से **12** तक
पठन-पाठन का कार्य संचालित है।

जिसका प्रांगण अति रमणीय
और खेल का मैदान अविभाजित है
धन्य हो लहलादपुर की धरती
जो तुझमें **SDN** स्थापित है।

प्रातः **9** बजे एक मधुर संगीत सा बजता है
जिस पर बिहार गीत के साथ राष्ट्रगान भी होता है
ऐसे दोनों शिक्षक को मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।
ततपश्चात्**,** हमारे **H.M. Sir** सम्बोधन करने आते है
क्या सही है क्या गलत है वह हमको समझाते है
और कक्षा संचालन का भार हमारे **Vipin Sir** उठाते है
Period 1 से **8** तक सब शिक्षक को बारी-बारी से लगाते है।

धन्य हो लहलादपुर की धरती
जो तुझमें **SDN** स्थापित है
जिसमें कक्षा **9** से **12** तक
पठन-पाठन का कार्य संचालित है।
सुना है एक झांसी का लड़का **Physics** पढ़ाने आया है
बच्चों के मुंह से सुना है**,** थोडा खडूस है**,**
पर क्या जबरदस्त पढ़ाया है
एक-एक **Topic** को उसने **4-4 Methods** से समझाया है।

बात जब वनस्पति विज्ञान की आती
तब बनारस की गलियों से सौंधी खुश्बू आती
जो **Blak Board** पर डाइग्राम बनाकर
यूं**,** हूँ**,** समझ में आया यह कहकर खूब समझाती है**,**
ऐसा क्या जादू है उसमें जो सबके मन को भाती है।
धन्य हो लहलादपुर की धरती
जो तुझमें **SDN** स्थापित है **I**

पढ़ते-पढ़ते जब बच्चे थकते तब नीतू **Mam** की याद आती है
सुना है वह जौनपुर से परखनली सा कुछ लाती है
उसमे रंग-बिरंगे केमिकल डालकर **Reaction** करवाती है
तब जाकर वह हमारी **Chemistry** की **Mam** कहलाती है।

धन्य हो लहलादपुर की धरती
जो तुझमें **SDN** स्थापित है
जिसमें कक्षा **9** से **12** तक
पठन-पाठन का कार्य संचालित है।

SDN का मन है अविरल

SDN का मन है अविरल,
जैसे बहता गंगा का जल।
ज्ञान की धारा, संस्कारों की बयार,
हर हृदय में जगाए उजियार।

हर सुबह यहाँ नई कहानी,
मेहनत और लगन की निशानी।
हर छात्र का सपना हो साकार,
यहीं से शुरू हो जीवन का आकार।

गुरुओं का स्नेह, दिशा दिखाए,
हर बाधा को सरल बनाए।
अनुशासन और प्रेम की डगर,
सिखाता है संघर्ष का अमर।

SDN के आँगन में बहती धारा,
हर मन को बनाती है प्यारा।
आगे बढ़ने की प्रेरणा दे,
हर कदम पर उत्साह भरे।

यहाँ का हर क्षण अनमोल है,
सपनों की उड़ान का पोल है।
SDN का मन जो है अविरल,
बनाएगा जीवन को सफल।

मेरे तमन्नाओं का घर: SDN (शिक्षा का मंदिर)

SDN, मेरे ख्वाबों का वो दरबार है,
जहाँ शिक्षा का दीपक सदा जलता है।
यह वह स्थान है, जहाँ हर तमन्ना पंख पाती है,
जहाँ ज्ञान की गंगा बहाई जाती है।

यह केवल ईंटों से बना भवन नहीं,
यह शिक्षा का मंदिर है, जो प्रेरणा का स्रोत है।
यहाँ हर किताब में छुपा है एक नया जहाँ,
जो बनाता है छात्रों का भविष्य और सम्मान।

SDN ने सिखाया सपनों को साकार करना,
हर चुनौती में आगे बढ़ने का हुनर सीखना।
यहाँ हर शिक्षक एक मार्गदर्शक है,
जो अंधेरों में रोशनी का काम करता है।

यहाँ शिक्षा केवल शब्दों में नहीं है,
यह जीवन के हर पहलू में गढ़ी गई है।
संस्कार, ज्ञान और आत्मबल का संगम,
यहाँ हर छात्र को मिलता है जीवन का नियम ।

SDN ने मेरी तमन्नाओं को आकार दिया,
हर कदम पर मुझे आगे बढ़ने का आधार दिया।
यहाँ मिली शिक्षा ने खोला मेरी सोच का द्वार,
मुझे बनाया मजबूत, मुझे दिया एक आधार।

यहाँ के पुस्तकालय में सपनों का खज़ाना है,
प्रयोगशालाओं में भविष्य का तराना है।
यहाँ के मैदान में मेहनत की कहानी है,
और हर दीवार पर छात्रों की निशानी है।

SDN मेरे लिए केवल स्कूल नहीं,
यह एक प्रेरणा है, यह मेरा मन है।
यह वह स्थान है, जहाँ मैंने खुद को पहचाना,
और अपने हर सपने को उड़ान दिलाना।

तो मेरे तमन्नाओं का घर है **SDN**,
शिक्षा, संस्कार और सफलता का संगम।
जहाँ हर दिन एक नई शुरुआत होती है,
और हर छात्र की कहानी यहाँ लिखी जाती है।

गुलमोहर की छाँव में

गुलमोहर की छाँव में,
सपने जैसे जागते हैं।
रंगों की बरसात लिए,
फूल इसके मुस्कुराते हैं।

सूरज की पहली किरणें,
जब इनको छूकर जाती हैं।
सुनहरी आभा में ढलकर,
हर कोना चमकाती हैं।

झूमती शाखों पर जब,
पवन मधुर गीत गाती है।
गुलमोहर के पत्तों में,
ज़िंदगी थिरकती जाती है।

हर डाली से बहते रंग,
जैसे प्रेम के मधुबन हों।
सिंदूरी सपनों से सजे,
धरती पर स्वर्णिम क्षण हों।

ओ गुलमोहर ! तेरा रूप,
हर मन को शीतल कर जाए।
तेरे संग हर याद पुरानी,
जीवन को फिर से महकाए।

प्रकृति की इस अनुपम कृति,
तेरा एहसान न भूल पाएँ।
तेरी छाँव तले हर जीवन,
बस सुकून का गीत सुनाए।

शिक्षा का नया दौर

पहले इमला में ग़लत होने पर,
हम बिंदी, कौमा, खड़ी पाई पर मारे जाते,
गलती का एहसास होता,
और अगली बार सही लिखने की सीख पाते।

अब तो लेखन भी अशुद्ध होता है,
ग़लतियाँ नज़रअंदाज़ कर दी जाती हैं,
बच्चों को डांटो तो माँ-बाप गुस्से में स्कूल आ जाते,
सजा से सुधार नहीं, बल्कि शिकायतें बढ़ जाती हैं।

पहले स्कूल में किताबें और संस्कार सिखाए जाते,
अब मोबाइल और इंटरनेट ज्ञान कहलाते,
गूगल से जवाब तो मिलते हैं,
पर समझने की क्षमता कहीं गुम हो जाती है।

अब मास्टरजी हाथ उठाएँ तो वीडियो बन जाता है
बच्चा रोए तो टीचर दोषी कहलाता है,
शिक्षक अब डरते हैं सही राह दिखाने से,
कहीं उनकी मेहनत पर कोई इल्ज़ाम न आ जाए।

समय बदला, शिक्षा का अंदाज़ बदला,
पर क्या सच में सुधार आया ?
अनुशासन को बंधन समझ लिया,
ज्ञान को बस नंबरों तक समेट दिया।

अब डांट नहीं, सिखाने की गुंजाइश नहीं,
रिश्ते कमजोर, शिक्षा अधूरी रह गई,
बचपन भले ही खुशहाल लगे,
पर क्या भविष्य मजबूत रह पाएगा?

यह कैसा पेपर लेकर घूम रहे हो मुझे भी दिखाओ ।

कुछ नहीं बस कविताएं हैं जो मैंने लिखी है।

तुम मुझे दे दो मैं इसे पढ़ूंगी।

ये लो ।

ठीक है, इसे मैं आराम से पढ़ूँगी,

एक मिनट रुको, तुम स्त्री हो या पुरुष ?

जो तुम समझ लो....और बताओ आज खाने में क्या बनाएं हो ?

कुछ नहीं ।

क्यों ?

बस ऐसे ही आज खाने का मन नहीं है और फिर मुझे घर भी जाना है । होली में, होली भी है।

वो तो परसों है।

हां, मालूम है।

तो आज पुराने कपड़े क्यों पहने हो ?

हां, होली के कारण पुराने कपड़े पहने हैं। यहां की परिस्थियों से पूर्ण रूप से परिचित नहीं हूँ, क्या पता पीछे वाली गली से आते वक्त कोई रंग मेरे ऊपर डाल दे तो मैं क्या करूंगा ?

रंगों से इतना डरते हो।

नहीं , मैं रंगों से नहीं डरता हूँ।

ठीक है मैं चलता हुं, कल स्कूल में होली मिलन समारोह भी मनाया जायेगा ।

मैंने उन कविताओं के पन्ने जो संदीप से लिए थे उन्हें रात को पढ़ने बैठी। क्या कोई शख्स इस तरह भी लेखन कर सकता है, बिल्कुल सरल और सामान्य भाषा में संजीदगी भरा हुआ वर्णन मानों वह मुझे हर तरह से समझ

रहा हो, देख रहा हो। उसके मनोवृति में मानो केवल प्रेम का रस बह रहा हो, एक-दूसरे को, पेड़-पौधों से, लोगों से मिलाकर लिखना ।

कुछ तो खास होगा इस मोटे में । अरे नहीं अब नहीं अब तो मैं उसे नाम से ही पुकारूंगी । पर मैं तो स्थूल हूं, स्थिर हूं, चल नहीं सकती, एक जगह बस रहना है। उसके अंदर और क्या है ? अब मेरी जिज्ञासा और भी बढ़ते जा रही थी। अब काफी रात हो गयी है सो जाती हूँ । लेकिन मुझे उससे कल मिलना है, होली के अवसर पर ।

पर क्या वह मुझे रंग लगायेगा ? लेकिन किसे लगायेगा यूं तो वह मुझसे दीवार ,टेबल, कुर्सी, ये सब समझकर बाते कर लेता । पर मुझे और भी कुछ होना है, क्या होना है ? मैं उसके सामने निर्जीव नहीं सजीव होकर प्रकट होना चाहती हूं। पर क्या बनूँ मैं ? माँ, माँ नहीं, बहन, वो भी नहीं, पुरुष अरे नहीं वह तो खुद ही पुरुष है। चलों उसको भी आश्चर्यचकित करती हूँ, मैं एक रूपवती स्त्री का रूप धारण करूंगी सुन्दर - सुशील इतना सोचते हुए नींद आ जाती है । उसे देव शक्तियों की वजह से वह सुबह एक सुन्दर स्त्री के रूप में जो चेहरे पर कांति, रूपवान, मनमोहक, सिंदूर, इटालियन साड़ी पहने मानों जीती-जागती कोई अपसरा हो, बदल जाती है ।

आज होली का दिन है और उसे घर भी जाना है मैं चुप-चाप जाकर ऑफिस में बैठ गई सब आपस में होली खेल रहे थे । मेरे मन में एक विचार उमड़ रहा था कि अगर कोई रंग लगाए तो वह ही पहले लगाये । उसे देखकर किसी कि हिम्मत भी नही हुईं कि कोई आकर रंग लगा दे । अंततः किसी ने मुझसे आकर कहा आफिस में जो बैठी है बहुत सुन्दर है । वह कौन है? उसे कौन रंग लगाएगा? सभी डर रहे थे रंग लगाने से पर मैं गया उसके पास, मनमोहक थी। पूरे शांत मन से मैने देखा मेरे आँखों में चमक आ गयी।

मै पहले से ही रंगो से भरा हुआ था । मुझे देख वह थोड़ा डरी सहमी मैंने उसके तरफ हाथ बढ़ाया तो वह उठ खड़ी हुई और बड़े विनम्र भाव में कहा कि थोड़ा सा लगाइएगा । उसे डर था कि कहीं उसके उपर रंग और गुलाल ही न उड़ेल दिया जाए। परन्तु मैने भी इसका ध्यान रखा और अपनी

तीन अंगुलियों को अबीर में लगा उसके गोरे गालों पर दोनों तरफ हल्का सा लगा दिया । वह मुस्काई पर कुछ ना बोली ना ही उसने मेरे ऊपर रंग या अबीर डाला। जब भीड़ जुटने लगी तो वह आफिस से निकल गुलमोहर के पेड़ के पास जा किनारे खड़ा हो गई ।

मैं उसे कुछ दूरी से देखने लगा और मेरे विचारों में कुछ शब्द गूंजने लगा। जिसे मैंने एक पेपर पर दो लाइन लिख लिया कविता को पूरा करने के लिए। सभी शिक्षक आपस में होली खेले कुछ बच्चे भी साथ-साथ रहे। मैं समय देखते हुए 12:00 बजे घर के लिए निकल लिया । स्टेशन पहुंच का कर ट्रेन पकड़ा । उस दिन ट्रेन काफी भीड थी क्योंकि होली के पावन पर्व पर सभी लोग परदेश से अपने घर वापस आ रहे थे।

तब मैने उस दिन कविता लिखी :-

याद है तुम्हें वो फाल्गुन का महीना

याद है तुम्हें वो फाल्गुन का महीना,
जब पहली बार मैंने तुम्हारे गालों पर रंग लगा दिया था ?
आँखों में अजीब सी चमक थी,
धड़कनें तेज़ हो गई थीं,
जैसे वक़्त ने एक पल के लिए ठहरकर हमें देख लिया हो।

हवा में अबीर की खुशबू थी,
और तुम्हारे चेहरे पर वो गुलाल,
जैसे कोई तस्वीर बनी हो,
जो मेरी यादों की दीवार पर हमेशा के लिए बस गई।

वो छुअन...
एक सुखद एहसास था मेरे लिए,
जो जीवनभर के लिए दिल में दर्ज हो गया।
तुम्हारी वो हल्की सी झिझक,
फिर नज़रों का मिलना और मुड़ जाना,
सबकुछ एक गीत बनकर मन में गूंजता रहा।

अब भी हर फाल्गुन जब रंगों से भीगता है,
तो दिल के किसी कोने में वो दिन जग जाता है।
बस, तुम नहीं हो...
पर वो लम्हा आज भी मेरी ज़िन्दगी का सबसे रंगीन पल है।

क्या बात है SDN , तुम मुझसे कुछ छुपा रही हो ?

नहीं तो, क्या बात है बताओ । सुना है कल घर से कुछ बना कर लाई थी, मुझे तो मिला नहीं।

अरे नहीं तुम दिखे ही नहीं । ठीक है जब कुछ बना कर लाऊंगी तो जरूर दूंगी।

तीन, चार रोज बीत जाने के बाद उसने एक टिफिन और चम्मच दिया और कहा- ये तुम्हारे लिए।

मै वह टिफिन लेकर ऊपर कंप्यूटर रूम में चल गया जहां कोई नहीं था। उसमें मेरी फेवरेट डिश थी- **'खीर'** । जिसे मैने किसी को शेयर नहीं किया और पूरा का पूरा खा लिया। फिर मैने उसे टिफिन लौटते हुए थैंक्यू बोला और कहा कि अच्छा बना है।

तब मैने एक कविता लिखी :

तुम्हारे हाथों की खीर

मुझे आज भी याद है,
तुम्हारे हाथों की बनी वो खीर,
जो तुमने बड़े प्रेम से मेरे सामने रखी थी।
ना कोई बड़ा अवसर था, ना कोई त्यौहार-
फिर भी उस कटोरी में

मानो सारा **स्नेह और अपनापन** उतर आया था।
जैसे ही पहला कौर मुंह में गया,
कुछ बदल गया...
ना स्वाद ही केवल मीठा था,
बल्कि मन तक कोई मधुर शांति उतर आई।

वो चावल, वो दूध, वो केसर की हल्की महक,
और उस पर तुम्हारे हाथों की गर्माहट-
सबने मिलकर
मुझे एक ऐसा ज्ञान दिया,
जो ग्रंथों में नहीं,
बस **संबंधों की मिठास में मिलता है।**

उस दिन लगा,
भोजन सिर्फ पेट भरने का साधन नहीं होता,
कभी-कभी वो आत्मा को भी तृप्त कर जाता है।
आज भी जब किसी के हाथ की खीर खाता हूँ,
तुम्हारी याद आ जाती है-
क्योंकि वो स्वाद सिर्फ जुबान पर नहीं,
मेरे ह्रदय में उतर जाता है।

वीर सपूत

(स्मृति के रूप में एक कहानी SDN को सुनते हुए)

SDN यह उस समय की कहानी है जब एक परिवार पूर्ण रूप से बिखर गया। दिनांक 12-8-2024 को उन सभी देशवासियों को समर्पित एक कविता लिखी। जिसमें एक सामान्य परिवार का लड़का INDIAN ARMY में सलेक्ट होता है उसके अथक परिश्रम का परिणाम ही उसके सपनों की पहचान है। सभी गांव वाले खुश है, परिवार में भी खुशी का माहौल है, मिठाईयाँ बाटी जाती है। जब कोई लड़का सरहद पर ड्यूटी करने जाता है तब सबसे ज्यादा माँ रोती है। क्योंकि वह अपने लाडले को कभी भी अपने से दूर होता नहीं देख सकती परन्तु मैं उन माताओं का आभारी हूँ , जिन्होंने अपने लाल को देश सेवा के लिए और भारतमाता की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया।

वह जवान खुशी-खुशी ट्रेनिंग के लिए चला जाता है । जहाँ उसे INDIAN ARMY के सभी नियम- कायदे को सिखाया जाता है। किसी भी फोर्स की सबसे बड़ी उपलब्धि उनके जवानों का अनुशासन प्रिय होना होता है।

जानती हो SDN, अगर हमारे देश की रक्षा के लिए यह जवान तत्पर ना रहे तो हमारे दुश्मन पलभर के लिए शांति से ना रहने दे। उस परिवार का लाडला लड़का अपनी ट्रेनिग पूरी करके एक माह की छुट्टी पर घर वापस आता है। उसे लेने उसके मित्र पहले से ही स्टेशन पर मौजूद रहते है। रास्ते में कुछ परिवार व मित्रों के लिए मिठाई खरीदता है और वह घर पहुंचता है जहाँ उसकी माँ अपनी आँखें बिछाये बैठी है। वह अपनी माँ और पिता के गले लग पैरों को छूकर आशीर्वाद लेता है । परिवार में सभी लोग खुश हैं। कुछ समय बाद उसकी शादी की चर्चा भी होती है कि अब मुझे बहू चाहिए माँ अपने बेटे से बोलती है और बहन भी भाभी लाने का जिक्र करती है।

अभय शाम को अपने दोस्तों से मिलने जाता है जहां एक छोटी सी पार्टी ट्रेनिंग पूरी होने के उपलक्ष में रखी जाती हैं। सभी दोस्त मिलकर पार्टी इन्जॉय करते हैं । पार्टी खत्म होने के बाद सभी दोस्त अपने-अपने घर चले जाते है। दूसरे दिन अभय अपने मां को बुआ के घर लेकर चला जाता है। बुआ के बड़े लड़के की शादी है जिसका नाम सुशील है वह लोग वहां चार दिन रहेंगे । परिवार में बुआ के यहाँ शादी का माहौल है सभी रिश्तेदार जुटे हुए है और किसी रिश्तेदारी से एक सुन्दर युवती भी आयी रहती है। उस लड़की का नाम संध्या रहता है। अभय आर्मी मैन होने के नाते सभी बाहरी कामों में सहयोग करता है जैसे मानों सारा शादी का भार उसी ने सम्भाल लिया हो।

एकाएक कुछ सामान लेने वह घर में जा ही रहा था की सामने संध्या दिख गई।एक दूसरे को दोनों ने बड़ी ध्यान से देखा और वह चीनी की बोरी उठाकर चल दिया।इधर सभी महिलाएं आंगन में बैठकर गीत-संगीत के साथ नाच-गाना का प्रोग्राम कर रही थी, तो तभी बुआ ने अभय का जिक्र करते हुए कहा की रतनलाल जी का लड़का बड़ा ही होनहार है । अब तो सरकारी नौकरी भी पा गया है ।

कौन दीदी ? अरे अभय, 4 साल हो गए उसे आर्मी में नौकरी करते बड़ा ही मिलनसार लड़का है कोई काम की बात नहीं टालता। अब तो उसके शादी के लिए भी लड़की खोजी जा रही है कोई अच्छी लड़की मिल जाती तो भाई को बता देती । उस दिन अभय और उसके मित्र जो आँगन में लड़कियों का नाच- गाना हो रहा था, तो वह चुपके से खिड़की के रास्ते छिपकर देख रहे थे। तभी अचानक वहाँ संध्या आ जाती है। क्या हो रहा है यहाँ ? अभय को छोड़ सभी वहाँ से से भाग जाते है। अभय इंडियन आर्मी का जवान जोश और रवानी खून में है ही, कहता है- आप यहाँ ...

आप यहाँ क्या , पहले ये बताएं आप यहाँ क्या कर रहे है ?

कुछ नहीं। यहां नाच - गाना और संगीत का जो प्रोग्राम हो रहा है बस वही देख रहे है। संध्या ने तंज कसते हुए कहा - 'तो छिप कर देखने की क्या जरूरत है चलिए सामने से बैठकर देख लीजिए'।

अभय ने कहा तो आप ले चलेंगी मुझे - आँखों में आँखे डालकर अभय ने कहा आप बहुत खूबसूरत है वह शरमा गई, और वहां से जाने लगी । तभी उसने कहा अरे नाम तो बता दीजिए। मेरा नाम, मेरा नाम संध्या है और आपका, अभय हाथ मिलाने के लिए जैसे ही अभय ने हाथ आगे बढ़ाया तो वह मुस्कुराते हुए नमस्ते बोली और चली गई । अभय के मन में वह लड़की बैठ गई। सुन्दरता के साथ-साथ संस्कार भी था उसमें।

सभी लोग शादी के समय स्टेज पर सज-धज कर दूल्हा-दुल्हन को आर्शीवाद देने के लिए उपस्थित हुए एक से एक लड़कियो ने ड्रेस, साड़ी, लहंगा,चुनरी पहन रखा था ।जिसे वहां आए लड़के देखकर मोहित हो रहे थे । पर इधर अभय सभी आमंत्रित लोगों को नाश्ता व भोजन-पानी कराने में व्यस्त था। ताकि किसी को किसी प्रकार की परेशानी ना हो । पर बीच-बीच में वह नज़रे स्टेज की तरफ कर देख रहा था मानो उसकी नजरे किसी को ढूंढ रही हो। तभी उसके मित्र ने अभय को इशारा किया ।अरे भाई। ई देख कितनी सुन्दर लड़की स्टेज पर आयी है। क्या लड़की है भाई, देख ना, वह मुंडकर देखता है। अबे चुप, वह तेरी होने वाली भाभी है। भाभी , क्या बात कर रहा है भाई। दोस्त देख भाई वो लड़की मुझे बहुत पसंद है लेकिन क्या करूं उसके नाम के आलावा मुझे कुछ नहीं पता। अरे क्या बात कर रहा है भाई यह तेरा दोस्त कब काम आयेगा। अभी एक घंटे में उसकी जन्मकुंडली पता करवाता हूं। सच में, हां भाई तू टेंशन न ले ये तेरा भाई सब देख लेगा।

अभय भी कुछ देर के लिए स्टेज के सामने आ जाता है। वह उसे बड़े गौर से देखता है उसकी नजरें जब उसकी नजरों से मिली तो वह मुस्कुरा देती है और उसने पलके झपकाई मानों उसने कोई इशारा किया हो।

"काजल के कोमल नैनों से कोमलता पूर्वक बाण चले,

मैं ठहरा हिंद का सिपाही एक ही बाण में ढेर हुआ।"

सभी लोग स्टेज पर जाकर वर वधू को आशीर्वाद देते हैं अभय के मन में संध्या के प्रति प्रेम ही प्रेम है। शादी विवाह के सभी कार्यक्रम समाप्त हुए। अब सभी रिश्तेदार अपने- अपने घर जाने की तैयारी में लगे थे। तभी मामा जी ने अभय को आवाज दिया अभय, हां.. मामा जी ।

अरे बेटा जरा संध्या बिटिया और ताऊजी को स्टेशन छोड़ दो। जी, वह उन्हे मोटरसाइकिल से लेकर कर स्टेशन छोड़ने गया। अभी ट्रेन को आने में कुछ देरी थी तभी ताऊ जी बोले अभय बेटा आप लोग यही बैठो थोड़ा में पान खाकर आता हूँ। ताऊ जी पान के बड़ी शौकीन थे । अब अभय और संध्या एक दूसरे से बात करना चाह रहे थे, लेकिन कोई कुछ बोल नहीं रहा था। तभी अभय ने हिम्मत कर संध्या से अपनी बात कहीं कि मैं तुम्हें पसंद करता हूँ । क्या तुम मुझसे शादी करोगी ? इस पर वह मुस्कुराई पर कोई जवाब नहीं दिया । अंत में उसने अपना मोबाइल नंबर लिख कर संध्या को दिया यह कहते हुए कि कभी मन हुआ तो मुझसे बात कर लेना । अभी मेरी 10 दिन की छुट्टी बची है फिर मुझे तो ड्यूटी पर चले जाना है पता नहीं फिर कब मुलाकात हो तुमसे । इतने पर ताऊ जी ट्रेन की सीटी सुनते ,ही पास आ गए ट्रेन आकर रूकती है ।

अभय ने उन्हें टिकट के हिसाब से सीट नंबर 66,67 पर बैठा दिया और ताऊ जी के पैर छूकर डिब्बे से उतर संध्या को देखने लगा वह मुस्कुराई और हाथ हिलाया। जब तक दिख सके एक दूसरे को देखते रहे, अजीब कशमकश थी दोनों के बीच।

अभय स्टेशन से वापस आया और अपने दोस्त विजय से कहने लगा। यार विजय, मेरा एक काम करेगा भाई, बता तू करेगा न। हां पहले काम तो बता, यार मुझे संध्या से शादी करनी है किसी भी तरह से मेरी बात चला । भाई वो तो मेरे ही रिश्तेदारी में की है। चलो मेरे इंडियन आर्मी कोई जुगाड़ बैठते है। कुछ देर शाम को सभी दोस्त गपशप किए और फिर अपने-अपने घर चले गए । सुबह ही अभय अपनी माँ को साथ लेकर घर जाने वाला ही था तभी मामी ने आवाज लगाई, रुको अभय । उन्होंने कुछ मिठाई बांध रखी थी झोले में वह दे दिया और किनारे बुलाकर अभय से कहा कि तुमने विजय से कुछ कहा है। नहीं तो। तब ठीक है,फिर जाओ। अरे क्या बात है मामी बताओं ना... ।

कोई लड़की पसंद आयी है तुम्हे, अभय थोड़ा सा मुस्काया, फिर हां बोला। ठीक है, 2-4 दिन में घर पर रिश्ता लेकर आयेंगे। वह मामी के पैर छू अपनी मां को कार में बैठाकर घर की तरफा चल दिया । रास्ते में माँ भी कह रही थी कि इस बार तो तेरा लगन पक्का ही करा दूंगी और अगली

छुट्टी में तेरी शादी। अब मुझसे घर के काम नहीं होते। दो दिन बाद अभय के पापा के पास फोन आता है कि भाई साहब आज दोपहर तक हम घर पर आ जायेगें लड़की सुन्दर है, सुशील है । अगर आप लोगों को रिश्ता और लड़की पसंद आती है तो बात आगे बढ़ाई जायेगी ।

ठीक 12:30 बजे दोपहर में एक चारपहिया वाहन अभय के दरवाजे पर आकर रुकती है। अभय के पिता ने पूर्व सूचना के अनुसार पूरा प्रबंध कर रखा था ताकि उनके स्वागत में कोई कमी न रहे। सभी लोग बरामदे में लगे कुर्सियों पर बैठते है एक दूसरे का अभिवादन करते है, बातचीत शुरू होती है। लड़की की फोटो रतनलाल जी को दी जाती है वह फोटो देखने के लिए अन्दर भेज देते है। मामाजी भी अन्दर ही चले जाते है। सभी लोग फोटो देखकर चर्चा करते है, उसकी तारीफ करते है । तभी अभय की बहन फोटो लेकर अभय के पास जाती है । उस फोटो को देखकर अभय चकित रह जाता है और मन ही मन मुस्काता है। यह तो संध्या की फोटो है । तभी मामी का फोन अभय के पास आता है, क्यों लड़की कैसी है पसंद है या नही ओ मेरे प्यारी मामी बस अब कुछ नहीं चाहिए आप लाखो में एक है आप जैसी कोई मामी ही नहीं । अच्छा ठीक है, ठीक है तारीफ करना बंद करो और अपने मां को फोन दो। उसने माँ को फोन दे दिया। औरतों की अपनी वाली कुछ लम्बी बातें हुई। जाते वक्त सभी को भोजन कराया गया और जल्द ही रिश्ते के संबंध में अभय के पिता ने उत्तर देने की बात कही सभी ने एक दूसरे को नमस्ते किया और भोजन की तारीफ़ की।

अरे मामा । आप कहां जा रहे हो अभय ने कहा आप तो रूकिये । नहीं, बहुत काम है बेटा, अभी जाना होगा, उन्होंने अपनी बहन को एक झोला दिया जिसमें कपड़े और मिठाई थे और उन लोगों के साथ ही चल दिए । अब सभी लोग लड़की के बारे में एक दूसरे से चर्चा करते है, सभी की सहमति रही की लड़की ठीक है, परिवार भी ठीक है, अभय की छुट्टी भी बस 6 दिन ही शेष है। माँ ने कहा जब सब कुछ ठीक है तो इस 6 दिन के बीच में सभी लोग लड़की को देख कर छेका कर देते है। अभय के पिता ने एक दिन बाद ही फोन करके सूचना दी, कि हमें लड़की पसंद है और

हम बुधवार को आपके घर लड़की देखने आयेंगे । हम पूरी तैयारी के साथ आयेंगे आप समझ रहे है न, कि मैं क्या कहना चाहता हूं ?

हां, भाई साहब। क्योंकि मेरे बेटे को अपने ड्यूटी पर शुक्रवार को ही चले जाना है।

ठीक है जैसा आपको उचित लगे । इधर लड़की वाले भी तैयारी कर लेते है क्योंकि उन्हें भी संबंधी अच्छे मिले है, ठोस परिवार है । पूर्वनिर्धारित समय के अनुसार सभी लोग (दोनो परिवार के पक्ष) एक मंदिर में उपस्थित होते है। और इस तरह से अभय और संध्या की मंगनी हो जाती है । लड़की को अभय के परिवार से सप्रेम भेंट दिया जाता है। सभी लोग दोनों को को आशीर्वाद देते हैं। परिवार वालों के बीच आपसी बाते होती है कि अगली छुट्टी में जब लड़का आयेगा तो शादी सम्पन्न की जायेगी। सभी लोग हँसी खुशी अपने घर चले जाते है।

अभय, संध्या की फोटो अपनी मोबाइल में देख रहा होता है तभी गुड़िया (अभय की बहन)आ जाती है। क्यों भाभी की फोटो देख रहे हो भैया, मुझे भी दिखाओ।

हाँ, अब तो आप लोगों की बातें होगी अब बहना तो याद आयेगी नहीं- चिढ़ाते हुए गुड़िया ने बोला। तभी माँ वहाँ आ गयी कल तो तुझे जाना है ,बता तेरे लिए क्या बना दूँ । अपने मन से जो बना दे माँ तेरे हाथ का तो सब कुछ अच्छा लगता है। रात का भोजन सभी लोग एक साथ बैठकर खाते है।

अभय अपने कमरे में सोने चला जाता है। उसे सुबह ही घर से निकालना है। सुबह होते 6 बजे माँ खाना पैक करती है। बहन सारा सामान सहेजती है, पिताजी कार साफ कर रहे होते है। अभय अब घर से निकलने की तैयारी करता है। मां थाली सजा कर लाती है और माथे पर लाल टीका लगाती है, माँ तो माँ होती है। उसके आंखों से आंसू बहने लगते है । बहन भी दही की कटोरी अपने भाई के लिए लाती है। वह अपने हाथों से खिलाती है। उसके आंखों में भी आँसू होते है।

अभय सबको गले लगाता है और अपने दोस्त विजय से कहता है देख दोस्त घर पर आते-जाते रहना कोई दिक्कत परेशानी होगी तो मुझे बताना। सभी लोग रतनलाल जी, अभय और विजय स्टेशन की तरफ रवाना होते है। अभय अपने पिता के पैर छूता है और अपना ख्याल रखने की बात कहता है। विजय सारा सामान बर्थ पर रख कर अभय से गले लगता है। ट्रेन चल देती है। अभय अपने ड्यूटी पहुंच रिपोर्ट करता है। अभय को कुछ साल में ही उसके अनुशासन व कार्यशैली के आधार पर उसे एक टुकड़ी का सेना नायक बना दिया जाता है। अब वह एक टुकड़ी का संचालन और उसकी गतिविधियों को देखता है।

किसी भी प्रकार से जवानों को कोई समस्या न हो इसका ध्यान रखता है। बीच बीच में संध्या और अपने परिवार वाले से बातों भी फोन के माध्यम से कर लिया करता । लगभग 6 माह बीत जाते है और अब अभय को छुट्टी मिलती है 45 दिन की। अभय ने अपने रेजीमेंट के सिनियर अफसर व दोस्तों को अपनी शादी में आमंत्रित करता है। अभय शाम को ट्रेन से अपने गांव पहुंचता हैं। अब शादी की तैयारियां शुरु हो जाती है । अभय की मां अपने होने वाली दुल्हन के लिए गहने व अच्छी अच्छी जरीदार साड़ियाँ खरीदती है । गुड़िया भी अपने लिए कपड़े व शादी में गिफ्ट देने के लिए अपने भाई से 20000 रुपये माँगती है। जो अभय उसे देता है। इधर अभय के दोस्त भी अभय से बैंड बाजा व भांगड़ा करने को कहते है क्योंकि उन्हें शादी वाले दिन खूब नाचना है। सभी रिश्तेदार इकट्ठा होते है। सभी लोग मिलकर शादी को सम्पन्न करने के लिए अपने अपने कामों में व्यस्त रहते है । व्यवस्थाओं का जायज़ा लड़की वालो के घर के बारे में अभय के मामा जी लेते रहते है और रतनलाल जी को बताते है। अभय ने अपने लिए शेरवानी सूट और संध्या के लिए जरी कशीकेदार लहंगा लिया है। शादी के दिन सभी लोग सजधज कर बारात लेकर बैंड बाजे के साथ निकलते है। सभी दोस्त **आज मेरे यार की शादी है** वाले गाने पर नाचते हैं।

बच्चे, औरते भी अपनी गाँव की सीमा तक बरात के साथ नाचते-गाते जाते है। परछावन वाले कार्यक्रम गांव के मंदिर के पास किया जाता है। मामी, बुआ, बहन ये सभी पैसे और टॉफियां लुटाती है जिसे उसमें पहुँचे गाँव के

बच्चे लूटते है। इस कार्यक्रम के बाद बारात अब अपने गाँव की सीमा से ससमय निकलती है। सभी बाराती बस, जीप में बैठकर चल देते हैं।

अब रात्रि के 8 बजे बारात दुल्हन के दरवाजे पर पहुँचती है। सभी बारातियों को नाश्ता पानी कराया जाता हैं। परिवार के लोग मांगलिक स्थान पर पहुंचते है ,वर-वधू पक्ष के लोग। पंडित जी द्वारा मंत्रोचार किया जाता है और आगे का कार्यक्रम शुरू किया जाता है। लड़की वाले की तरफ से सभी बरातियों को निवेदन पूर्वक भोजन के लिए कहा जाता है और आदर पूर्वक बैठाया जाता है। धीरे-धीरे भीड़ कम होती जाती है क्योंकि कुछ लोग नाश्ता-पानी, भोजन आदि कर घर के लिए लौट जाते है। इधर शादी का कार्यक्रम जारी रहता है, संध्या को जयमाल हेतु स्टेज पर ले जाया जाता है स्टेज पर हँसी- ठिठोली लड़कियों द्वारा किया जाता है। दोनों एक-दूसरे को वरमाला डालते है। सभी लोग स्टेज पर आकर वर-वधू को कुछ उपहार और आर्शीवाद देते है। इस तरह शादी का कार्यक्रम सिन्दूरदान के उपरान्त भोर तक संपन्न हो जाता है ।

अब विदाई का समय आता है। संध्या अपने परिवार से विदा लेते वक्त माता-पिता, भाई- बहन को पकड़कर रोती है । सभी लोग दोनों को आशीर्वाद देते है और विदा करते है। इस तरह वहाँ से वर पक्ष की गाड़ी और सभी सामान अपने गाँव की तरफ चल देते है । इधर अभय के घर नई-नवेली दुल्हन के आगमन में पूरा घर सजा हुआ है सभी लोग उत्साहित है, अपने घर के बहू के लिए । कुछ ही देर में लगभग सुबह के 7:00 बजे दरवाजे पर गाड़ी आकर लगती है। सबसे पहले अभय की बहन गुड़िया गाड़ी का दरवाजा खोलने के लिए जैसे ही हाथ बढ़ाती है तब तक विजय मना कर देता है ।क्योंकि उस दिन का ड्राइवर वहीं रहता है। पहले हमको नेग मिलेगा तभी दरवाजा खुलेगा, नहीं तो नहीं। तब तक अभया की मां आती है कहती है काहे नाहीं, आज नहीं लोगे तो कब लोगे और खुशी से अपने पर्स से 200 रु का नोट निकाल कर देती है और कहती है, तेरे तेरे लिए कपड़े भी रखे है ले लेना । वह खुश हो जाता है और कार का दरवाज़ा खोल देता हैं। सभी घर की महिलाएं मांगलिक गीत गाकर बारी-बारी से वर वधू को पूजती है। दोनों को उतारने से पहले दोनों दाउरा में डेग डालते हुए घर में प्रवेश करते है।

नई दुल्हन के आने की खुशी में अच्छे- अच्छे पकवान बनाएं जाते है, कुलदेवता की पूजा की जाती है सभी लोग दुल्हन को मुँह दिखाई में उपहार और आर्शीवाद देते हैं। अब संध्या को आए हुए उस परिवार मे पूरे दो दिन हो गये। उसका मन अभी भी उदास ही रहता। फोन पर अपनी माँ व पिता से बातें कर दिल को तसल्ली कर लिया करती। यहाँ पर गुड़िया जो उसकी ननद है अपनी भाभी से बहुत बातें किया करती है। अब संध्या और अभय को साथ रहते कुछ दिन बीत चुके है, अब अभय और संध्या धीरे-धीरे एक दूसरे को समझने लगे है मन का संकोच भी खत्म हो गया। संध्या पूरे परिवार मे घुल मिल गई। रात को माँ जी के पैर दबा दिया करती है क्योंकी उन्हें घुटनों का दर्द रहता है, कुछ समय में वह सबकी प्रिय बन जाती है।

हेडक्वार्टर से फोन आता है कि आपकी अतिरिक्त छुट्टी को रद्द किया जाता है, आप जल्द ही अपने रेजिमेंट की कमान दो दिन के भीतर आकर संभाले । अभय यह सूचना अपने घर बताता है कि मुझे अपनी ड्युटी पर तत्काल रवाना होना पड़ेगा।

भारत माता के प्रति कर्तव्य का पालन एक सैनिक का प्रथम प्रेम होता है, जिसे हर सैनिक को निभाना होता है। वीर को अपने प्रिय को छोड़कर जाना पड़ता हैं। यह छड़ उसके पत्नी, माँ के लिए दुखदायी है , परंतु वह तिलक लगाकर मंगलकामना करती है। सभी लोग उन्हें स्टेशन छोड़ने जाते है।

अभय वहां अपने रेजीमेंट पहुंचकर अपनी बटालियन की कमान सम्भालता है। तभी अफसर ने फोन कर सेनानायक अभय प्रताप को अपने ऑफिस मे पहुंचने का आदेश दिया। वहाँ पहुँते ही अपने से उपर सेना नायकों को जयहिंद,भारतमाता की जय बोल सलामी दी। सभी सेनानायक सलाह मशवरा कर रहे थे। क्योंकि सीमावर्ती इलाकों में दुश्मनों की घुसपैठ की जानकारी मिली थी । कुछ दुश्मन सीमा कर भारत के सीमावर्ती इलाकों में कब्जा करने के लिए अपने पड़ोसी देश को सूचना दे रहे थे । अफसर ने कहा- आप सभी लोग अपनी-अपनी बटालियन को तैयार कर लें हमारी लड़ाई कभी भी हो सकती है। सभी बंदूकों, तोपों की

साफ-सफाई जारी रखे और जवानों के खून को गरम करें। जी सर, सभी ने एक साथ कहा ।

वैसे भी भारतीय सेना के जवानों में दुश्मनों से लड़ाई का नाम सुन उनका खून, लहू बन अंगारों की तरह नसों में दौड़ने लगता है।

सभी सेना नायक अपने- अपने बंकर में पहुंचते है जहां उनके बटालियन के वीर सैनिक है । सभी सेनानायक मिलकर शाम को एक जलसे का प्रोग्राम रखते हैं जिसमें सभी सैनिकों को बुलाया जाता है। क्योंकि कल 15 अगस्त है और एक जवान के लिए 15 अगस्त का दिन बहुत ही महत्व रखता है। सभी जवान शाम से ही तैयारियों में लग जाते है क्योंकि कल सुबह ही तिरंगा झंडा फहराया जायेगा । शाम से ही स्वतंत्रता दिवस पर वीरता और शौर्य के कार्यक्रम पर वीर सैनिक झूम रहे थे । सभी तैयारियां पूरी हो चुकी थी। अगले दिन स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा फहराया जाता है राष्ट्र गान होता है सभी वीर सैनिक परेड के माध्यम से, संगीत के माध्यम से, भारतमाता को और शहीदों को नमन करते है । अपने- अपने शौर्य का पराक्रम दिखाते है, और अपने देश की गौरव गाथा का झांकी द्वारा प्रस्तुति करते है।

कुछ दिनों बाद बॉर्डर के किनारे वाले इलाकों में तनाव की स्थिति हो जाती है क्योंकि कुछ पाकिस्तानी घुसपैठी बॉर्डर क्रॉस कर घुसने का प्रयास करते हैं। जिसे रोकने के प्रयास में भारतीय जवान को गोली लग जाती है जिसके कारण वह शहीद हो जाता है।

इधर से भी जवानों द्वारा गोलियां चलाई जाती हैं जिसमें दो घुसपैठिये ढ़ेर हो जाते है । अब भारतीय सेना नायकों द्वारा अपनी बटालियन को हमेशा चौकन्ना रहने को कहा जाता है क्योंकि उन्हें ख़बर मिलती है कि बॉर्डर पर हमारे दुश्मन घात लगाए बैठे हैं। इधर T.V. व न्यूज चैनलों के माध्यम से इसकी जानकारी आम जन तक पहुँचती है। सरकार द्वारा भी सख्त रुख अपनाने का आदेश सभी सेनाओं को दे दिया जाता है ।

उधर पाकिस्तानी सेना जो हमारे दुश्मन हैं अपने सीजफायर के नियमों को बार- बार तोड़ रहा था। उच्च स्तर की मीटिंग होती है । सभी सैनिक अपने अपने हथियारों को जंग के लिए तैयार कर रहे होते है ।

उधर से अभय के पास संध्या का फोन आता है।

क्या ये जो न्यूज T.V. चैनल वाले दिखा रहे है, सही है ?

अभय क्या तू भी टीवी चैनल वाले के चक्कर में पड़ी हुई हैं ।

अच्छा यह बता कैसी है तू घर वाले कैसे हैं मम्मी , पापा ।

यहां सब लोग ठीक हैं, आप कैसे हैं ?

तू फिकर ना कर मरजानिए, मैं यहां एकदम चंग भला हूं।

हाँ, पर यहां मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है।

तू खामखा टेंशन ले रही है कहा न यहां सब ठीक है।

और बता मां दवाई टाइम से ले रही न,

हां ।

ठीक है, मैं फोन रख रहा हूं... मां और अपना ख्याल रखना ।

जी सुनिए एक और बात है, अभी फोन मत रखिएगा ।

कई दिनों से मुझे खट्टा- मीठा खाने का जी कर रहा है ।

जो भी है मां से मंगाकर खा लिया कर और गुड़िया भी तो है वहां ।

हां, आप सब मर्द एक जैसे होते हो मैं कह रही थी कि आप पापा बनने वाले हैं।

सच्ची, हूं...।

मैं पापा बनने वाला हूं, यह तो तूने बहुत अच्छी खबर सुनाई ।आई लव यू संध्या । ठीक है, अब मैं फोन रखता हूं अपना ख्याल रखना और हां अब ध्यान देना, क्योंकि अब तुम अकेले नहीं हो।

ओ... सरदार जी, आज सबके लिए मिठाइयां बनाओ, आज मैं बहुत खुश हूं।

क्या बात है साहब, कोई खुशखबरी है क्या?

हां, सरदार जी अब मेरे घर में भी कुछ ही महीने में एक छोटा मेहमान आने वाला है।

यह तो बहुत बढ़िया बात है सर जी... लो अभी बना देता हूं।

एक ही दिन बाद सभी सेना नायकों की एक गुप्त मीटिंग बुलाई जाती है। सभी सेना नायकों को अलग-अलग चेकपोस्ट सौंप दी जाती है। मीटिंग ओवर , सभी लोग अपने-अपने चेक पोस्ट की जिम्मेदारी संभाले।

Yes sir,

सभी सेनानायक अपने अपने बटालियन के साथ चेकपोस्ट के लिए चल देते है।

अभय को जो चेकपोस्ट मिला है वह एक पहाड़ी पर है जिसका रास्ता दुर्गम है। वह अपने बटालियन के 50 नौजवान साथियों को लेकर दुर्गम पहाड़ी होते हुए अपने चेक पोस्ट पर दो दिन के सफर के बाद पहुंचता है। रास्ते में अनेकों समस्याएं आती हैं परंतु जवानों द्वारा सारी समस्याओं को पार किया जाता है। जहां पहाड़ी पर चेक पोस्ट है वहां अत्यधिक ठंड भी है। उसे चेक पोस्ट के पास दो बंकर बने हुए हैं जो पत्थरों के हैं।

चारों तरफ से झाड़ियां से ढका हुआ है। सभी जवान वहां पहुंचकर आराम करते हैं। उनमें से चार जवान गश्त लगाते रहते हैं। रात्रि विश्राम के बाद सभी जवान चेक पोस्ट के पास एक पहाड़ी मंदिर है जो कि भगवान शिव का है, वहां इकट्ठा होकर सभी जवान पूजा अर्चना करते है । सेनानायक अपने जवानों में जोश भरने के लिए कहता है - अनुशासन में रहना और भारत माता की रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। देश सेवा करने का मौका सिर्फ हम जवानों को मिलता है। क्या आप अपने वतन के लिए मर मिटने को तैयार हैं ?

सभी वीर जवान एक साथ - हां सर, हम तैयार हैं।

क्या आपसब तैयार हैं ? जी सर, हम सब तैयार हैं । सभी लोगों ने एक साथ कहा।

अभय प्रताप जो कि उस बटालियन का सेना नायक है अपने जवानों में जोश भरने के लिए एक कविता कही -(जो लेखक के स्मृति में है)

वीर सपूत

विशाल समुद्र सा हृदय लेकर
नित निर्धेंद्र की पूजा करता हूँ

मै अपनी मां का बेटा हूँ
भारत मां को शीष झुकाता हूँ

अंकुर सा मन पुलकित है मेरा
मैदान-ए- जंग में लड़ने को

तेरी धूल का मां तिलक लगाऊँ
मैं अपने महातिमों के साथ

सिंह गर्जना करते हुए हम
अपने पथ पर आगे बढ़ते जाए

जो भी दुश्मन है माँ तेरे
सबका शीष काटकर लाऊंगा

अभय प्रताप है नाम मेरा
पीछे ना कदम हटाऊँगा

तेरे मैले आँचल को मां
हम लाल रक्त से धोयेंगे

दुश्मन जहाँ तक ना सोच सके
वहां भी तिरंगा लहरायेंगे

हम अपनी माँ के बेटे है
भारत माँ पर कुर्बान हो जायेगे ...।

सभी जवान कविता सुन जोश-खरोश से भर जाते हैं ।
उन्हें अब सिर्फ और सिर्फ मातृभूमि और दुश्मन दिखाई देने लगते हैं।

वीर के आख़िरी शब्द

"रजनी सी शाम संध्या होने को आयी
अब तो शबनमी स्वात बूंद भी गिरने को आयी
अपना आंचल फैला दे मां
वीर सपूत अब विदा होना चाहे
अब तेरी गोद में सिर रखकर सोना चाहे।"

SDN यह कविता मैं यहां रहते हुए 15 अगस्त के कुछ दिन पूर्व लिखा ।

तुम पूछ रही थी न कि आजकल इतने परेशान क्यों हो ?

जब 15 अगस्त, शहीद दिवस, विजय दिवस यह सब दिवस आते हैं तो मेरा मन बहुत ही अस्थिर हो जाता है क्योंकि वह चलचित्र मेरे दिमाग में घूमने लगते हैं जो एक सत्य घटना है। अभी कुछ दिन पहले जब रजनी मैडम के पति यहां विद्यालय में आए हुए थे तो उनसे मेरी मुलाकात हुई । वह भी आर्मी में है। मैने पूछा कि वर्तमान समय में सेना की क्या स्तिथि है ? उन्होंने कहा कि अब तो बहुत कुछ बदल गया है । अब सेनाओं में बहाली अग्निवीर के तहत हो रहा है। मैने कहा आप तो पुराने है।

हां, हमलोग तो पेंशन के दायरे में है ।

तब तो अच्छा है । उस दिन जब मैं उनसे मिला तो मेरे पुराने जख्म हरे हो गए।

लेकिन, SDN मैं इन वीर सपूतों की तरह साहसी नहीं हूँ।

अच्छा, ठीक है मैं जानती हूं तुम कितना साहसी हो, मुझे बताने की जरूरत नहीं है।

आगे बताओ।

मै कही खो गया मानों जैसे मेरे सामने ही घटना घटी हो। देखों SDN, मैने अपने गले को ठीक किया, अपनी मुद्रा को शांत किया और बोलना शुरू किया।

SDN, जब हमारी मातृभूमि पर संकट आता है तब इस देश की माँओ की कोख से ऐसे वीर सपूतों का जन्म होता है जो न केवल दुश्मनों को परास्त करते है बल्कि अपने जीवन को भी अपने देश, अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित कर देते है। **'वीर सपूत'** मेरे द्वारा लिखित भावनात्मक रूप है जिसमें देशभक्ति, बलिदान, वीरता और ममता की गूंज सुनाई देती है। यह रचना केवल शब्दों की नहीं, बल्कि आत्मा की पुकार है ।

SDN, मेरा मन विचलित हो रहा है और मेरा गला भी सूख रहा है। इसके आगे मैंने उसकी हथेली थाम ली और एक लंबी सांस ली फिर उसके कांधे पर सिर रख दिया मै अवसाद ग्रस्त हो चला था । मेरा मन अब अंर्तवेदना में था वह सारे घटना अब मेरे अन्दर गूंज रही थी। इस घटना क्रम के समय मैं मात्र 12 वर्ष का था जब घटित हुई।

अभय के परिवार के सभी लोग खुशी-खुशी रह रहे थे। अभय भी अपनी ड्यूटी पर भारत माता की सेवा कर रहा था। इधर उसकी धर्मपत्नी भी अपने गर्भ में पल रहे शिशु के प्रति सचेत थी। सभी परिवार के लोग उसका ख्याल रखते थे । अब उस घर में नए शिशु के आगमन में तीन माह शेष बचे थे।

तभी उधर से समाचार और न्यूज चैनलों के माध्यम से पता चलता है कि अब युद्ध की स्थिति भयावह हो चुकी है सीमाओं पर वीर सैनिक भारत माता की रक्षा के लिए दुश्मनों से पुरजोर लोहा ले रहे है। दोनों तरफ से गोलियां चलाई जा रही और गोले दागे जा रहे है। अंततः युद्ध समाप्त हुआ। युद्ध का सुखद अनुभव बस यह रहा कि अपने देश की जीत हुई।

परन्तु, इस युद्ध के दौरान कई वीर सपूत शहीद हो गए । सन् 1999 के इस युद्ध को कारगिल का युद्ध कहा गया । जिसे L.O.C. के नाम से भी जाना जाता है । इस युद्ध में कई माओं ने अपने लाल खोए, कितनों के सुहाग उजड़ गए। ऐसे परिवारों को मेरा शत-शत नमन हैं ।

SDN ने पूछा कि अभय का क्या हुआ?

मैने फिर गहरी सांस ली और कहा उनमें से एक मेरा अभय भी था। जो युद्ध क्षेत्र में तिरंगा लहराते हुए भारत माता की गोंद में सो गया और मेरी आंखों से आंसू उसकी हथेली पर छलक पड़े। उसने अपने कांधे से मेरे सिर को सीधा किया और मेरी तरफ देखा। मैने देखा कि उसकी आंखों में भी आंसू आ गए हैं। हम दोनों कुछ देर तक चुप रहें और एक दूसरे को देखते रहे फिर उसने मेरे सिर को अपने गोद में रख लिया । अब हम दोनों ही उस परिवार के हृदय विदारक दृश्य को अपने अन्दर महसूस करने लगें।

मैं कुछ देर रुक पुनः कहना शुरू किया कि उस समय फोन कॉल की कम सुविधा होने के कारण सूचना एक-दो दिन बाद मिलती थी । सारे शहीदों की वीरता व शहादत इधर न्यूज चैनलों में दिखाई जा रही थी। युद्ध क्षेत्र में जब हमारे वीर जवान शहीद होते है तो उनके शहादत के लिए उनके शवों को संदूक में रख तिरंगे में लपेट कर एक टुकड़ी के साथ परिवार के पास भेजा जाता है जहां अंतिम संस्कार हो सके। जैसे ही वीर सेना नायक अभय प्रताप का काफिला अपने जिला में पहुँचता है वहाँ की पुलिस प्रशासन मुस्तैद रहती है ताकि किसी भी प्रकार की समस्या न हो । गाड़ी पर अभय प्रताप की फोटो लगी होती है। काफिला लम्बा होता चला जाता है जैसे ही गांव में वीर का काफिला पहुँचता है। वीर के जयकारे गूंजने लगते है। पूरा गांव का माहौल गमगीन हो जाता हैं क्योंकि वह किसी को ताउ, किसी को दादा, किसी को भाई की तरह मानता ।

अब गाड़ी आकर उसके दरवाजे पर लगती है। गाड़ी से तिरंगे में लिपटा हुआ संदूक जैसे ही उतरा जाता है बूढ़े माता -पिता की पथराई आंखों से अश्रु की धारा फुट पड़ती है, मां छाती पीट-पीट कर रोने लगती और कहती हैं एक ही कलेजा का दुकड़ा था। माँ अपने बेटे से लिपट कर कह रही है- कहाँ चल गइल हो लाल, हमके छोड़के, अब हम कइसे जियम और बेसुध हो रोने लगती है। बहन भी अपने भाई के छाती से लिपट उसके हाथ को पकड़ कहती है- अब हम केकरा के राखी बांधम और फूट-फूट कर रोने लगती हैं। इतने पर चौखट के पास परदे के पीछे खड़ी उसकी अर्धांगिनी जिसके गर्भ में 7 माह का शिशु पल रहा है । वह भी बेसुध हो अपने वीर

के छाती से लिपट जाती है। अपने वीर की छाती पर उसके हाथों की रंग बिरंगी चूड़िया टूटती है, फूटती है। माथे का लाल सिंदूर और बिंदिया की चमक कही खो जाती है, उसका कान्तिमय चेहरा उतर जाता है । वह बस लिपट कर यही कहती है कि मुझे भी अपने वीर के साथ जाना है, मुझे भी अपने वीर के साथ जाना है। वह पागल सी हो गई है उसके परिवार के लोग उसे संभालने में लगे हुए है क्योंकि उसके गर्भ में उस सेनानायक का अंश पल रहा है जो उस परिवार का अंतिम चिराग़ है। यह दृश्य इतना भयावह है कि गांव के लोगों के आंखों से भी अश्रु बह रहे है। वह अपने वीर से लिपट कर बेसुध हो जा रही है, सभी लोगों से कहती हैं मुझे अपने वीर के साथ जाना है।

वीर जवान जो आए हुए हैं उन्हें आश्वासन देते हैं कि हम आपको ले चलेंगे।अब अभय के अंतिम संस्कार हेतु सपरिवार साथ चल देते हैं मुक्ति घाट की ओर जहां अभय की चिता साजी है। चिता पर शहीद का शव लिटाया जाता है और पूरे विधि विधान से पिताजी द्वारा मुखाग्नि दी जाती है तत्पश्चात जवानों द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाता हैं वह सभी लोग शांति पूर्वक मौन धारण करते हैं।

कुछ लोग आपस में बात कर रहे थे कि एक ही लड़का था, अभी लड़की की भी शादी बाकी है । परिवार का सहारा छीन गया भगवान इस संकट में आप ही सहारा हो। चिता अब धू-धू करके जल रही है जैसे-जैसे लपटे उठ रही थी संध्या के मन में भी अपने वीर के साथ जाने की प्रबल इच्छा बढ़ती जा रही थी। वह अब अपने वीर से मिल जाना चाहती है और अपने कदम चिता की अग्नि की ओर बढ़ाती है , अभी पास पहुंचने ही वाली होती है तभी 7 माह का शिशु जो उसके गर्भ में पल रहा है वह लात मारता है और कहता है- "मां पिता तो छोड़ कर चले गये, अब तू भी।" अब वह घुटनों के बल वही बैठ जाती है और चारों तरफ से मिट्टी को अपने शरीर पर मलने लगती है। यह विहंगम दृश्य बड़ा ही भयानक और पीड़ादायक लग रहा था। कुछ देर शरीर पर मिट्टी मलने से उसकी अन्दर की ज्वाला शांत होती है।

वीर की विदाई का अंतिम पल

वह मिट्टी मुट्ठी में उठा अग्नि को साक्षी मान अपने वीर और भारत माता से सौगंध पूर्वक आह्वान कर कहती है-

तेरा मेरा साथ यहीं तक
अब तेरे साथ ना जा पाऊंगी
इस बच्चे का क्या दोष है
क्या इसे जन्म ना दे पाऊंगी,
तू कहे तो वीरांश जनू मैं
जो तेरे सिद्धांतो को सार्थक कर जाए
और दुश्मन की क्या औकात है मां
जो पुनः तेरे शीश मुकुट को हाथ लगाएं.. **।**

सभी लोग घर चले आते हैं। माँ और पिता बीमार रहने लगते है और कुछ ही दिनों के भीतर ही उनका भी देहान्त हो जाता है। उनके परिवार के सभी परिस्थितियों को सम्भाला जाता है परन्तु इधर संध्या भाभी की भी तबीयत खराब चलती है। सभी लोग उनके स्वास्थ्य के प्रति चिंतित रहते हैं क्योंकि उस परिवार का वंश उसके गर्भ में पल रहा था। वह शुभ घड़ी भी आयी और उन्होंने एक नन्हे बालक को जन्म दिया। मुझे यह खुशखबरी मिली तो मै भी अस्पताल पहुंचा। डॉक्टर से पता चला कि उनका स्वस्थ होना अब असंभव है बस दो-चार दिना की मेहमान है। डॉक्टरों ने पुरजोर कोशिश की उनके इलाज में। भाभी ने अपने अंतिम समय में मुझे अपने पास बुलाया।

मैने पूछा कैसी हो ? भाभी (संध्या) ने मुस्कुराते हुए अपने कलेजे के टुकड़े को मुझे सौंप दिया और ख्याल रखने का वादा लेते हुए कहा - "कि देख तेरे भैया आए है मुझे लेने के लिए" और अंतिम सांस ली। तब मैंने दोनों दौर देखा अंत और आरंभ का ।

यह कविता उस सोच में है-

"**तू छोड़ गई नन्हें से बालक को**
मेरी गोद में यह कह कर ...।"

तू छोड़ गई नन्हें से बालक को मेरी गोद में यह कहकर ....
कि ख्याल रखना युवराज का सारी उम्र भर
उसकी प्यारी सी मुस्कान देखकर
मन मेरा भी भर आया ।

जैसे-तैसे उसको मैंने
अपने सीने से लगाकर पाला
पहले मामा हुआ घुटनों के बल
फिर उसने मेरी उँगली पकड़
माँ, बाबा, चाचा, पापा कहकर चलना सीखा ।
उसके वे तोतले शब्द सुन
मेरे आँखों में आँसू भर आया
जैसे मानों मैं धरा के साथ-साथ
आसमान को भी छू आया
तब यह बारह वर्ष का बच्चा,
यानी मैं उसका पापा कहलाया......!"

हम दोनों(मैं और SDN) नि:शब्द ही एक दुसरे को देखा और अपने-अपने घर चले गये ।

वीर सपूत जो हमारे देश की सेवा करते हैं उनके लिए कुछ कविताएं मैंने लिखी जो आपके समक्ष प्रस्तुत है :

उस माँ की ममता निराली थी...

उस माँ की ममता निराली थी,
जिसने भारत माँ पर लाल कुर्बान दिया।
आँखों में प्रेम, हृदय में हिम्मत,
फिर भी बेटे को विदा कर दिया।

जब पहली बार गोद में झुलाया,
तो सपनों का संसार बुना था,
पर देश की माटी की सौगंध देकर,
उसे रणभूमि में भेज दिया था।

हर रात दुआओं में सजदा करती,
हर सुबह उम्मीदें जगाती,
पर जब तिरंगे में लिपटा बेटा आया,
तो भी गर्व से सिर उठाती।

आँखों में आँसू थे, पर रोई नहीं,
कलेजे में दर्द था, पर झुकी नहीं,
बस माथे पर हाथ रखा बेटे के,
और कहा- "मेरा बेटा मरा नहीं!"

उस माँ की ममता निराली थी,
जिसने भारत माँ पर लाल कुर्बान दिया।

व्याकुल मन, वीर पुरुष

व्याकुल मन है, व्याकुल तन है,
इस तन की व्याकुलता का क्या?
सामने वाला वीर पुरुष है,
उसकी पौरुषता का क्या?

मन में हलचल, प्रश्न अनगिनत,
शरीर में ज्वाला, असहज विकल।
पर जो खड़ा है अडिग भाव से,
क्या उसके हृदय में भी हलचल नहीं?

वीरता केवल बाहुबल नहीं,
संयम में भी है उसका मान।
क्या वह भी नहीं झुलसता भीतर,
क्या उसकी धड़कनों में नहीं उठते तूफान?

अगर तन की व्याकुलता प्रश्न है,
तो मन की दृढ़ता ही उसका उत्तर ।
वीर वही जो संग्राम भी सहे,
और मर्यादा का दीप जलाए प्रखर ।

श्वेत लिफाफे की चादर

श्वेत लिफाफे की चादर, ज्यों धरा का श्रृंगार,
जिसे ओढ़ मेरा मन मुस्काया बार-बार।
सर्द हवा के संग जब आई पहली बर्फ,
धरती ने सजाई सफेद चादर की पंख।

हर कोना, हर छोर ढका उस सादगी में,
जैसे प्रकृति ने रच दिया जादू इस सर्दी में।
वृक्ष खड़े थे मौन, बर्फ से लिपटे हुए,
हर डाली ने पहने थे मोती, चुपचाप हँसे हुए।

मन का हर कोना शांत सा हो गया,
जैसे ये चादर दुखों को सोख गया।
हर कदम जब इस पर आहिस्ता पड़ा,
लगता था जीवन में नया गीत जुड़ा।

श्वेत चादर ने ढाँपा हर गम का निशान,
धरती पर उतरी जैसे स्वर्ग की पहचान।
उसकी ठंडक में भी था अनोखा सा सुकून,
जैसे हर दर्द ने पाया हो कोई मरहम पूर्ण।

मेरा मन उस बर्फ की सफेदी में खो गया,
उसकी पवित्रता में जैसे जीवन कुछ नया हो गया।
श्वेत लिफाफे की चादर ने सिखाया यह भाव,
कि सादगी में ही छुपा है जीवन का प्रभाव।

अब हर सर्दी में उस चादर को देखूँ,
अपने दिल के हर कोने को उससे सेंकूँ।
श्वेत लिफाफे की चादर, जो सब कुछ कह गई,
मेरा मन मुस्काया, और बर्फ की कहानी रह गई।

आख़िरी सलाम उस आशिक को

उसने न कभी गुलाब मांगा
न चाँदनी रातों में कोई गीत
उसके लिए सबसे प्यारी चीज़ थी-
माँ की माटी, और देश की प्रीत।

ना उसने इश्क़ में चिट्ठियाँ लिखी
ना लव लेटर में नाम छुपाया
उसने तो सिर्फ़ हथियार थामे
हर बार मौत से आंख मिलाया।

जब पहली बार वर्दी पहनी
तो मां ने माथा चूमा था
पर जाने क्यों उस दिन
पलकों में अजीब सा झूला झूमा था।

पिता ने कहा-

"बेटा, तिरंगे को झुकने मत देना,"
और उसने सीना ठोक कहा-
"अगर झुका, तो मेरा जिस्म होगा पहले।"

बहन ने राखी बांधी थी जिस दिन,
उस दिन कलाई थरथराई थी,
क्योंकि पता नहीं था -
अगली राखी पर कलाई रहेगी या तस्वीर सजाई जाएगी।

वो हर बार जब फोन करता था,
तो माँ पूछती खाना खाया?
पर वो चुप रहता,
क्योंकि उसने दोस्त को गोदी में आखिरी सांस लेते देखा था।

एक बार उसे चिट्ठी मिली -
जिसमें लिखा था :
"घर आ जाओ, शादी कर लो,"
पर उसने जवाब नहीं भेजा,
क्योंकि वक्त नहीं था,
कफन ओढ़ने की तैयारी थी।

जब बम फटा-
वो एक बच्चो की तस्वीर अपने सीने में दबाए हुए था,
जो शायद उसी गाँव का था
जहाँ वो बड़ा हुआ था।
शव आया तो तिरंगे में लिपटा था,
पर उसके होंठों पर मुस्कान थी,
मानो कह रहा हो -
"मैं सफल हुआ मां, देखो न,
देश का रंग मेरी लाश में रथ गया।"

किसी पर मरना अगर इश्क़ है,

तो यह आशिक अमर है,
जो खुद बुझ गया,
पर करोड़ों को रोशनी दे गया।

भारत माता की जय।
वंदे मातरम्।

15 अगस्त का समय

SDN, 15 अगस्त के दिन पर क्या विचार है, स्कूल में क्या फंक्शन होगा? देखिए स्कूल के प्रिंसिपल साहब क्या व्यवस्था करते हैं वैसे तो सुनने में आया है की टेंट की व्यवस्था की जाएगी स्टेज बनाया जाएगा क्योंकि सुजीत सर ने जिन बच्चों को संगीत और प्रोग्राम के लिए तैयार करवाया है उनका स्टेज प्रोग्राम भी होना है और गीत संगीत का कार्यक्रम होगा, जो देशभक्ति के प्रति रहेगा । क्योंकि स्कूल के प्रांगण में सभी बच्चों के साथ उनके माता-पिता को भी बुलाया गया है ताकि वह आए और स्कूल के बच्चों द्वारा जो 15 अगस्त के उपलक्ष में कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाएगा उन्हें देख सके। कुछ मिठाइयों की भी व्यवस्था रहेगी।

और तुम ...

मैं, मैं क्या ?

अरे उस दिन तुम क्या पहन के आओगी ?

तुम ही बता दो क्या पहन के आऊं ।

मेरे हिसाब से तो साड़ी ही अच्छा रहेगा आगे तुम्हारी मर्जी । वह मुस्कुराई पर कुछ न बोली । तब तक सुजीत सर ने मुझे अपने पास बुला लिया और अपने साथ लेकर चले गये जहां बच्चों का रिहर्सल चल रहा था । कुछ बच्चों को सुजीत सर ने हरमुनिया पर गाने को लयबद्ध किया, कुछ ने नृत्य किया। सबका लगभग रिहर्सल पूरा हो गया था अब सब बच्चे कल 15 अगस्त पर प्रस्तुति के लिए तैयार थे। हम और सुजीत सर कल के प्रोग्राम पर बाते कर रहे थे कि और भी इंट्रूमेंट विद्यालय में होता तो बच्चों को और भी कुछ सिखाया गया होता। ठीक है सर, अब देखिए कल क्या है ? सब कोई छुट्टी के बाद अपने अपने घर चले गए ।

दूसरे दिन जब मैं स्कूल पहुंचा तब कुछ बच्चियां पहले से ही स्कूल के प्रांगण में उपस्थित थी और जमीन पर कलाकृतियां बना रही थी। कुछ भारत का नक्शा बनाकर उसे फूलों से और अबीर सजा रहे थे। सभी शिक्षक, सांस्कृतिक कार्यक्रम होने के नाते सज धज कर आए हुए थे। झंडा उत्तोलन के लिए जनता बाजार के कुछ सम्मानित व्यक्ति के साथ-साथ स्कूल के प्रबंध समिति के सभी सदस्य वहां मौजूद रहे। झंडा उत्तोलन के बाद सभी लोगों ने मिलकर एक साथ राष्ट्रगान गाया। उसके बाद जो सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए जो मंच बना हुआ था जिसका संचालन हमारे स्कूल की सामाजिक विज्ञान की शिक्षिका द्वारा किया गया जिनका नाम पूजा कुमारी है। जो भी छात्र 15 अगस्त के कार्यक्रम में भाग लिए हए थे वह बारी-बारी से आते हैं और अपने सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति करते हैं जिसे वहां उपस्थित लोग देखकर मोहित होते हैं और तालियां बजाते हैं। कार्यक्रम खत्म होने के बाद सभी बच्चों के बीच मिठाइयां वितरित की जाती है कुछ बच्चो के साथ लोग फोटो भी खिंचवाते हैं। उस दिन SDN बहुत ही सज धज कर सबके समक्ष प्रस्तुत होती हैं क्योंकि आज वह साड़ी पहने बहुत ही आकर्षक लगती है मानो समूचा बगीचा ही समा गया हो । सब लोग उसके साथ खड़े हो फोटो खिंचवाते है पर मैं खड़ा दूर से ही उसे देखता हूं। मन को मोहने वाली मूर्ति लग रही थी । मै उसे देख विचारों में डूबा रहा ।

मैने उस दिन कुछ कविताएं लिखी :

SDN की हरी साड़ी

हरी साड़ी में सजी **SDN,**
फूलों सी मुस्कान लिए ,
शांत चाँदनी की रात में
सितारों सा श्रृंगार किए।

उसकी साड़ी की हर सिलवट
कहानी कहे बिन बोले ,
बाँध लेते है मन को वो
हवाओं संग धीरे-धीरे डोले ।

हरे रंग की उसकी साड़ी
मानों बगिया की हरी डाली
उसकी चाल में लहराए,
झील की जैसे नर्म लहरे ।

नजर ना हटे, मन मोहित हो,
SDN की वो हरी साड़ी
हर दिल को यूँ ही भाए,
जैसे मोरनी का नृत्य रंगीन,।

हरियाली की छाँव में सजी
SDN की साड़ी मुस्काई,
धूप की सुनहरी किरणें छूने को आई
जैसे उसे गले लगाने को आई।

उसकी साड़ी की चमक में,
धरती की सारी हरियाली छुपी,
जब वो चलती, लगती जैसे,
हरी घास पर ओस की बूंद फिसली।

उसके कदमों की आहट से,

पायल की झंकार सुनाई दे
हर झलक में उसके
सावन का महीना दिखाई दे।

उसकी हँसी की खनक में
कोयल की मीठी तान छुपी
उसकी साड़ी की पत्तियों में
मानो सारा जंगल बसा हुआ ।

***"SDN की साड़ी की महक
फूलों की बगिया से आयी
हरें रंग की उस साड़ी में,
प्रकृति की पूरी कहानी समाई ।"***

SDN के नयन

SDN के नयन गहरे काजल से सजते
रात की स्याही में जैसे तारे जगते।
हर सपने को समेटे, हर दर्द को समेटे
अनकही कहानियों के वह अनमोल खाते।

उन नयनों में दिखता है, एक अनंत संसार,
कभी प्यार की बरखा, कभी दर्द की धार।
SDN की आँखो में छिपा है अनमोल खजाना
हर बूंद में बसा जैसे मधुर एक तराना ।

रात की खामोशी में जब वे चमकते हैं
जैसे कोई दूर सितारा हमें बुलाते हैं।
उनकी गहराई में है प्रेम का जादू
जैसे मोरपंख में छुपा हो इंद्रधनुष का रंग ।

नयन जो बोलते नहीं, पर दिल को छू जाते है
उनकी मूक अभिव्यक्ति में हम सब खो जाते हैं।
SDN की आँखो में है अनगिनत सपने
जो हमें दिन-रात अपने संग बाँधे ।

हर लम्हा, हर पल, उनकी एक नई कहानी,
जैसे रात की चादर में छिपी हो सुबह की रवानी ।
SDN के नयन एक गहरी किताब,
जिनके पन्ने खोलें तो मिल जाएं हजारों जवाब ।

संदीप सर,

हां सुजीत सर ।

कल का कार्यक्रम ठीक रहा न,

हां सर, आप और मिश्रा जी ने बखूबी तालमेल बैठाया और साथ ही बिहार गीत पर आपका और जूली मैम का जुगलबंदी भी अच्छा रहा। आप द्वारा सिखाए बच्चों ने भी अपना शत प्रतिशत दिया। मेरे हिसाब से तो कार्यक्रम अच्छा रहा। सर आप जो अपने मोबाइल में कल का जो भी फोटो लिए है वो हमे what’s app पर भेज दीजिएगा ।

Ok सर, भेज देंगे।

कहां जा रहे है ?

10+2 में ।

ठीक हैं चालिए , मैं पुरानी बिल्डिंग जा रहा हूं।

तभी SDN पहुंचती है उसके तेवर व हाव भाव कुछ तीखे लग रहे थे। तभी उसने तपाक से कहा इस तिरंगे झंडे का मान सम्मान सिर्फ 15 अगस्त को और 26 जनवरी को ही होता है क्या ? किसी को यह भी नहीं दिखाई दे रहा है कि इसे फोल्ड कर के रख दें। तब मैने चुपचाप तिरंगे झंडे को अच्छे से फोल्ड कर उसके हाथों में दे दिया जिसे उसने बड़े सम्मान पूर्वक अलमारी में रख दिया। उसका यह भाव मुझे उसे देखने व समझने को मजबूर करता रहा ।

मैने उसके संबंध में कई कविताएं लिखी-:

तिरंगे के प्रति

तुम्हारा मुझे यूं आदेश देना
तिरंगे के प्रत
तुम्हारा समर्पण और
आदर भाव दर्शाता है
तुम्हारी आँखो में जो गर्व है
वो राष्ट्र प्रेम की पहचान है
तुम्हारी वाणी में जो दृढ़ता है
वो स्वाभिमान की मिसाल है।

तुम्हारे शब्दों में जो अग्नि है
वो स्वतंत्रता सेनानियों की ज्वाला है
तुम्हारी सोच में जो पवित्रता है
वो इस मिट्टी का नमन है
तिरंगे के प्रति यह निष्ठा
तेरे चरित्र को ऊँचा कर देती है
तेरी हर बात में देशभक्ति है
तेरी हर साँस में मातृभूमि बसती है।

चलो, इस भावना को और प्रबल करें
अपने कर्तव्यों को और सशक्त करें
क्योंकि तिरंगा सिर्फ एक ध्वज नहीं
हमारी पहचान, हमारा सम्मान है।

रश्मि की तरह

तुम रश्मि की तरह
खिलते गुलाब सी लगी
मेरे मन को...।
माथें पर बिंदिया लाल गुलाबी सी
चेहरा लगे नवाबी सी
पलके है तेरी झूले सी
जिसके अन्दर गहरा सागर
और, ओंठो का तेरा क्या कहना
मैं शबनम बूंद सा इठलाता
बात हो तेरी जुल्फों की
घनघोर घटा मैं बतलाता।

और, नर्म सुराही गर्दन में
पहने जब कनकों की माला
मानों जैसे चमक उठा हो
उसकी सुन्दर सी काया
पथ पर, बाँध घुंघरू सी पायल
आँचल लहरा चब चलती हो
मानों जैसे नभ की
अप्सरायें भी तुझसे जलती हों
हर कोई पाना चाहे
तेरे जैसे धन को.. ।
तुम रश्मि की तरह
खिलते गुलाब सी लगी
मेरे मन को...।

तुझ से सीखूँ

हे प्रिये,

तेरी उन तहजीब को मैं अंगीकार करूँ
जो मुझे सादगी से रहना और अदब सिखाते है
तेरी उन बातों पर मैं गौर फ़रमाऊ
जो मुझे बोलने की लय सिखाती है।

तेरी उन अठरंगी अदाओं से भी मैं कुछ सीखूँ
परेशान चेहरे पर भी खुशी लाना
मानों जैसे मेरी बदलाव की
एक श्रेष्ठ किताब हो तुम।

'SDN की बयार हो तुम '

झुका के नजरें

तुम झुका के नजरें जो तस्वीरें देखती हो
लगता है किसी की याद आ रही है
खुदा करे की वो मेहरबान हो तुम पे
पर, यूँ बेखबर भी ना रहा करो
कभी फुर्सत मिले तो बातें करो
आज कल शिकायतों का दौर चल रहा है 'गालिब'
बे फिजुल शिकायतें ना कराया करो,
हम जानते है कि जल्द ही तुम मिलोगे
उससे पर यूं ही ना दिल को बहलाया करो
चन्द लम्हें भी यादों में सिमटे होगे तेरे
कुछ नगमें बनाकर गुनगुनाया करो
तुम झुका के नजरें जो तस्वीरे देखती हो
लगता है, किसी की याद आ रही है।

चटख रंग की अद्वितीय मूरत हो तुम

कपड़ों के लिए चटख रंग
जो तुमने चुराये पेड़ो से
तुम्हारे घर के पीछे
बात कर रही थी 'कनेर' और 'गुड़हल'
बड़ी सज-धज कर निकलती है
लहराते हुए आंचल इतराते हुए
इठलाते हुए वह प्रकृति से कहती है
तुम भी कुछ दो
उपहार स्वरूप मेरे जन्मदिवस पर -
क्यों नहीं **?**
पेड़ो ने दिया उसे गहरा हरा रंग
जिसपर पत्तियों की छाप
काले और लाल गुलाबो ने
निचोड़ दिया अपना पूरा रस
आँखों के काजल और ओठों के लाली के लिए
यह देख वहीं पास खेतों में लहलहाते
गेहूं की फसलों ने उसे सौंप दिया
सुनहरे कानों का कुदल व गले का हार
चमेली की फूलों में ने दे दिये गजरे बनाकर
उसके घने बालों की सुन्दरता के लिए
यह देख मेंहदी मुस्काई
और सज गयी उसकी कोमल हाथों पर
पास लटकी बेललताएं शरमां के बोली
मैं भी हाथों की कलाईयों में लिपट जाऊं 'वो मेरी हमजोली'
कुछ कमी देख चांद-सितारे भी टूटकर आयें
उसे सजाने के लिए
मानों जैसे प्रकृति द्वारा प्रत्तद
अद्वितीय मूरत हो तुम ।

चाँद की शिकायत

बादलों में चाँद
आज धुंधला-धुंधला सा नजर आता है
एक आप है
जिसके चेहरे की चमक ही नहीं जाती।

चांद भी परेशान है
अपने दाग से
एक आप है जिसके चेहरे पर दाग नजर नहीं आती।

चाँद भी सोचता है
मैं आधा, पूरा और कभी चन्द्राकार
एक आप है
जिसके कोमल पंखुड़ियों की मादकता नहीं जाती।

चाँद जो मुझसे आकर करे शिकायत तेरी
तब मैं कहता उससे -

"**उसकी इबादत में मेरा सिर**
यूँ ही नहीं झुका होगा
कुछ तो बात रहीं होगी
उसकी सादगी में ।"

शाख पर पत्तियां

कुछ शाख पर पत्तियाँ है
कुछ पत्तियों बिन अधूरे है
शायद, वे टूटना चाहते है...
पर उनकी जड़ों को है, मालूम
कि क्या अहमियत है
बिना पत्तियों वाले शाख की
जो जीवंत करते आये है अन्य शाखों को
उस पर बैठते थे
कभी मोर, पपीहा, कोयल...
अपनी मधुर संगीत लेकर
पुष्पों की वो बेललतायें सबको
सुगंधित करती थी
तब भी मन मुस्काता था
कैसे कह दूँ, तू टूट जाए
मेरे अन्तर्मन से तू दूर जायें।

बच्चों के सम्बन्ध में

" किशोर वह बीज होता है, जिसमें पेड़ बनने की संभावनाएं होती है। जरूरत है तो केवल पोषण, दिशा और धैर्य की।"

Hello, SDN कैसी हो?

उसने मुस्कुराते हुए कहा- ठीक हूँ, अच्छी हूं।

क्या बात है अभी - अभी सोकर उठे हो क्या?

नहीं, मैं घर से आ रहा हूँ। मैं अभी रूम पर नहीं गया हूँ। बस Online Attendance बना लूं फिर मध्यावकाश में रूम पर जाऊँगा ।

वो..., ठीक है।

एक बात है SDN मुझे तुमसे बात करनी है। कहो न क्या बात है ? बात गंभीर है और बच्चों के संबंध में है। क्या तबीयत खराब है तुम्हारे बच्चों की ? नहीं बात मेरे बच्चों की नहीं बात हमारे स्कूल के बच्चों एवं उन तमाम बच्चों के संबंध में है जो 12 वर्ष से 18 वर्ष की अवस्था में है। It's mean's किशोरावस्था वाले बच्चों की ? हाँ । तब तो लगता है कोई गंभीर बात होगी फिर चलो कही बैठते है अभी तो क्लास नहीं है। 3-4 period है ।

अभी मैं 1:30 घंटा खाली हूँ।

SDN- तो बताओं क्या बात है?

संदीप - मैं जब कल घर के लिए जा रहा था तब रास्ते में एक घर के सामने भीड़ इकट्ठा थी। चीख-पुकार रोने वाली आ रही थी। मैं भी कुछ देर रुका और एक व्यक्ति से पूछा- "उसने सहसा जवाब दिया क्या बताए भैया एकलौता लड़का था फांसी लगा लिया।

क्यूँ क्या हुआ था ? कोई कह रहा था कि लड़की का चक्कर है, कोई उसके परीक्षा में फेल होना बता रहा था, कोई कह रहा था कि कई दिनों से यह लड़का परेशान लग रहा था। जितने व्यक्ति थे सबकी अपने बातें , अपने लांक्षन थे।मैं यह बातें सुन स्तब्ध रहा तो सहसा मेरे दोस्त के पुत्र का स्मरण हुआ उसने भी इस घटना को अंजाम दिया था ।

मैं पूछता हूँ SDN - "क्या हम किसी एक चीज में फेल हो जाए तो जीवन का ही त्याग करना आसान होता है?

SDN ने कहा- नहीं।

संदीप- ये बच्चे अपने आपको समझते क्या है ? जिनको माँ-बाप ने अपने सीने से लगाकर पाला, असीम प्रेम किया, उनके लिए वह हर दुःख और संघर्ष झेला। क्या यही पल देखने के लिए ? अभी कुछ दिन पहले एक तेज रफ्तार से बाइक चलाते हुए 17 साल के लड़के का एक्सीडेंट होने से मौत हो गयी। उस माँ-बाप पर क्या बीती होगी ?

SDN सहसा अब गंभीर मुद्रा में बोली, तुम इतना क्यों सोचते हो **"दिमाग की जगह भी हृदय रखते हो क्या? "** नहीं दिल और दिमाग दोनों एक नहीं है और ऐसा नहीं है। आज तुम्हें मेरा साथ देना होगा, तुम्हें मेरे साथ 3-4 Period में साथ चलना होगा। आज मैं पढ़ाउँगा नहीं आज मैं बच्चों से इस क्रम में संवाद करूँगा तुम वहाँ मौजूद रहोगी तो और भी आसानी होगी। ठीक है मैं तुम्हारे साथ क्लास में चलूंगी। हम दोनों क्लास में गए। मैने कहा आज हम लोग आपस में संवाद करेंगे। बच्चे भी खुश कि चलो आज किताब नहीं पढ़ना है। तब मैंने बच्चों को क्लास में एक कविता पढ़कर सुनाई -

16 year’s Old My Son (एक कल्पना)

जब उसने मुझे पहली बार बताया कि मैं एक लड़की से प्रेम करता हूँ और उसने मुझे आज I Love You बोला । तब मैने कहा बेटा ठीक है, घर आओं साथ में आज खाना खायेगे, फोन कटने के बाद मैं आशंकित था।

तब मेरे मन में विचार आया (मेरे लड़के, उस लड़की और अपने प्रति)

जो कुछ पंक्तियों में है :

फखत उसके आँखों में आँसू न आने दो
तो प्यार करो,
उसे हर जगह रूसवा ना कर सको
तो प्यार करो,
वो जैसी है वैसे अपना सको
तो प्यार करो,
उसके दुःख तकलीफ में साथ दे सको
तो प्यार करो,
आप अपनी हदो को समझ सकों
तो प्यार करो।

" पर एक बात हैं बेटा, जो तुम्हें ध्यान रखनी है जो तुम्हारे और उसके बीच की बात होगी" (Boy-Girl) -:

कभी गलत अफवाह उड़े उसके बारे में
तो बर्दास्त करना,
कभी किसी कारण से फोन व्यस्त रहे
तो बर्दास्त करना,
कभी जाने-अनजाने में तुम्हारे सामने किसी से हँसी-ठिठोली कर ले
तो बर्दास्त करना,
प्रेम में कभी तुम्हारी बातों को अस्वीकार करें
तो बर्दास्त करना ।

पर एक बात है बेटा, जो तुम्हारे और मेरे बीच की होगी (Father-Son):

अगर,वो तुम्हें छोड़ के चली जाए तब......
इन सब बातों से तुम्हारा दिल बैठा जाए
जिन्दगी में कुछ समझ ना आये
लगे की जिन्दगी खत्म होने वाली है
चारों तरफ अंधेरा व बेचैनियों का आलम हो
तब मैं तुम्हारे साथ रहना चाहूंगा
अपनी गोद में बिठाकर सीने से लगाउँगा

बालों को सहलाऊंगा, पीठ थपथपाउंगा
तू जैसे कहे वैसे तुझे मैं अपने हाथों से खिलाऊँगा
एक छोटे बच्चे की तरह तुझे कांधे पर सिर रखकर सुलाऊँगा
और प्रेमपूर्वक सारी बातों को समझाऊँगा
क्योंकि तुम मेरे इस धुंधली जिंदगी की
वो जमा पूंजी हो, जिसके जीवन की खुशी के लिए
मैं हर एक संभव कीमत चुकाउँगा ।

I Love You My Son...

सभी बच्चों ने कविता खत्म होने पर तालियाँ बजाई। कुछ बच्चियाँ खड़ी हुई और कहा कि क्या हम सब आपसे पढ़ाई के अलावा कुछ सवाल पूछ सकते है । हमने कहा हाँ, क्यों नहीं ? आपके मन में जो... सवाल है , आप बेझिझक हमसे पूछ सकते हैं। मैं तो चाहता भी हूँ कि आपकी जो 12-18 वर्ष की उम्र है जो किशोरावस्था की होती है। यह बड़ा ही तूफान वाली आयु होती है । जिज्ञासाएं ज्यादा होती है और हां,आप सभी डरे नहीं, आपके मन में जो सवाल है, पूछे ।

एक बच्ची ने पूछा - Sir, किशोरावस्था क्या होता है?

देखो किशोरावस्था (**Teen age**) एक ऐसा जीवन काल है जो शरीर, मन और आत्मा में गहन परिवर्तन लाता है। यह न केवल आत्म खोज और स्वनिर्माण का समय होता है बल्कि संघर्ष, असमंजस और सामाजिक दबाओं का भी समय होता है। जब आपकी उम्र 12-18 वर्ष के बीच की होती है।तब यह समय आपको आत्मनिर्भर, आत्मविश्लेषी और संवेदनशील बनाता है, बशर्ते वह सही दिशा और समझ के साथ इसे जिए।

बच्चे : तो Sir, Mam आप हमें कुछ ऐसे टिप्स दे जिससे इस अवस्था में हम स्वयं को संभाल सके और आगे बढ़ सके।

ठीक है, आज हम आप लोगों को वे सब सुझाव बताते है जो आपको न केवल मानसिक, शारीरिक, और भावनात्मक रूप से मजबूत बनाएंगे, बल्कि उनसे आप संतुलित और सार्थक जीवन की ओर अग्रसर भी होगें। अब सभी बच्चे शांत हो जाइए। आज आपलोगों को कुछ मार्गदर्शक बातें

बताई जायेंगी उन्हें ध्यान से सुनिए और दैनिक जीवन में उतारने का प्रयास कीजियेगा ।

1- स्वयं को समझना और स्वीकारना-:

आप सभी जिस उम्र में है सबसे पहले अपने अंदर उठ रहे भावनात्मक बदलावों को समझे। यह वह समय है जब आप खुद से सवाल करते हैं - मैं कौन हूं? मैं क्या बनना चाहता हूं ?

टिप्स

- रोज आप थोडी देर चिंतन करे।
- आप डायरी लेखन शुरू करे जिसमें अपनी भावनाओं, डर, खुशी और सवालों को लिखें।
- अपनी खूबियों और कमजोरियों को जाने और उन्हें स्वीकार करे।

क्यों जरूरी है ?

अगर आप स्वयं को समझने और खुद को स्वीकार करने की प्रक्रिया को अपनाते है, तो आप समाज की तुलना और आलोचनाओं से कम प्रभावित होगें।

2- SDN ने कहा "शारीरिक बदलाओ को सहजता से अपनाएं" -:

किशोरावस्था में हमारे शरीर में हार्मोनल बदलाव होते है, जिससे शारीरिक आकृति, आवाज, त्वचा आदि में बदलाव आने लगते है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

इसके लिए कुछ **टिप्स** है-:

- संतुलित आहार ले और रोज व्यायाम करें।
- आप प्रणायाम, अनुलोम-विलोम, और शारीरिक खिंचाव वाले आसन करे।

- शरीर के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करें। शारीरिक परिवर्तन से न घबराएं आप अपने शर्म या झिझक को 'अपने डॉक्टर, माता-पिता या भरोसेमंद शिक्षक से साझा करें।

तभी एक बच्ची बीच में बोली Sir आप और Mam से ही हम लोग कोई बात पूछेंगे क्योंकि आप लोग से हम कुछ पूछते है तो डराते नही है बताते है। अच्छा ठीक है बैठ जाओं ।

जो अभी बताए है हमारे लिए **क्यों जरूरी है ?**

अगर आप लोग अपने शारीरिक परिवर्तन एवं बनावट से असंतुष्ट रहते है, तो आपका आत्मविश्वास कमजोर होगा और आप आत्मग्लानि से ग्रसित हो सकते है। तो इसलिए आप अपने शारीरिक बदलाओ को सहजता से स्वीकार करे अपनाएं।

बच्चे -Sir , हम अपने जीवन में समय को कैसे व्यवस्थित करें ?

3. समय प्रबंधन और अनुसाशन-:

यह जो आपकी उम्र है इसमे आदतें बनने और बिगड़ने की होती है। यदि समय का सुदुपयोग करना आपने सीख लिया तो जीवन आसान बन सकता है।

टिप्स:

- हर दिन आप एक रूटीन बनाएं जिसमें पढ़ाई, खेल, मनोरंजन और आराम को संतुलित रूप से विभाजित किया जाए।
- मोबाइल एवं सोशल मिडिया का समय सीमित रखे ।
- कोशिश करे की पढ़ाई से संबंधित विषय वस्तु ही देखे ।

"**पहले अपनी जिम्मेदारी, फिर मस्ती** "के सिद्धांत को अपनाएं।

क्यों जरूरी है?

समय प्रबंधन एवं अनुशासन से आप मानसिक रूप से स्पष्ट होते है और आप अपने लक्ष्य की ओर संगठित रूप से आगे बढ़ सकते है।

Sir, क्या आप हमें एक रुटीन बनाकर दे सकते हैं?

देखिए, रूटीन आप अपने से बनाइए क्योकि यहाँ जितने भी छात्र-छात्राएं है सभी का परिवेश अलग-अलग है पर मैं, कहूंगा की इस समय आप सभी कार्यों को बाद में और पढ़ाई पर ज्यादा फोकस करे क्योंकि अभी 2 महीने बाद ही आपकी इण्टर की बोर्ड परीक्षाएं होनी है।

4. मित्र चुनते समय विवेक रखें-

इस उम्र में जो आपके दोस्त बनते है वह सच्चे वाले यानी की गहरे दोस्त बनते है जिनका असर आपके जीवन पर भी पडता है अगर आप गलत दोस्त का चुनाव करते है तो आप भी गलत संगत में पड़ सकते है गलत काम आपका जीवन संकट में डाल देता है।

इसलिए दोस्त / मित्र बनाते वक्त **आप कुछ टिप्स प्रयोग करे-**

- उन दोस्तों को चुने जो आपके आत्म-सम्मान का सम्मान करते है और आपको प्रेरित करते हैं।
- Peer pressure में आकर (दोस्तो के दबाव में आकर) कभी ऐसे निर्णय न ले जो आपके मूल्यों से समझौता करें।
- अगर किसी दोस्त के साथ लगातार मन दुखी होता है, तो उस दोस्ती पर पुनर्विचार करें।

क्यों जरूरी है-:

क्योंकि मित्र ही आपके स्वभाव को बनाते या बिगाड़ते है। सही संगति (मित्र) आपको संबल, देता है गलत संगति पतन की ओर ले जाता है।

5. भावनाओं को समझना और व्यक्त करना:

SDN - देखो बच्चों किशोरावस्था भावनाओं की तीव्रता का काल है - प्यार, गुस्सा, डर, अकेलापन । इन्हें आप जितना अपने अन्दर दबाओगे उतना ही आपकी समस्या बढ़ती जायेगी।

टिप्स -:

- भावनाओं को पहचाने- क्या आप उदास है या नाराज़ ?
- किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करे ।

- कला, लेखन, संगीत आदि में भावनाओं को अभिव्यक्त करे।

क्यों जरूरी है ?

बच्चों अभिव्यक्ति का मतलब है कि आप अपने अंदर की बातों को किसी व्यक्ति के सामने प्रकट करे। कभी-कभी अभिव्यक्ति की कमी से अवसाद, आत्महत्या जैसी स्थितियां जन्म ले सकती है, भावना की अभिव्यक्ति ही मानसिक स्वास्थ्य का द्वार है।

Sir अपने कहा की हम अपनी मन की बातों को दबाएं नहीं, व्यक्त करे। अगर हमारे माता-पिता हमारी बाते न सुनें तब । तब आप अपने किसी करीबी दोस्त जिस पर आपको पूर्ण भरोसा हो उसे बताए।

बच्चे - अगर वह भी हमारी बात ना सुने तब।

तब तुम मुझसे अपनी बात कहना मैं तुम्हारें बातों का हल निकलूंगा । ठीक है... अब बैठ जाओ। देखो , इस समय सभी मोबाइल फोन का इस्तेमाल कर रहें है अब इसके बारे में बताता हूँ।

6. डिजिटल दुनिया का संतुलित प्रयोग:

सोशल मीडिया (फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर) गेम्स, इंटरनेट - किशोरों के जीवन का हिस्सा है। परंतु ये उपयोगी तभी है जब इनका संतुलन बना रहे।

टिप्स -:

- मोबाइल फोन को 2 घंटा से अधिक इस्तेमाल ना करे।
- रात को सोने से 1 घंटा पहले मोबाइल बंद कर दें।
- हर दिन कुछ समय तकनीक (मोबाईल फोन, गैजेट्स) से दूर बिताए, किताब पढ़े, ध्यान करे, योग करे, पेड़ - पौधों से बातें करे देखभाल करे, घूमने निकले ।

क्यों जरूरी है ?

हम अत्यधिक डिजिटल सामानों का उपयोग करते है तो हमारी एकाग्रता कम होती है भावनात्मकता असंतुलन बढ़ता है और नींद की गुणवत्ता में

गिरावट आती है और हम मानसिक रोग का शिकार भी हो सकते है। क्योंकि इस तरह के केस बढ़ते ही जा रहे है।

7. संवाद कौशल विकसित करे:

आप लोगों की जो उम्र है उसमें सही संवाद ही रिश्तों को संभाल सकता है। अक्सर किशोर किशोरी यानी कि आप आपने माता-पिता या शिक्षकों से दूरी बना लेते है जिससे आपकी समस्याए और बढ़ जाती है।

टिप्स :

- खुलकर, पर विनम्रता से बोलना सिखे।
- सुनना संवाद का सबसे अहम हिस्सा है- आप अपने सामने वाले को भी मौका दे बोलने का।
- गुस्से में कभी संवाद ना करें - शांत होकर ही बात करें।

क्यों जरुरी है ?

आप अपने संवाद से अपनी बातो को स्पष्ट रूप से किसी को समझा सकते है और उसपर अपना प्रभाव छोड़ते है जो आपकी प्रतिभा को दर्शाता है की आप शब्दों को समझने में कितने निपुण है ।

8. निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाएं -:

आप लोगो की जो आयु वर्ग है इसमें ही अत्मनिर्भर बनने की शुरुआत होती है। छोटे- छोटे निर्णय लेने की खुद आदत डाले।

बच्चे - सर, अगर हम गलत निर्णय ले ले, तब ?

देखिये , आप जब निर्णय लेते है तो निर्णय का परिणाम दो ही होता है- सही या गलत ।

जब आपको यह आभास हो जाए की मैनें गलत निर्णय ले लिया है तो थोड़ा रुक जाए और उस विषय से संबंधित कुशल व्यक्ति से राय ले।

बच्चें - Thank you sir

टिप्स-:

- जब आप कोई निर्णय ले तो 'इसके परिणाम क्या हो सकते है ?' विचार करे।
- अपने विकल्पों की तुलना करे।
- अगर आपसे गलती हो जाए तो उससे सीखे, खुद को दोष ना दें।

क्यों जरूरी है ?

देखिये, निर्णय लेने की क्षमता से आत्मविश्वास बढ़ता है और किशोर आने वाले जीवन की जिम्मेदारियों के लिए तैयार होते है।

9. अपने लक्ष्य और जुनून को खोजे -:

जो आपकी उम्र है किशोरावस्था (12-18) वाली उसमे आप सपने देखते है और उन्हें आकार देने की कोशिश करते है। यह जरूरी नहीं है कि आप तुरंत तय करें कि जीवन में क्या बनना है, लेकिन आप एक सही लक्ष्य की खोज जारी रखें।

टिप्स -:

- अलग- अलग चीज अपनाएं- संगीत, खेल, लेखन, गणित, विज्ञान, कला आदि ।
- आत्ममंथन करे कि क्या करने से आपको सबसे अधिक संतुष्टि मिलती है ?
- प्रेरक पुस्तके और जीवनी पढ़े।

क्यों जरूरी है ?

जब आप इस उम्र में अपने लक्ष्य को निर्धारित कर लेते है तो आप सही दिशा में जुनून के साथ कार्य करने लगते है जिससे आप ज्यादा केन्द्रित और सकारात्मक रहते है।

10.मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें -:

अक्सर देखा जाता है कि आप मानसिक स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बरतते है जो कि घातक होता है। मानसिक स्वास्थ्य आपकी प्राथमिकता होनी

चाहिए। क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य आपको सही निर्णय लेने में मदद करता है।

टिप्स -:

- अगर बार-बार उदासी, घबराहट, डर या अकेलापन महसूस हो रहा हो तो आप किसी सलाहकार, काउंसलर या विश्वसनीय वयस्क से बात करें।
- पर्याप्त नींद ले (7-8 घंटे रोजना)।
- ध्यान, योग प्राणायाम जैसे उपायों को अपनी दिनचर्या में शामिल करने का प्रयास करे।

क्यों जरूरी है ?

मानसिक रूप से स्वस्थ्य किशोर ही समाज में संतुलित भूमिका निभा सकता है आप अपने परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। आत्महत्या की बढ़ती घटनाएं हमें इस गंभीर सोच की ओर ले जाती है।

यह थे, आपके **10 टिप्स** जो आपके जीवन को बेहतर बनाने में सहायक होगे।

सभी बच्चे खुश नजर आ रहे थे। क्योंकि उनके मन कि कुछ हद तक दुविधाएं खत्म हो गई थी। मैं और SDN जैसे ही खड़े हुए बाहर निकलने के लिए सभी बच्चों ने एक साथ Thank you बोला, हम लोग भी वर्ग कक्ष से बाहर निकल आए ।

तब SDN ने मुझसे एक महत्वपूर्ण वाक्य बोला -**" किशोर वह बीज होता है, जिसमें पेड़ बनने की संभावनाएं होती है। जरूरत है तो केवल पोषण, दिशा और धैर्य की।"**

मैंने कहा- ओ मेरी प्यारी HS (Home Science) की टीचर, आपकी बात बिल्कुल सत्य है ।

कुछ कविता बच्चो के सन्दर्भ में :

किताबों वाली बच्ची

सड़क के उस पार
धूप की लपटों में
गर्म धूल उड़ रही थी
और उसके बीच
सरकारी मुलाज़िम
बुलडोज़र लेकर
जैसे कोई युद्ध लड़ रहे थे।

नहीं,
यह युद्ध किसी दुश्मन से नहीं था
यह युद्ध था एक झोपड़ी से-
जो महज़ चार बांस और एक चादर का नाम था।

उस झोपड़ी के मलबे के पास
एक नन्ही बच्ची बैठी थी
न उसके हाथ में कोई तख़्ती
न नारा
न क्रोध।

बस,
वो अपनी बिखरी किताबें समेट रही थी
धूल में सने पन्नों को पलट रही थी
जैसे हर अक्षर से कह रही हो-
"डरो मत, मैं तुम्हें फिर पढ़ूंगी।"

उसकी आँखों में आँसू नहीं थे
कोई शोर भी नहीं
लेकिन उस ख़ामोशी में
पूरे समाज पर
एक प्रश्नवाचक चिह्न था।

क्या विकास सिर्फ ईंट-पत्थर से मापा जाएगा **?**
या उस बच्ची की किताबों में भी
कोई भविष्य लिखा जाएगा**?**

बुलडोज़र चला गया
मलबा रह गया
पर वो बच्ची अब भी बैठी थी-
एक नया घर नहीं
पर एक नया इरादा लेकर।

मेरा क्रोध उस वक्त शांत हो गया

मेरा क्रोध उस वक्त शांत हो गया
जब मैंने कक्षा दसवीं की छात्रा को
लोहे को पीटते हुए देखा
कोमल हाथों में किताबों की जगह
आज हथौड़े की गूंज थी बसी।

जो उँगलियाँ कलम थामकर
स्वप्नों को आकार देती थीं
आज वही हथौड़े से
अपने भविष्य को ठोक रही थीं।

गर्म लोहे की चिंगारियों में
उसकी आँखों का सपना जलता था
हर चोट के साथ उसकी मासूमियत
धीरे-धीरे राख बनती जाती थी।

मैं क्रोधित था दुनिया पर
जो न्याय की बातें करती है
पर एक लड़की के बचपन को
यूँ ही भट्टी में झोंक देती है।

क्या यही है उसका भाग्य?
क्या यही था उसका अधिकार?
जहाँ किताबें होनी थीं हाथों में
वहाँ जंजीरों से बंधी तकदीर मिली।

मेरा क्रोध शांत नहीं हुआ
बल्कि भीतर ही भीतर सुलग उठा
क्योंकि एक लड़की का संघर्ष
इस समाज का दर्पण बन चुका था।

काश! कोई उसे फिर से कक्षा में बैठाए
उसकी उंगलियों में फिर से कलम थमाए
वो पढ़े, आगे बढ़े, अपना भाग्य लिखे
ना कि हथौड़े से अपनी तकदीर को पीटे।

हम किशोरावस्था के बच्चे

हम किशोरावस्था के बच्चे
पढ़ाई-लिखाई छोड़
घर से मजबूरी में कमाने निकलते हैं
नन्हे हाथों में किताबों की जगह
अब हथौड़े, ईंटें और बर्तन होते हैं।

कल तक जो सपने रंगीन थे
आज वे धूल और धुएं में गुम हो गए
जो खेलते थे गुड्डे-गुड़ियों से
आज पेट भरने को जूझ रहे।

स्कूल की घंटी की जगह
अब फैक्ट्री की मशीनें सुनाई देती हैं
मास्टर की डाँट की जगह
अब मालिक की गालियाँ मिलती हैं।

ना खेलने का वक़्त, ना आराम का हक
बस रोटियों की लड़ाई में खो गया बचपन
कभी चाय की दुकान, कभी ढाबे की चौकी
कभी किसी बंगले के दरवाजे पर हमारी परछाई।

पाँव जलते हैं सड़क की तपिश में
दिल टूटता है हर तिरस्कार में
जब किसी को स्कूल जाते देखते हैं
तो आँखों में आंसू घुल जाते हैं।

क्या हम बच्चे नहीं?
क्या हमें हँसने का हक नहीं?
क्या हमारा जीवन यूँ ही बीत जाएगा
ख्वाबों को कुचलकर, दुनिया की धूल में?

काश! कोई देख पाता हमारी बेबसी
काश! कोई थाम लेता हमारे हाथ
हमें भी मिलती किताबों की दुनिया
हमें भी मिलता बचपन का अधिकार।

अगले दिन मैने SDN को देखा तो उसके दाएं हाथ पर कुछ जले के निशान थे जिसे वह मुझसे छिपा रही थी । मैने उससे पूछा की कैसे हुआ तो वह बोली कि बस खाना बनाते वक्त हो गया। ऐसे कैसे ? तुम्हारा ध्यान कहा रहता है। अच्छा तो मेरा काम आकर तुम ही कर दिया करो, कुछ पल के लिए तो आराम मिलेगा। अच्छा छोड़ो ये बात, यह बताओ अगर मैं पंछी होती तो तुम मेरे लिए क्या लिखते ? फिर उसने कहा अपनी जगह मुझे रख कर सोचना । तब मैने उसके लिए शाम तक दो कविता लिखी-

मैं एक पंछी बन जाऊँ

सुबह जब मैं जागूं
तो एक पंछी बन आकाश में उड़ जाऊँ
सूरज की सुनहरी बाहों में समा जाऊँ
उसकी किरणों से कुछ उजास ले आऊँ
दिनभर नीले गगन की चुप कहानियाँ सुनूँ
बादलों से टकराकर उनकी हँसी चुनूँ
और शाम को, थकी सी किरणों के साथ
घर लौट आऊँ... खामोशी की बाँहों में
रात को मैं चाँदनी की शीतल छाँव में
मख़मली चादर ओढ़कर सो जाऊँ
तारों की लोरी सुनते-सुनते
सपनों के जंगल में खो जाऊँ
ना कोई बंधन हो, ना कोई सीमा
बस उड़ान हो, नर्म सी पीड़ा
हर दिन एक नई उड़ान का नाम हो -
और हर रात एक सुकून-सा आराम हो।

निशान कुछ कहते है

तुम्हारे दाएँ हाथ पर वो जले का निशान
जैसे किसी दर्द ने खुद को लिख छोड़ा हो वहाँ
मैं हर बार देखता हूँ चुपचाप
पर दिल में तूफ़ान उठता है बार-बार।
कौन सी दुनिया में खोई थीं तुम,
जहाँ आग से भी ज़्यादा ज़रूरी था रुकना ?
किस सपने को पकड़ने चली थीं इतनी तेज़,
कि जल गए हाथ... और रह गया एक राज़ ?
गर्दन पर वो हल्के निशान,
शायद थकान की कहानियाँ हों,
या फिर दुनिया की बेरहमियों से लिपटी
अनकही दास्तानों की निशानियाँ हों।

मैं कुछ नहीं पूछता,
पर हर निशान चीख-चीख़कर सवाल करता है,
तोड़ता है मेरी खामोशी,
और मुझे अंदर से बेचैन करता है।
तुमसे बस इतनी इल्तजा है,
थोड़ा सा अपना ख्याल रखना,
इस बेरहम दुनिया में,
कोई तो हो जो तुम्हें टूटने से बचाए।
मैं नहीं जानता वो निशान क्या कहानी कहते हैं,
पर इतना जानता हूँ -
तुम्हारे हर घाव पर हक़ है अब मेरा,
और हर दर्द में साथ चलना हैं फर्ज़ मेरा।

SDN AUR DOST

यह उन दोस्तों को समर्पित जो मेरे बेहद करीबी और अब तक साथ है ।

दोस्त

ऐ दोस्त, कभी मौका मिले
तो तुम्हें मैं अपने दस्तरखाने ले जाऊँगा
जहाँ एक टेबल, छः कुर्सिया और हम पाँच
छोड़ रखी है किसी के सम्मान में एक कुर्सी
जहाँ मैं तुम्हें प्रेमपूर्वक बैठाऊँगा।

दस्तरखाने के एक कोने पर जहाँ एक नल लगा होगा
वहाँ मैं नल चलाऊँगा और तुम्हे हाथ-पैर धुलवाऊँगा
कुछ देर के बाद मेरा छोटा लड़का 'सार्थक' तुमसे मिलने आयेगा
तुम्हारे पैरों को छूकर एक लोटा जल और गुड़ देकर जायेगा
अगर सिद्धांत- सिद्धांत की आवाज सुनाई दे कानों में
तो समझना वह मेरा बड़ा लड़का
वह तुम्हें दस्तरखाने के बगल वाले कोठरी में ले जायेगा
जहाँ दरी-बिछावन वह चौकी पर कर माँ के पास चला जायेगा।

तुम थोड़ा देर आराम करना तब तक खाना बन जायेगा
अगर तुम्हें गरमी लगे तो वहाँ पंखा झलता मुझको पायेगा
सुख-दुख की कुछ बातें होगी, एक-दूजे की नम आंखें होगी
मैं अपनी पत्नी की आवाज सुन
तुम्हें पुनः दस्तरखाने ले जाऊँगा
जहाँ पत्नी के हाथ की चूल्हें पर बनी मक्के की रोटी
सरसों का साग और साथ में मीठी खीर

माँ के हाथों से खिलवाऊँगा।
मेरी पत्नी थोड़े ही देर में तुम्हें
पुनः मक्के की रोटी, सरसों का साग और मीठी खीर
माथे पर पल्लू ओढ़े लेकर आयेगी
बड़े चाव से तुम खाना, वह खाना परोसते वक्त थोड़ा लजाएगी
अगर खाने में कंजूसी करो तो माँ और थोड़ा- और थोड़ा
यह कहकर तुम्हें भरपूर खिलायेगी।

जब जाने का वक्त होगा, विदा करने तुम्हें
मेरा पूरा परिवार दरवाजे तक छोड़ने आयेगा
पर मैं तुम्हें छोड़ने स्टेशन तक जाऊँगा
हँसी-ठिठोली मीठी बोली के बीच
ट्रेन की आवाज मेरे कानों तक भी आयेगी
तब मेरा दिल घबरायेगा
ट्रेन की डिब्बे की तरफ जब तू कदम बढ़ायेगा
यह सोच मेरे आँखों में आँसू भर आयेगा
पुनः अब तुमसे दुबारा मिलना ना हो पायेगा।

"**ऐ दोस्त**, **कभी मौका मिले**
तो तुम्हें अपने दस्तरखाने से जाऊँगा
जहाँ एक टेबल छः कुर्सियाँ और हम पाँच
छोड़ रखी है किसी के सम्मान में एक कुर्सी
जहाँ मैं तुम्हें प्रेमपूर्वक बैठाऊँगा ।"

अवतरण दिवस

चमके नभ में एक तारा
उजियारा बन धरा पर उतरा
रजनी के रूप में आया
नव आशा का दीप जलाया।

संध्या का आँचल छूट गया
रात ने अपना रूप लिया
चमक रही चाँदनी शीतल
धरती पर ये अमृत बरसा।

सितारे भी मुस्काते है
रजनी के सँग गाते हैं
हर कोना आलोकित हुआ
सपनों की कली फिर महकी।

तू है शांति की छाया
तू है नीद का मृदुल आँचल
सभी दुखों का संहारक
ओ रात, तेरा स्वागत ।

जग को विश्राम का उपहार
रजनी का है अनुपम सार
धरती और नभ तुझसे मिले
तूने सबको नया रंग दिए ।

सपनों के ताने-बाने में
हर दिल को सकून दे तू
हे रजनी, तेरे आगमन पर
धरा आशीष से भर जाए।

हम अजनबी पाँच शख्स...

हम अजनबी पाँच शख्स,
कब दोस्त बने गए, पता नहीं
वो अनजान राहों के हमसफ़र
अब दिल के करीब कब आ गए, पता नहीं।
उसमें सबसे बड़ा मैं
जो सिर्फ सबको आदेश देता, समझाता
ज़िम्मेदारी की चादर ओढ़े
हर वक्त खुद को बड़ा बताता।

कभी हँसी में, कभी झगड़ों में
वो अपनापन कब घुल गया, पता नहीं
जो राहें अकेले तय करनी थीं
वो कब संग-साथ चलने लगे, पता नहीं
वक्त ने हम सबको पास लाया
हर मोड़ पर रिश्तों को आजमाया।

कुछ खट्टी, कुछ मीठी यादें दीं
पर दोस्ती का बंधन और मजबूत किया
अब सोचता हूँ, वो अजनबीपन कैसा था?
जब आज ये अपनापन सबसे बड़ा अहसास है
हम जो कभी अजनबी थे
आज एक-दूसरे का परिवार बन गए, पता नहीं ।

किसी ने मुझसे मेरे दोस्त की शिकायत की...

किसी ने मुझसे मेरे दोस्त की शिकायत की
कहा- "वो अच्छा नहीं, उसकी बातें सही नहीं।"
मैंने सुना, सिर झुकाया
पर दिल ने कुछ और ही समझाया।

मैंने भी समझा दिया उन्हें
कि दोस्ती अच्छाइयों की सौदेबाज़ी नहीं
ये तो वो रिश्ता है
जहाँ बुराइयाँ भी अपनाई जाती हैं।

तुम अच्छे-अच्छों से दोस्ती निभाते हो
पर मेरे लिए, बुरा भी मेरा अपना है
उसकी कमियाँ हैं, मैं मानता हूँ
पर उसे छोड़ दूँ, ये नहीं जानता हूँ।

उसने भी तो मेरा हर रूप अपनाया
मेरी गलतियों पर भी कंधा थपथपाया
जब दुनिया ने मुझसे मुँह मोड़ा
तब उसी ने मुझे संभाला, हौसला दिया।

तो क्या अगर उसकी राहें सीधी नहीं ?
तो क्या अगर उसके लहजे तीखे हैं ?
वो मेरा दोस्त है, मेरी दुनिया का हिस्सा है
और दुनिया के किसी भी फ़ैसले से बड़ा है।

जिंदगी के सिरफिरे दोस्त

जिंदगी में कुछ सिरफिरे दोस्त होने चाहिए
जो जरूरत पड़ने पर दिमाग नहीं
दिल से काम लेते हैं।

जो तर्क-वितर्क में नहीं उलझते
बस हाथ पकड़कर कह देते हैं-
"चल, मैं तेरे साथ हूँ।"

जो मुश्किलों के गणित नहीं सुलझाते
बस हंसी में तकलीफें उड़ा देते हैं
जो सोचते नहीं कि सही क्या है
बस महसूस करते हैं कि तेरा दर्द क्या है।

ऐसे दोस्त जो खुद से पहले तुझे रख दें
जो तेरी जीत पर तुझसे ज्यादा नाचें
तेरी हार पर तुझसे ज्यादा लड़ें
और तेरी बेवकूफियों पर तुझसे ज्यादा हंसे।

क्योंकि जिंदगी में समझदार बहुत मिलते हैं
पर असली मजा उन सिरफिरों के साथ है
जो तर्क नहीं, बस यारी निभाते हैं!

अनुराग, रजत, अंकित और विशाल

हम सबका प्यारा बावर्ची – रजत

हम सबका प्यारा बावर्ची
जिसकी रसोई सजे रोज़ नई
जो रोटी बनाए गोल-मटोल
ममता से भरी, नरम और सही।

सब्ज़ी में वह मसाले मिलाए
जिनकी खुशबू दिल तक जाए
चूल्हे पर जब प्यार से पकाए
हर निवाला स्वाद बढ़ाए।

चटनी हो तीखी या मीठा हो भात
हर स्वाद में बसता है उसका हाथ
रसोई में उसकी जादूगरी
हर थाली लगे राजसी करी।

बड़े प्यार से वो भोजन परोसे
हर कोई पेट भर, दुआए बरसे
बड़ा प्यारा है उसका नाम
"**रजत**" को बावर्ची कह, हम सब दें सम्मान ।

मैं नास्तिक हूँ, पर तुझमें आस्था है

(विद्यालय के सभी शिक्षक साथियों के लिए)

मैं नास्तिक हूँ
ना मंदिरों की घंटी मुझे खींचती है
ना पूजा की थाली में मुझे ईश्वर दिखता है
पर जब तू सामने होता है
तो विश्वास किसी आरती-सा बज उठता है मेरे भीतर।

तू मेरा मित्र है, मेरा सखा
तेरे होने या न होने से फर्क पड़ता है
भगवान से नहीं -
पर तुझसे जरूर
क्योंकि तू वो है जो दुख में हँसना सिखाता है
तू वो है जो मौन को भी समझ लेता है।

भगवान को भी जब ज़रूरत पड़ी
तो कृष्ण ने सुदामा को अपना लिया
राम को भी केवट की नाव की आस थी
सखा का होना, किसी धर्म से कम नहीं।

तू मेरे लिए वही केवट है
वही सुदामा -
जो बिना चमत्कार के
मेरी ज़िंदगी में चमत्कार लाता है।

तो भला मैं क्यों नास्तिक न रहूँ ?
जब मेरा विश्वास, मेरी आस्था
किसी देवता में नहीं -
तेरे जैसे इंसान में है।

मैं ईश्वर को नहीं मानता

पर तुझमें मुझे ईश्वर जैसा अपनापन दिखता है
तू जब साथ होता है
तो मैं सबसे शक्तिशाली महसूस करता हूँ।

इसलिए,
मैं नास्तिक होकर भी
तेरे जैसे सखा में
अपना भगवान पा लेता हूँ।

मेरे कुछ शिक्षक मित्र

विजय, नित्यानंद, अंकुर, अजय, सुजीत, शिवप्रकाश, प्रवीण, राकेश, अभय, विशाल और संदीप –

हम शिक्षक मित्र – ज्ञान के दीपक

हम सब एक ही सपना लेकर आए
ज्ञान की रोशनी हर दिल में जगाएं
संदीप की मुस्कान में भरोसा खिलता
विजय की दृष्टि में आदर्श दिखता।

नित्यानंद की बातों में करुणा बहती
अंकुर की वाणी में ममता रहती
अजय की कोशिशें उम्मीद जगातीं
सुजीत की गहराई सिखा जाती।

हम सब शिक्षक बनकर कुछ और नहीं
हर बच्चे की आंखों में स्वप्न लिखने वाले हैं
शिवप्रकाश की सादगी में सच्चाई झलकती
प्रवीण की सीख में रोशनी चमकती।

राकेश का धैर्य पर्वत सा अटल
अभय का साहस बेमिसाल, अमिट जल
विशाल की हंसी में अपनापन छलकता
हर मुश्किल में साथी बनकर चल पड़ता।

कभी हम स्टाफरूम में चाय पर बहसें करते
कभी कक्षा की शांति पर मुस्कान भरते
कभी बच्चा पढ़ने से घबराए
तो हम सब मिलकर उसका हौसला बढ़ाएं।

विजय कहे – "विधार्थी में दीप जलाना है"
नित्यानंद बोले – "हर मन को सहलाना है"
अंकुर बोले – "हर प्रश्न को सरल बनाओ"
अजय कहें – "सपनों के पंख लगाओ।"

सुजीत बोले – "संस्कार भी सिखाने हैं"
शिवप्रकाश कहें – "हर बच्चे को अपनाने हैं"
प्रवीण बोले – "सबका हाथ थामना है"
राकेश कहें – "नैतिक दीप जलाना है।"

अभय बोले – "डर को दिल से मिटाना है"
विशाल कहें – "हर मन में उजाला फैलाना है"
और संदीप कहें – "हम सबका यही काम है
ज्ञान बांटना ही सबसे बड़ा ईमान है।"

हम सब शिक्षक मित्र हैं
एक दूसरे के कंधे का सहारा
कभी थकें तो कोई हौसला दे जाए

कभी मुस्कुराहट से दिन सजा जाए।
हमारी दोस्ती भी एक पाठशाला है,
जहां हम खुद रोज़ कुछ सीखते हैं –
धैर्य, प्रेम, समर्पण, सहयोग।

जहां हर शिक्षक –
कभी विद्यार्थी बन जाता है,
कभी गुरु बनकर राह दिखाता है।

SDN द्वारा आरोपित करना

मैं कई दिनों से देख रही हूँ कि तुम मुझे देख रहे हो और देखते भी हो तो एक टक, ठीक नहीं कर रहे हो। किसी को यूँ घूर कर देखना, अच्छी बात नहीं है।

किसने कह दिया कि मैं तुम्हें घूर कर देखता हूँ ? तुम लोगों की बातों में आ गयी या यह तुम्हारी मन की बात है। ठीक है, अगर मै गलत हूँ तो तुम रो क्यूँ रही हो ? और जब तुमनें कह ही दिया, इल्ज़ाम लगा ही दिया मुझपर, तो एक बात मेरी भी सुन लो यह बात तुम मुझसे भी पूछ सकती थी। यूँ सबके सामने तुमने मुझ पर एक प्रश्न चिन्ह लगा दिया जिसका कोई जवाब नहीं। मैं तुम्हारे मुखमण्डल से कभी नीचे उतरा ही नहीं अगर इस तरह के देखने को बुरा मानती हो । तो हां, हूँ मैं बुरा, किसने कहा था तुम्हें अपना रूप परिवर्तित करने के लिए तुम वही रहती स्थूल टेबल, कुर्सी, मेज, दीवारों की तरह। मैं तो तुमसे उस अवस्था में भी बात करता था।

चुप क्यों हो जवाब दो ?

आज के बाद तुम मुझसे दूर रहना और न ही मुझसे बात करना। यह बातें वह कह भी रही थी और रो भी रही थी । पता नहीं उसके मन में किसने क्या बीज बो दिया, ये तो नहीं पता। लेकिन जिसे मैं अपने मन में कुछ और समझता रहा वह कुछ और हो गयी, वह बदल गयी। इस कदर का परिवर्तन अचानक मुझे नहीं पता मेरे मन में बहुत सारे सवाल थे । जो प्रश्न मैं उससे तत्क्षण सबके सामने पूछ सकता था, लेकिन नहीं इससे मेरी और उसकी दोनों की मर्यादा धूमिल होती।लोगों का क्या लोग मजे लेते। हम दोनों के बीच की बातें थी इसलिए मैंने किसी को कुछ बोलने भी नहीं दिया। मैं वहाँ से उठा और अपने रूम पर चला आया। बहुत सारी बातें मन में दबा ली। देखना मानों जुर्म हो गया । मैंने तो उसे निश्चल भाव से देखा, कभी उससे किसी भी तरह की गलत बातें ना कि रोज विद्यालय जाने

की वजह से ना Phone Call और न ही मैसेज कुछ नहीं। उसे देख कर मैं प्रेरित होता, उससे मुझे बल मिलता, और.. मैं कुछ नया रचना करता। खैर , दो दिनों तक यह उधेड़ - बुन चलता रहा कुछ अच्छा ना लगने को भी मैं दरकिनार करने लगा मानों जैसे कुछ हुआ ही ना हो । आखिर प्रेम में चरम पराकाष्ठा का अंत होता ही है या तो प्रेम का अंत, या प्रेमी का । इन दिनों मैने ढेर सारी कविताएँ लिखी एक माह में जिसे मैं अपने पास ही रखा किसी को दिखाने की कोशिश ना की क्योंकि यह कविता SDN की स्थूल से परिवर्तित हो सुन्दर, रूपवती, यौवन पूर्ण होने व उसमें बदलाव पर है ।

एक चेहरा जिसे मैं प्रेम से देखता हूँ

एक चेहरा जिसे मैं प्रेम से देखता हूँ
हर बार तुम कहते हो कि मैं तुम्हें घूरता हूँ
मेरी नजरों में बस तुम्हारा ही प्रतिबिंब है
पर तुम इसे नज़रअंदाज़ करने में माहिर हो।

जो भाव छुपा है मेरी आँखों के समंदर में
वो प्रेम की एक अनकही कहानी कहता है
पर तुम्हें लगता है यह कोई छलावा है
और मेरा मौन तुम्हें बस एक तमाशा लगता है।

तुम्हारे लिए मेरी हर नजर सवाल बन गई
और मेरी चाहत की गहराई बवाल बन गई
जो दिल की बात थी, वो जुबां तक न आई
और मेरा प्रेम तुम्हारे लिए एक गलती समझी गई।

मैं तो बस तुम्हारे चेहरे की रेखाओं में खोता हूँ
हर मुस्कान में तुम्हारी अपनी दुनिया बुनता हूँ
पर तुम इसे एक अपराध मान बैठते हो
और मेरी भावनाओं को परे कर देते हो।

काश तुम समझ पाते मेरी इन आँखों का हाल
जो हर पल देखती हैं बस तुम्हारा ख्याल
यह घूरना नहीं, यह तो पूजा का रूप है
जहाँ तुम मेरी आराध्या, और मेरा मन व्रतधारी है।

पर तुमने जो कहा, मैं चुपचाप सह गया
अपने प्रेम को मन में ही दबा गया
क्योंकि प्रेम में अधिकार नहीं जताया जाता
यह तो दिल से दिया और सहा जाता है।

एक चेहरा जिसे मैं प्रेम से देखता हूँ
अब उस चेहरे को देखना भी छोड़ता हूँ
पर दिल में तुम्हारी तस्वीर अमर रहेगी
चाहे मेरी नज़रें तुमसे दूर ही रहेंगी।

जीना हराम कर रखा है तुम्हारी आँखों ने

जीना हराम कर रखा है तुम्हारी आँखों ने
चुपके से दिल चुरा लिया तुम्हारी बातों ने
जो देखूं तुम्हारी नजरों का जादू
सुकून लूट लिया है तुम्हारे ख्वाबों ने।

ये काजल से सजी गहरी खाई
जैसे दिल को कैद में लाई
पलकों का उठना और झुकना
जैसे कोई कहानी सुनाई।

तुम्हारी आँखों की ये शरारत
बेबसी में डूबी एक इबादत
हर बार जो उनसे टकराता हू
खुद को और खोता जाता हूं।

कैसे संभालूं इस दिल को अब
तुम्हारी नजरें तो करती हैं गजब
हर पल तुम्हें ही देखना चाहे
तुम्हें ही सोचे, तुम्हें ही मांगे।

जीना हराम कर रखा है तुम्हारी आँखों ने
हर ख्वाब को बाँध रखा है इन जंजीरों ने
न दूर जाऊं, न पास आ सकूं
इन नजरों में बस यूं ही खोया रहूं।

तुम्हारा दिख जाना ही काफी है

तुम्हारा दिख जाना ही काफी है
मेरे नए विचारों के जन्म के लिए
जैसे सूखी धरती पर पहली बारिश
जैसे अंधियारे में दीप की बाती।

तेरी एक झलक में छुपा है सृजन
जैसे लहरों में समाया हो जीवन
हर मुलाक़ात एक नई कहानी
हर मुस्कान में मिलती है रवानी।

तेरी आँखों में बसती प्रेरणा
तेरे शब्दों में दिखे एक दर्पण
हर बार कुछ नया सीखता हूँ
तेरी आहट से नया सोचता हूँ।

तेरी मौजूदगी एक किताब लगे
जिसके हर पन्ने पर सीख जगे
तू मिले न मिले, कोई ग़म नहीं
तेरी यादें भी राह दिखाने लगीं।

तू आई, तो विचार खिल उठे
तेरे जाने के बाद भी दीप जल उठे
तुम्हारा दिख जाना ही काफी है
मेरे नए विचारों के जन्म के लिए।

आदर और सम्मान

"मेरी पत्नी के बाद तुम वो औरत हो
जिसे मैंने आदर्श माना।"

तेरी सोच में गहराई देखी
तेरे शब्दों में सच्चाई देखी
तेरे कर्मों में निष्ठा पाई
तेरी आँखों में सादगी देखी
तेरी परछाईं में संघर्ष की लौ
तेरी हँसी में सुकून का संजो
हर कदम पर मजबूती पाई
तेरी शख्सियत में रोशनी देखी
न कोई छल, न कोई दिखावा
तेरी सादगी ही सबसे बड़ा गहना
सम्मान से तुझे देखा मैंने
तेरी सोच को सदा सराहा मैंने
मेरी पत्नी मेरी पहली प्रेरणा रही
पर तेरी सोच ने भी राह दिखाई
जो सीख तुझसे मिली मुझे
वो जीवनभर मेरे संग समाई।
तू भी एक मिसाल है
तेरे विचारों में कमाल है
मेरे आदर्शों में तेरा नाम है
तेरे सम्मान में मेरा प्रणाम है।

मेरे जीवन की अनुपम कृति होगी..

मेरे जीवन की अनुपम कृति होगी
मेरे द्वारा तुम्हारी तस्वीरों की रेखाचित्र खींचना
हर रेखा में तुम्हारे भाव उकेरना
हर रंग में तुम्हारी आत्मा का स्पर्श भरना।

जब कागज़ पर तुम्हारा अक्स बनेगा
तो मानो मेरी भावनाएँ आकार लेंगी
हर लकीर में तुम्हारी मुस्कान होगी
हर छाया में तुम्हारी यादें घुली होंगी।

तुम्हारी आँखों की गहराई में
मैं अपने सपनों का प्रतिबिंब देखूँगा
तुम्हारे चेहरे की कोमलता में
मैं अपनी भावनाओं को जीवंत कर दूँगा।

यह चित्र सिर्फ आकृति नहीं होगा
यह मेरे मन का दर्पण होगा
जहाँ हर लकीर एक कहानी कहेगी
जहाँ हर रंग मेरी भावना सहेजेगा।

अगर तुम मुझसे दूर भी चली जाओ
तो यह चित्र मेरी साँसों में रहेगा
क्योंकि तुम्हारी तस्वीर को उकेरना
मेरे जीवन की सबसे अनुपम कृति होगी।

हम व्यर्थ नहीं करते भावनाएं किसी पर

हम व्यर्थ नहीं करते भावनाएं किसी पर
हर एहसास रखते हैं दिल के अंदर
जो समझ सके उनके लिए हैं ये अनमोल
वरना शब्द भी बन जाते हैं बेमोल।

दिल की गहराइयों से जो निकलते हैं
भावनाएं केवल उनके लिए चलते हैं
हर किसी पर नहीं लुटाते हम ये प्रेम
क्योंकि सच्चाई के साथ है हमारा नेम।

हर आंसू जो बहता है आंखों से
उसका भी होता है एक मायना
जो उसे समझ न सके
उनके लिए ये संसार बस इक रंजना।

हमारे शब्द, हमारी चुप्पी भी खास है
हर जज़्बा हमारी आत्मा का हिस्सा है
जो कद्र करे वो पाए इसे
वरना ये दिल बस खामोश ही रहे।

हम व्यर्थ नहीं करते भावनाएं किसी पर
क्योंकि जान चुके हैं इस जग की नजर
सिर्फ वही जान पाएगा इसकी कीमत
जो समझेगा दिल की हर एक खबर ।

तू है मेरी सजीव कथा

तू है मेरी सजीव कथा
तू है मेरे हृदय की व्यथा
हर पन्ने पर तेरा ही नाम लिखा
हर साँस में तेरा एहसास बसा।

तू मेरे स्वप्नों की छवि बनी
हर कल्पना में तेरा रंग घुला
तेरी हँसी मेरी कविता का स्वर
तेरा मौन मेरी पीड़ा का असर ।

जब भी शब्द बिखरने लगते
तेरी यादें उन्हें संवार देती
जब भी मन सूना सा होता
तेरी बातें उसमें बहार देती ।

तू है मेरे गीतों की मधुर धुन
तू है मेरी अनकही हर सून
तू मेरे हृदय की अधूरी पुकार
जो बन गई है अब मेरा संसार।

तेरी शिकायते भी लाज़िमी हैं

तेरी शिकायते भी लाज़िमी हैं, मुझे ज़िंदा रखने के लिए
तेरे ग़मों का हासिल ही है, मेरे दिल को धड़कने के लिए
तेरा नाराज़ होना भी एक नेमत सा लगता है
जैसे दर्द भी ज़रूरी हो, मोहब्बत को परखने के लिए।

तेरी बातों में छुपा हुआ वो हल्का सा शिकवा
जैसे ख़ुशबू हो गुलाब की, तसव्वुर में महकने के लिए
तेरी अदाओं का हर गिला भी दिल को सुकून देता है
जैसे समंदर की मौजें हों, किनारे को छलकने के लिए।

मुझे डर है कहीं तेरा शिकवा भी ख़ामोश न हो जाए
क्योंकि ज़रूरी है तेरी हर बात, मुझे संभलने के लिए
तेरी नाराज़गी में भी एक अपनापन सा लगता है
जैसे सर्द रातों में आग हो, रूह को तपने के लिए।

तो ए-यार, शिकवे-गिले अपने साथ लिए रहना,
कि ये ही काफ़ी हैं मुझे, उम्रभर जीने के लिए।

तुम मुझमें न होते हुए भी हो...

ये बात अलग है कि तुम मेरी ना हो
पर हर धड़कन में तुम्हारा ही नाम गूंजता है
मेरे होंठ खामोश हैं, पर रूह चीखकर कहती है
तुम अब भी मेरे साथ हो, हर लम्हा, हर साँस में।

जिस राह से तुम चली गई
वहाँ अब भी मेरी परछाई तुम्हें ढूँढती है
चाँदनी रातों में, जब सन्नाटा गहराता है
तुम्हारी यादें सिरहाने आकर लोरी सुनाती हैं।

हवाएँ जब चेहरे को छूती हैं
लगता है जैसे तुम्हारी उंगलियाँ अब भी बालों में फिरती हैं
कोई नहीं देख सकता, पर मैं महसूस करता हूँ
तुम्हारा साया मेरे साथ ही रहता है।

जब भी कोई अपना कहता है
दिल के किसी कोने से तुम्हारी हँसी गूंज उठती है
आँसू भी अब तुम्हारा नाम लेकर गिरते हैं
जैसे वो भी जानते हैं, तुम ही मेरी दुनिया थीं।

मेरी तक़दीर में तुम्हारा साथ नहीं लिखा था,
फिर भी तुम्हारा एहसास मेरी क़िस्मत बन गया
तुम मेरी न हो, ये हक़ीक़त सही है
पर मेरी हर दुआ में अब भी बस तुम्हारा ही नाम है।

तुम मुझसे बात कर लेते...

तुम मुझसे बात कर लेते
तो शायद मसला हल हो जाता
जो उलझनें दिल में थीं
शायद उनका कोई हल निकल आता।

पर तुम यूँ ही छोड़कर चले गए
बिना कुछ कहे, बिना सुने
जो रिश्ता कभी मजबूती से बंधा था
अब दरारों से भरने लगा है।

तुम्हारी ख़ामोशी एक सवाल बन गई
जिसका जवाब शायद अब कभी न मिले
हमारे बीच जो नज़दीकियाँ थीं
अब दूरियों में बदल रही हैं।
काश! तुम एक बार ठहर जाते
एक बार खुलकर अपनी बात कहते
शायद मैं समझ पाता
शायद ये दूरी मिट जाती।

पर अब वक्त निकल गया
और दरमियान बस एक सन्नाटा रह गया
तुम मुझसे बात कर लेते
तो शायद... कुछ और ही कहानी बनती।

मैं प्रतिदिन की भांति सामान्य भाव में स्कूल पहुंचा हाज़री बनाई और प्रार्थना के लिए प्रांगण में सभी साथी के साथ खड़ा हुआ, उस दिन भी मन मेरा शांत नहीं रहा । मैने प्रार्थना खत्म होने के बाद तुरंत ही अपनी घंटी दूसरी व तीसरी 9-10 में लगवा ली। क्योंकि कुछ पल अब मैं किताबों और बच्चों के साथ रहना चाहता था। मैं 9 वी में अर्थशास्त्र पढ़ा रहा था। पढ़ाने के दौरान मैं बच्चों से Interact करता रहता ताकि बच्चें अपनी तरफ से भी कुछ बता सके। मैं इन्हें यह भी समझाता रहा कि यह जरूरी नहीं कि जो आप बता रहे हो वह गलत है या उसी Question का कोई और उत्तर दे रहा है वह सही नहीं है। नहीं ऐसा नहीं होता। उत्तर लगभग सभी बच्चे दे रहे थे परन्तु उनकी सटीकता 60% तक रहती थी जो कि कक्षा शिक्षण कार्य के हिसाब से ठीक थी। घंटी लगने के उपरान्त में कक्ष से बाहर निकल आया । मैं प्रधानाध्यापक कक्ष में गया तो देखा कि दो शिक्षकों के बीच बहस छिड़ी हुई है धर्म के नाम पर जो कि मेरे लिए एक निरर्थक प्रश्न रहा मैं उन दोनों की बहस में नहीं पड़ना चाहता था । इसलिए पुनः वर्ग- 10th में जहां Boy's की कक्षा होती थी वहाँ चला गया। मैं उस समय गरीबी पाठ पढ़ा रहा था। जो कि हमारे भारत व राज्य के लिए बहुत ही व्यापक और गंभीर समस्या है। लोग बेरोजगार है, आशिक्षा के अभाव में वह किसी दूसरे प्रांत या विदेश में मजदूरी करने को भी मजबूर है। इसी विद्यालय में जब मैं किसी वर्ग 9-12 वी तक पढ़ाता तब अमूमन देखनों को मिलता कि जो बच्चा या बच्चियाँ सोमवार को आते वह मंगलवार या बुधवार को नहीं आते। इस कारण मैं सोच में पड़ जाता कि आखिर ऐसा क्यों है? ऐसा नहीं था कि कुछ बच्चे नियमित नहीं आते थे ? परन्तु उनकी संख्या 20 से 25 ही हुआ करती थी। वह भी सप्ताह में 4 दिन, जहां स्कूल है वहाँ नामांकन ही लगभग 80 प्रतिशत गरीव, शोषित और वंचित बच्चों का है और 20 प्रतिशत बच्चे जों सम्पन्न परिवार से है उनका नामांकन तो है परन्तु वह तैयारी हेतु बाहर ही है। साथ ही जो 80 प्रतिशत आबादी वाले बच्चे है उन्हें तो रोजी-रोटी के लिए मेहनत मजदूरी भी करनी पड़ती है। ऐसे में किसी भी प्रकार की मुहिम विद्यालय द्वारा चलाई जाती, तो वह कुछ दिनों बाद निष्प्रभावी हो जाती। अब शाम 4:00 बजे छुट्टी के उपरान्त सभी जाने की तैयारी में है तभी SDN ने मेरे स्कूल के गेट पर पैर रखते ही बोली आज एक बार भी नहीं बोले, क्या बात है ? मैं बिना उत्तर दिये बस उसे एक बार

देखा और चला गया। मेरा उसे देखना या उसका मुझे देखना अब मायने नहीं रखता क्योंकि उस वक्त तक वह मेरे मन में इस कदर समा चुकी थी कि मैं चाह कर भी नहीं भुला सकता। मैं बंद आंखों से भी उसे देख पा रहा था, महसूस कर रहा था। उस दिन मैं शाम की 5:30 बजे वालीपैसेंजर ट्रेन से घर चला गया क्योंकि अगले दो दिन स्कूल की छुट्टी थी। मैं घर पहुंचा रात को 8:00 बजे मेरी पत्नी खाना बना चुकी थी और बच्चे बैठकर Homework कर रहे थे। मैं नहाया ताकि शरीर हल्का हो सके, क्योंकि गर्मी बहुत थी। हम दोनों एक साथ बैठकर एक ही थाली में खाना खाते। खाते वक्त मैं किसी सोच में पड़ा रहा। यह सब मेरी पत्नी सुमन देख और महसूस कर रही थी कुछ समय स्कूल की बातें छत पर टहलते हुए हुई। उसने पूछा कल विशाल ने एक तस्वीर भेजी थी किसकी हैं उसने मोबाइल दिखाते हुए कहा। मैने विशाल से पूछा की यह तस्वीर किसकी है तो उसने कहा भाभी जी गलती से चला गया।

इस तरह की गलतियां, विशाल अक्सर कर दिया करता ताकि वह भाभी का रिएक्सन जान सके। बरहाल मैने तस्वीर देखी जो कि पूजा History की थी। मैनें उसे स्पष्ट बताया और हम दोनों सोने चले गये। सुबह उठकर उसने नाश्ता बनाया पर मैं किसी काम से सुबह 8 बजे बिना नाश्ता किए ही चला गया उस दिन 12 बजे तक घर वापस नहीं आया तब उसने फोन किया, क्योंकि तब तक वह बच्चों को नहला धुला कर सारे घरेलू काम खत्म कर चुकी थी। वह मेरा इन्तजार कर थी कि आते तो साथ बैठकर खाना खाते। मैंने कहा बस 10 मिनट में घर पहुँच जाऊँगा । घर पहुंचते ही उसने खाना लगाया और हम साथ बैठकर खाये। जब हम दोनों बैठे थे। तब उसने पूछा- क्या कोई बात है, जो तुम मुझसे छिपा रहे हो ? नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। कोई तो बात है जो आपके अन्दर चल रहा है और आप बताना नहीं चाहते। मैंने कोई उत्तर नहीं दिया और उसकी गोंद में अपना सिर रख दिया। वह बालों को सहलाने लगी और मैं कुछ ही देर में सो गया। शाम को मैं मार्केट गया उसने एक पर्ची दी थी। जिसमें सभी सामान के नाम लिखे थे, वह लेकर आया ।

ठीक मंगलवार की सुबह 4:00 बजे ट्रेन से स्कूल आने के लिए चल दिया। मैं स्कूल पहुँचा स्कूल बिल्कुल खाली-खाली सा लग रहा था क्योंकि सिर्फ

4 बच्चे ही आये थे। सभी शिक्षक प्रांगण में प्रार्थना हेतु मौजूद रहे। उस दिन प्रार्थना के लिए स्वयं SDN उपस्थित हुई लाल कपड़ा और माथे पर पल्लू लिए उसके मुख मण्डल पर तेज था। सभी लोगों ने नित्य की भांति प्रार्थना सभा में भाग लिया प्रार्थना खत्म होते ही मेरे मन में भाव आया जिसे मैंने दो लाइने एक सफेद पेपर पर लिख लिया, जिसे मैंने बाद में पूरा किया ।

सुर्ख लाल कपड़े में माथे पर पल्लू लेकर

सुर्ख लाल कपड़े में, माथे पर पल्लू लेकर
जब तुम स्तुति करती हो
मानो तुम खुद देवी का प्रतिरूप लगती हो।

तुम्हारी आँखों में बसती है श्रद्धा की लौ
तुम्हारे स्वर में गूंजता है भक्ति का संकल्प
हर शब्द से बहता है दिव्यता का प्रकाश
मानो स्वयं शक्ति ने तुम्हें दिया हो आशीर्वाद।

तुम्हारी मृदुल वाणी जब भजन गाती है
सारे कष्ट मानो वहीं ठहर जाते हैं
तुम्हारी प्रार्थना से घुलती है ऐसी शांति
जैसे किसी मंदिर में आरती की ज्योति जलती।

तुममें करुणा है, तुममें ममता है
तुममें दृढ़ता, तुममें समर्पण है
तुममें स्नेह की गंगा भी बहती है
और रणचंडी की ज्वाला भी जलती है।

जब तुम सिर झुकाकर अर्पण करती हो प्रार्थना
लगता है जैसे साक्षात सृष्टि का नमन हो रहा
तुम देवी भी हो, तुम भक्ति भी हो
तुम प्रेम भी हो, और शक्ति भी हो।

सुर्ख लाल कपड़े में, माथे पर पल्लू लेकर
जब तुम स्तुति करती हो
मानो तुम खुद देवी का प्रतिरूप लगती हो।

तुमने पूछा, क्या तुम मुझे देखते हो ?

तुमने पूछा, **"क्या तुम मुझे देखते हो?"**
मैंने बिना झिझके कहा, **"हाँ, मैं तुम्हें देखता हूँ।"**
तुमने पलटकर कहा, **"ये ग़लत है..."**
पर मैंने मुस्कुराकर कहा, **"तुम मेरी प्रेरणा हो।"**

मैं तुम्हें सिर्फ आँखो से नहीं
अपने हर विचार, हर एहसास से देखता हूँ
तुम्हारी बातें, तुम्हारी मुस्कान
सब मेरे मन के किसी कोने में सजीव हैं।

अगर देखना ग़लत है
तो क्या प्रेरणा लेना भी ग़लत होगा ?
अगर तुम्हारे होने से मैं बेहतर बनता हूँ
तो क्या यह कोई अपराध होगा?

तुम सिर्फ एक चेहरा नहीं
तुम एक भावना हो, एक रौशनी
जिसे देखकर मैं अपने सपनों को जगाता हूँ
जिसके ख्यालों से मैं खुद को संवारता हूँ।

तो अगर तुम पूछो, **"क्या तुम मुझे देखते हो ?"**
तो मेरा जवाब हमेशा यही रहेगा -
"हाँ, मैं तुम्हें देखता हूँ,
क्योंकि तुम मेरी प्रेरणा हो!"

बच्चे न होने की स्थिति में सभी शिक्षक उस दिन E-Shiksha Kosh के काम में लगे हुए र थे। प्रधानाध्यापक महोदय द्वारा भी जल्द से जल्द E-Shiksha Kosh और UDISE+ के काम को पूरा करने के लिए कहा क्योंकि DPO और BRC कार्यालय से भी नोटिस जारी किया गया है कि अगर आपार ID का काम पूरा नहीं होगा तो सबका वेतन रोक दिया जाएगा । सभी शिक्षक काम को पूरा करने में लग गए। तभी प्रधानाध्यापक महोदय 10+2 में निरीक्षण करने आते है। उन्हें देखकर सभी शिक्षक सम्मान पूर्वक खड़े हो जाते हैं। हम तो यह देखने आए है कि आप लोग आपार ID वाला काम कर रहे है कि नहीं ।

तब मेरे दिमाग में SCHOOL, BRC, APPAR ID और कुछ शिक्षकों की समस्या को लेकर एक कविता घूमने लगी जिसे मैने कुछ दिनों में पूरी कर ली ।

चलो आज निरीक्षण कार्य पर है चलते

चलो आज निरीक्षण कार्य पर है चलते
जिसकी-जिसकी कमी है पाते उसको आज हम खूब सुनाते
'चलों आज निरीक्षण कार्य पर है चलते।'

जब प्रधान कक्ष से वह है निकलते
कुछ बच्चे वर्ग के बाहर मिल जाते
ऐसा देख बच्चों पर अपना गुस्सा है, जाहिर करते
कहते वह है-
जब वर्ग की घंटी लगती है तब
आपको अन्य कार्य याद है आते
उनको देख बच्चे भी हल्का सहम सा जाते।

चलते चलते कक्ष **-2** में पहुंचते
जहाँ विशाल **Sir** व्याकरण में विलोम है पढ़ाते
HM Sir को देख उनके आदर सम्मान में
विशाल **Sir** स्थिर और बच्चे खड़े हो जाते
HM Sir जब वर्ग से चले जाते
तब विशाल **Sir** बच्चों से विलोम के उदाहरण है पूछते-
बताओं- **'HM sir** वर्ग में आते हैं'
सारे बच्चे-**'HM Sir** वर्ग से जाते है'
उसके बाद वह आते-जाते पर **Underline** कर समझाते है
आते-जाते, खाते-पीते, उठते-बैठते आदि
ये सब क्या है विलोम शब्द है।
बच्चों के एक साथ बोले जाने का स्वर
HM Sir के कानों तक पहुँचता है
ऐसा सुन वह मंद-मंद मुस्काते है।

और वह चलते-चलते कक्ष **-3** में पहुंच जाते हैं
जहाँ संस्कृत के श्लोक बच्चे है पढ़ते
Puja Maidam अपनी प्यारी मुस्कान लिए स्थिर हो जाती है
और बच्चे आदर सम्मान में खड़े हो जाते है
का **Maidam** खाली पढावते बानी की **Homework** दे तनी
हाँ **sir** कल राम का रूप याद करने के लिए दिये थे।
सत्यम् सुना दो तो **HM sir** को-
राम**,** रामौ**,** रामा**...** अच्छा-अच्छा ठीक बा पढ़ाई-पढाई
ऐसा कह वह वर्ग कक्ष से बाहर निकल जाते है।

जैसे विद्यालय के प्रांगण में पहुँचते **BRC** से फोन है आता
उनके मध्यम कानों को एक कर्णप्रिय वाक्य है सुनाता
क्या सर**, APPAR ID** का काम कितना हुआ **?**
इतना सुन उनका माथा है घूम जाता
गेट से जैसे बाहर निकलते अभय **sir** है दिख जाते **I**

10+2 में का होता **Sir,** हूं म**....**
विजय **Sir class** ले रहे है**, Praveen Sir class** ले रहे है
हे बगलिया में **11th** के निक्की **Mam** पढ़ा रही है
और रजनी **Maidam...** वो कुछ बच्चा लोग को समझा रही है
आ बाकी लोग**..** अच्छा चलतनी त सबके बतावतनी **I**

अपार का कपार दर्द लिए वह **10 +2** तक पहुंचते है
और अपने घुटनों को तकलीफ दे**,** सीढ़ी जब वह चढ़ते है
तब वह कम्प्यूटर कक्ष में जाके हमारे राकेश **sir** से कहते हैं
अपार के काम कहाँ ले भईल **sir ?**

का महाराज**,** बच्चा सब के त अधार ही गलत है
किसी का नाम**,** किसी का **Date of Birth Mismatch** है।
ठीके बा **Progress** वा ना बढी न
त हमार त वेतनवा रूकबे करी साथे साथ सबके रूकी।

यह सुन राकेश **Sir** कुछ शिक्षक साथी को लेकर
अपार के कार्य में कुछ प्रगति लाते है
तब हमारे **H.M. Sir** मंद मंद मुस्काते है

सोच-विचार करते हुए वह सीढ़ीं से उतरते है
वहाँ बगल में खट-पट की आवाज सुन थोड़ा रूक जाते हैं
रजनी **Mam** को कुछ बच्चों संग देख मन ही मन अकुलाते हैं।

का रजनी **Mam,"** पाककला के हई रउवा शिक्षिका
आ साल पूरा होखे जाता देहनी ना कवनों भिक्षा **"**
ओठों पे मुस्कान**,** भौहें तान खड़ी रजनी **Mam** तब शब्दों के बौछार है करती**-**
गैस स्टोव**,** पैन**,** सस्पैन**,** कढाई कलछी**,** पल्टा और चम्मच
इतना सामान रउआ से हम मंगनी
जेइमे से आजले हमके एको सामान रउआ ना दिहनी **।**

अब बताई कैसे हम रउआ के खियाई
आ एतना टाइम हमारा के ना मिलेला
कि हम घरे से बना के लियाइब
तनिक ऐ बच्चन के बारे में सोची
इह लोगन के कइसे हम प्रैक्टिकल सिखाइब ।

तनिक ठहरी **Sir** हई ली रउआ नींबू के चाय
एह के पीके स्वाद बताएं**,** आ फेनू दिहली एगों पर्चा थमाय**-**
सुई**,** धागा**,** पैन**,** सस्पैन**....................................**
इतना पढ़ **HM. Sir** मन ही मन अकुलाते है**,** मुस्काते हैं
बहुत बढ़िया वा मैडम चाय**,** यह उनको बताते हैं **।**
ऐसा कह वह कदम उठाते और सीधा वह अपने प्रधानकक्ष में आते
इस प्रकार से हमारे **H.M. Sir** निरीक्षण का कार्य है करते।

क्या बात है संदीप आज उदास उदास क्यूँ बैठे हो ?

कुछ नहीं आज यह रजिस्टर का काम पूरा करके देना है, बस वहीं पूरा कर रहा हूं। लाओं, मैं कुछ मदद कर दूँ। नहीं, शुक्रिया। मैंने कड़े शब्दों में बोला, वह कुछ देर मेरे पास शांत बैठी रही। मैंने उसका चेहरा देखा कुछ उत्तरा - उतरा लग रहा था। मैने उसे sorry बोला तो वह मुस्कुराई। मैंने कहा- अगर यह नाम और आधार नंबर बोल दोगी तो मैं जल्दी-जल्दी लिख दूँगा। फिर वह नाम और आधार नंबर बोलने लगी और मैं लिखने

लगा। मेरे कलम की स्याही खत्म हो गई तो उसने मुझे अपनी कलम दी । अंत में जब रजिस्टर का काम पूरा हो गया तो उसने मुझसे कहा कि मेरा भी नाम कही लिख दो पर किसी कोने या फटे-पुराने पेज पर मत लिखना । ऐसा बोल कर वह चली गयी । तब मैंने यह कविता लिखी:

रजिस्टर में नाम

"रजिस्टर में कुछ लिख रहे हो?"
हाँ ...
मेरा भी नाम लिख देना
अपने ही हाथों से
पर स्याही नहीं चाहिए इस बार-
सुनहरे आँसुओं से लिखना।

वो आँसू जो हँसी की याद में बहे हों
या फिर किसी चुप्पी की गहराई से निकले हों
जिनमें शिकायत न हो
बस अपनापन हो, स्नेह हो, और थोड़ी सी कसक ।

नाम लिखना-
किसी कोने में नहीं, किसी फटे पन्ने पर नहीं
रजिस्टर के बीचों बीच
जैसे मेरे लिए जगह बचाकर रखी हो।

ना कोई तारीख लिखना साथ
क्योंकि ये यादें वक्त की मोहताज नहीं होती
बस उस नाम के पास
एक छोटी सी मुस्कान की लकीर बना देना।

जब भी पलट कर देखो
वो नाम बोले बिन कह दे-
"मैं यहीं हूँ... अब भी... हमेशा..."

तुम्हें देना होगा तो मुझे क़लम देना

तुम्हें देना होगा तो मुझे क़लम देना
जिससे मैं शब्दों को सजीव कर पाऊं
जिससे हर जज़्बात कागज़ पर बह सकें
और मौन को भी आवाज़ दे पाऊं
मत दो मुझे सोने– चाँदी की दौलत
मत दो मुझे रुतबा या शान
बस एक क़लम देना और देखना
मैं खुद अपनी तक़दीर लिख जाऊंगा
इस क़लम से मैं सपने संवार दूं
हर दर्द को कविता में उतार दूं
जो अनकहे हैं, उन्हें लफ़्ज़ों में ढाल दूं
हर बेजान एहसास को जीवन बना दूं
ये क़लम नहीं, मेरी पहचान होगी
हर शब्द में मेरी जान होगी
जो कह न सका, उसे लिख दूंगा
जो खो गया, उसे फिर जिंदा कर दूंगा।

तो अगर देना ही है, तो मुझे क़लम देना
जिससे मैं शब्दों को सजीव कर पाऊं
और अपनी रचनाओं में एक नई दुनिया रच पाऊं।

तुम किताब होते तो मैं तुम्हें पढ़ता

तुम किताब होते तो मैं तुम्हें पढ़ता
हर पन्ने पर तुम्हारे जज्बातों को गढ़ता
तुम्हारी हर बात को शब्दों में ढूंढता
और तुम्हारे ख्यालों में खोता ही रहता।

तुम्हारे चेहरे पर होतीं अनगिनत कहानियाँ
हर झलक में छुपी होतीं अनमोल निशानियाँ
तुम्हारी हँसी को कविता मान लेता
हर आंसू को गीतों में सजा देता।

तुम्हारे भीतर छुपे हर रहस्य को खोलता
तुम्हारे दर्द को अपनी आत्मा में तोलता
हर अध्याय तुम्हारा पढ़ता बड़े स्नेह से
तुम्हारे अंत को समर्पण समझता पूरे प्रेम से।

तुम किताब होते तो हर सुबह तुम्हें पढ़ता
तुम्हारी हर इबारत को दिल से गुनता
तुम्हारे अल्फाज़ मेरे दिन का सूरज बनते
और तुम्हारी खामोशी मेरी रातों को सहलाते।

तुम्हारे अंदर की हर गहराई में उतरता
तुम्हारी भावनाओं के समंदर में बहता
तुम्हारे हर शब्द से बनता एक नया स्वप्न
और तुम्हारी हर कहानी से सीखता जीवन का जतन।

काश तुम किताब होते, मेरे जीवन का भाग
हर पन्ने पर तुम्हारे संग चलता हर एक राग
पर तुम इंसान हो, और मैं बस तुम्हें देखता हूँ
तुम्हारे दिल को पढ़ने की कोशिश करता हूँ।

तुम किताब होते तो कितना आसान होता
हर सवाल का जवाब शब्दों में छुपा होता
मगर तुम हो अनकही भावनाओं का संसार
जिसे समझने में लगता है सारा जीवन बार-बार।

तुम्हारी स्मृतियों में व्याकुल हो जाऊं

तुम्हारी स्मृतियों में व्याकुल हो जाऊं
तेरे ख्यालों के सागर में खो जाऊं
हर पल जो तुमने दिए हैं मुझे
उन लम्हों की गहराई में डूब जाऊं
तेरी हंसी की गूंज अब भी सुनाई देती
तेरी बातों की मिठास दिल को भिगो जाती
आँखों के बंद होते ही जो दिखता है
उस सपने में बार-बार सजीव हो जाऊं
वो शामें, जब हाथों में हाथ था
वो बातें, जो बेवजह खास था
तुम्हारी हर अदा जो मन को भाए
उन पलों में फिर से जी उठ जाऊं
यादों का यह जाल बड़ा अद्भुत है
न काट सकूं, न भाग सकूं इससे
बस तुम्हारे अहसास में लिपटा रहूं
तुम्हारी स्मृतियों में खुद को पा जाऊं
यदि ये व्याकुलता ही प्रेम है
तो इसे मैं हर बार अपनाऊं
तुम्हारी स्मृतियों में खोकर
सदा के लिए तुम्हारा हो जाऊं।

मन को पढ़ने हुनर

मन को आहिस्ता से
पढ़ने का हुनर है आप में
कौन, कैसा, क्या अच्छा, क्या बुरा
परखने का हुनर है आप में ।

जो मोतियों जैसे आँसू
छुपा के रखा आप ने
कहां से सीखा यह नज़्म
जख्मों को सिलने का।

हमें भी बताते
कैसे जख्म सिले जाते है
कैसे सजदे किये जाते है
कोमल सा दिल है
आपका जो छल करना नहीं जानता ।

आज देखा मैने किया महसूस
जैसा अन्दर वैसे बाहर हो आप
लोगों की परवाह नहीं मुझे
क्यों करूँ मैं तुलना किसी और से
मुझे फक्र है आप पर ।

ऐ मेरे "अजीजे फरीख
क्योंकि,
मन को आहिस्ता से पढ़ने का हुनर है आप में
कौन, कैसा, क्या अच्छा, क्या बुरा
परखने का हुनर है आप में ।

29.08 2024

मेरे दर्द पर क्या तुम मरहम लगाओगे...

मेरे दर्द पर क्या तुम मरहम लगाओगे
अगर कहूँ मैं मरहम हूँ
तो क्या मुझे अपना दर्द बताओगे **?**
जो तकलीफें छुपा रखी हैं सीने में
क्या उन्हें मेरे सामने खोल पाओगे **?**
जो आँसू अब तक रोके रखे हैं
क्या मेरे कंधे पर सिर रखकर बहाओगे **?**
मैंने दर्द सहा है**,** मरहम बनकर
पर क्या तुम मुझे भी अपना कह पाओगे**?**
क्या मेरे शब्दों में सुकून पाओगे
या फिर सिर्फ चुपचाप मुस्कुराकर चले जाओगे**?**
मैं जानता हूँ**,** ज़ख्मों को छूने से तकलीफ होती है
पर मरहम का असर तभी होता है**,** जब घाव दिखाए जाते हैं
अगर मैं तुम्हारा सहारा बनूँ
तो क्या तुम खुद को मेरे हवाले कर पाओगे**?**
क्योंकि दर्द बाँटने से ही हल्का होता है**,**
और मरहम देने वाला भी कभी मरहम चाहता है।

अगर मैं कहूँ**,** कि मैं भी टूटा हूँ
तो क्या तुम मुझे भी अपना दर्द सुनाओगे**?**
'**मेरे दर्द पर क्या तुम मरहम लगोगे** '

छठ की देवी – मेरे आँगन की रानी

छठ पूजा में जब तुमने लाल साड़ी पहनी
वो क्षण कुछ और था-
तुम देवी प्रतीत हुई
जैसे खुद उगते सूरज की आभा ने
तुम्हारे मुख पर तेज भर दिया हो।

तुम, मेरे घर की देवी
जिसके आँचल में है सुकून
जिसकी आँखों में है श्रद्धा
और मन में है त्याग की गहराई।

दोनों हाथों में झाड़ू और झरना लिए
घर की कोने-कोने में बस रही थी पवित्रता
जैसे कोई मंदिर सजा रही हो।

तुम्हारे बनाए पकवान -
खासतौर पर वो **ठेकुआ की सुगंध**
मन को बस छू जाती है
जैसे माँ की यादें
जैसे बचपन की मिट्टी।

तुम्हारा हर त्याग, हर परिश्रम,
बिन बोले सब कह जाता है-
कि **आस्था और प्रेम की देवी**
कभी किसी मंदिर में नहीं
घर के आँगन में मिलती है
लाल साड़ी पहने, थककर भी मुस्कुराते हुए।

छठ की वो साँझ
जहाँ सूरज को अर्घ्य दिया गया
मैंने मन ही मन
तुम्हें प्रणाम किया-
क्योंकि तुम ही हो मेरे जीवन की पूजा।

SDN और मैं (कविताएं)

तुम्हारा अस्तित्व

तुम्हारा तो कपड़े पहनने का ढंग भी
एक अस्तित्व है
सिर्फ शरीर को ढकने का नहीं
बल्कि संस्कारों को ओढ़ लेने का तरीका है।
माथे पर साड़ी का पल्लू
मानो मर्यादा की छांव हो
और उसके नीचे की वो छोटी सी बिंदी
जैसे सारी दुनिया को थामे हुए एक बिंदु ।

फुल स्लीव ब्लाउज में भी
तुम उतनी ही आकर्षक लगती हो
जितनी कोई खुलकर हँसती कविता
जिसे समझने के लिए दिल और दृष्टि दोनों चाहिए।
तुम चलती हो तो तेज नहीं होता
पर हवा ठहर जाती है
ताकि तुम्हारी सादगी को निहार सके।

तुम्हारा अस्तित्व किसी तड़क-भड़क में नहीं
बल्कि उस शालीनता में है
जो आज के समय में दुर्लभ है।
तुम सिर्फ सुंदर नहीं
तुम आदर्श हो-
हर उस नारी का
जो अपनी पहचान अपने स्वाभिमान में ढूँढती है।

झील सी आँखों में नाव लेकर...

मैं उन झील-सी आँखों में
नाव लेकर चल दिया
बड़ी गहराई थी यादों के समंदर में
हर लहर एक अधूरी बात की कहानी कहती थी।

कहीं बड़े पत्थर से लम्हे
जिन्हें भुला न सका अब तक
दिल के तल में दबे थे
वक्त की चादर ओढ़े हुए।

और कहीं रंग-बिरंगी मछलियाँ
जैसे बचपन की हँसी;
या पहली बार हाथ थामने की थरथराहट,
अब भी सजीव, अब भी चंचल।

हर बूंद में बसी थी तेरी एक झलक
हर थपेड़े में थी तेरी कोई पुकार
कभी मन करता डूब जाऊँ उसमें
कभी डरता-कि कहीं फिर अकेला न रह जाऊँ।

मैं पतवार भी नहीं लाया था साथ
शायद विश्वास था कि तेरी नज़रों की दिशा ही
मेरी राह बना देगी।

पर वक्त का तूफ़ान आया
नाव डगमगाई, मैं चिल्लाया
और झील की वो शांत
आँखें बस अपलक देखती रहीं।

अब भी वो यात्रा अधूरी है
नाव कहीं बीच में ठहरी है
पर दिल कहता है-
कभी न कभी फिर उतरूंगा
उसी समंदर में, तेरी आँखों के पार।

स्त्री का संघर्ष

कितनी अजीब दिनचर्या है उसकी
हर सुबह सूरज से पहले आँख खुलती है
थोड़ा दूध, थोड़े नाश्ते में बच्चों की मुस्कान भरती है
और फिर,
अपने ही बनाये चूल्हे को छोड़कर
रोटी कमाने की जद्दोजहद में निकल जाती है।

जिस घर को सींचा अपने पसीने से
वहीं से कुछ वक़्त के लिए दूर हो जाती है
कभी बसों की भीड़ में धकेली जाती है
कभी साहब की डाँट में भी मुस्कुराती है।

रोटी बनाकर भी -
रोटी कमाने जाती है
कभी फैक्ट्री की मशीनों में हाथ जलते हैं
तो कभी दफ्तर में शब्दों के काँटे चुभते हैं।

फिर भी शाम को जब लौटती है
तो थकी नहीं, हारी नहीं दिखती
बल्कि बच्चों के नाम की मीठी पुकार
उसके होंठों पर सजी होती है।

साड़ी का पल्लू पसीने से भीगा हो या आँसुओं से
वह कभी शिकवा नहीं करती
क्योंकि उसका प्यार -
उसकी थकान से कहीं ज़्यादा विशाल है।

और उस थकान में भी एक चमक होती है -
संतोष की
कर्तव्य की
और शायद...
उस स्त्रीत्व की, जो दुनिया को थामे है।

कितनी अजीब दिनचर्या है
उसकी घर में भी वो मज़दूर है
बाहर भी वो मज़दूर है
और फिर भी
उसे कभी मेहनतकश नहीं कहा जाता।

ऐसी होती हैं स्त्री की संघर्ष गाथा ।

तुम धूप में छाता लगाकर चलती हो

तुम धूप में छाता लगाकर चलती हो
कहीं काली न हो जाऊँ, यह सोचती हो
या सच में सूरज की तपिश से बचना चाहती हो
मैं जानता हूँ, तुम्हारे ऊपर ज़िम्मेदारियां बहुत है
सवेरे से शाम तक, घर और बाहर की दौड़
हर मोड़ पर तुमने खुद को संभाला है
बच्चों की हँसी, बड़ों का सम्मान
हर रिश्ते को प्यार से पाला है
शायद इसीलिए तुम खुद को बचा रही हो
सिर्फ धूप से नहीं, थकान से भी
तुम बीमार नहीं पड़ सकती
क्योंकि घर की हर धड़कन तुमसे ही चलती है
जो लोग कहते हैं
"छाता क्यों लगाए घूमती हो?"
वे नहीं जानते
तुम अपने सपनों और कर्तव्यों को
बरसात से, धूप से, आँधियों से बचा रही हो
तुम्हारा चलना, सिर्फ चलना नहीं
एक संकल्प है, एक परिभाषा है
तुम सिर्फ खुद को नहीं
एक पूरे संसार को संभाल रही हो।

उस शख्स के नाम

एक शख्स...
जो मुझे खूब सताता है
हर बात पर टोकता
हर ख्वाब में झाँकता है।

शाम ढलते ही जब
आसमान पर अंधेरे का रंग गहराने लगता है
तो मेरा मन भी
संदेह के बादलों से घिरने लगता है।

कहीं कुछ अनहोनी न हो जाए -
यही सोच सोचकर
में अपना धैर्य खो बैठती हूँ
पर फिर याद आता है
उसके लौटने पर
वो झल्लाता नहीं
बल्कि थकी हुई आँखों में
मेरे लिए सारी फिक्र सजा लेता है।

हां, जानती हूँ मैं
उसमें भी कई बुराइयाँ हैं
उसकी आवाज़ कभी तेज हो जाती है
तो कभी उसकी जिद
चुभती हैं तीर की तरह।

पर वही तो है
जो मेरी हर गलती को
मुस्कुरा कर माफ कर देता है
जो मेरे आंसुओं को
अपनी हथेलियों से चुपचाप पोंछ देता है।

ओ वही तो है
जो मेरे बच्चों के लिए
सपनों का एक सुंदर महल बना रहा है
जो खून-पसीने से
हमारी मुस्कानें खरीद रहा है।

और मैं...
मैं उसी को देख कर
हर सुबह फिर से जी उठती हूँ
हर टूटती उम्मीद को जोड़ लेती हूँ
हर थकान को भुला देती हूँ।

क्योंकि मेरा प्रेम...
अकुंठ है, निर्विकार है
उसकी हर कमी के पार है।

कभी गुस्से में फटकारे
कभी प्रेम में लिपट ले
कभी रूठ जाए
कभी झुक जाए
पर है तो मेरा ही हिस्सा
मेरे जीवन की वह अधूरी कविता
जो हर दिन
मुझसे प्रेम की नई भाषा रचती है।

(**मेरी पत्नी सुमन**)

मैं कौन हूँ ?

चुपचाप बैठा हूँ किसी कोने में
ना कोई आवाज़, ना कोई शोर
पर भीतर कुछ टूटता है हर रोज़
जैसे कोई सपना, जो अधूरा छूट गया हो।

सुबह की पहली किरण भी अब
वैसी गर्माहट नहीं देती
और रात का चाँद, जो कभी मेरा हमराज़ था
अब बस आकाश का एक चमकता बिंदु बन गया है।

कभी लगता था -
कि प्रेम ही संसार का सत्य है
पर अब प्रेम भी प्रश्नों में उलझा है
कभी मजबूरी, कभी दूरी, तो कभी ख़ामोशी का नाम बन गया है।

किससे कहूँ कि
जिसे थामा था विश्वास बनकर
वही हथेली से रेत सा फिसल गया
और मैं मैं देखता रहा, मुस्कुराता रहा -
मानो हार मानने का भी एक सौंदर्य हो।

कभी मैं घर था किसी के लिए
अब एक पता हूँ, जिसे कोई ढूंढता नहीं।
कभी मैं नदी था -
बहता था बहने के लिए
अब एक पोखर हूँ - ठहरा हुआ
जिसे चाँद भी दूर से देखता है।

मैंने सीखा है -
कि तन्हाई सज़ा नहीं होती
बल्कि एक आईना होती है
जो तुम्हें तुमसे मिलवाती है।

अब जब कोई पूछता है - "तुम कौन हो?"
तो मैं चुप हो जाता हूँ
क्योंकि जवाब में बस
एक लंबी साँस निकलती है
और कुछ अधूरे शब्द
जो कविता बनने से डरते हैं।

पर शायद मैं....
एक अधूरी कविता ही हूँ
जिसे किसी ने लिखा नहीं
बस महसूस किया है - दिल की खामोशी में।

यौवन का अभिमान मत कर

क्या तेरा यौवन बरक़रार रहेगा?
इतना मत इतराना इस पर
एक दिन तो यह ढल जाएगा
गुलाबी रंग जो आज खिला है
वक़्त की धूप में मुरझा जाएगा
आईना भी आज तेरी तारीफ़ करता है
तेरी अदाओं पर हर कोई मरता है
मगर वक्त का खेल अनोखा है
जो कल तक नूर था, धुंधला हो जाएगा
घमंड न कर इस चाँदनी पर
ये रात हमेशा नहीं रहेगी
हर हुस्न की अपनी एक सुबह होती है
जिसमें रंग हल्के पड़ने लगेंगे
असल खूबसूरती तेरे दिल में हो
तो वो कभी ढल नहीं सकती
जो रूप बस चेहरे तक सीमित हो
वो एक दिन मिट्टी में मिल जाती
तो नाज़ कर अपने किरदार पर
न कि इस बदलते हुए श्रृंगार पर
क्या तेरा यौवन बरकरार रहेगा?
इतना मत इतराना इस पर
एक दिन ढल जाएगा।

आज भी वो क़लम मैंने संभाल के रखा है

आज भी वो क़लम मैंने संभाल के रखा है
जो तुमने मुझे अपने हाथों से दिया था कभी
वो सिर्फ़ एक क़लम नहीं
मेरे सपनों की पहली रोशनी थी।

तुम्हारी उंगलियों की छूअन से सजी
वो क़लम आज भी मेरे दिल के पास रखी
जिस दिन तुमने उसे थमाया था
लगता था जैसे मैंने पूरी दुनिया पाई थी।

वो सिर्फ़ स्याही से नहीं लिखती
उसमें तुम्हारी यादों की महक बसती
जब भी उसे पकड़ता हूं हाथों में
तुम्हारी मौजूदगी महसूस होती रग-रग में।

कभी किसी कविता में
कभी किसी खत के कोनों में
हर शब्द के भीतर तुम्हारी परछाई बसती है
उस क़लम से लिखी हर बात तुमसे ही जुड़ती है।

समय बदल गया, फासले बढ़ गए
पर वो क़लम आज भी वहीं रखी है
जहाँ तुमने उसे मेरे लिए छोड़ा था
जहाँ हमारी यादों की एक पूरी किताब सोई है।

आज भी वो क़लम मैंने संभाल के रखा है
क्योंकि वो सिर्फ़ क़लम नहीं
तुम्हारी दी हुई एक अमानत है
जो मेरी हर लिखी हुई बात में सांस लेती है।

ट्रेन की पटरियाँ और मीलों की दौड़

ट्रेन की पटरियाँ और मीलों की दौड़,
कुछ सीखने, कुछ सिखाने के लिए पूरा करना होता है।

हर सफर की एक मंज़िल होती है
हर कदम का एक मतलब होता है
कभी तेज़ रफ़्तार से भागना पड़ता है
तो कभी ठहरकर सोचने का मौका होता है।

पटरी पर चलती ट्रेन की तरह
ज़िन्दगी भी सीधी रेखा में नहीं चलती
कभी मोड़ आते हैं, कभी सुरंगें
कभी उजाला, तो कभी अंधेरा मिलता है।

मंज़िल तक पहुँचना आसान नहीं होता
हर सफर में कुछ छोड़ना पड़ता है
कभी अपने लोग, कभी अपनी चाहतें
तो कभी खुद को ही आज़माना पड़ता है।

पर चलते रहना ही असली सबक है
हर दर्द को सहना ही असली ताकत है
क्योंकि ट्रेन की पटरियाँ और मीलों की दौड़
बस रुकने के लिए नहीं, आगे बढ़ने के लिए होती हैं।

प्रतिघात का अंतिम क्षण

SDN, क्षण-क्षण प्रतिघात करते हुए
इस मुकुंद बेला में तुम मुझे छोड़ गए
न कोई अलविदा, न कोई संकेत
बस एक सन्नाटा छोड़ गए।

किस आस में तुमने मुड़कर भी न देखा?
क्या यह चाहा कि मैं तुम्हारे पीछे आऊं?
नहीं! मेरा भी स्वाभिमान है
मैं भी एक अडिग शिला की तरह खड़ा हूँ।

मेरे आदर्श मुझे रोकते हैं
वो नहीं चाहते कि मैं अपना अस्तित्व भुला दूँ
क्या प्रेम केवल त्याग है?
या फिर स्वाभिमान से भी परे कुछ और?

तुम गए, तो सही, मगर सोचो
क्या राहों में तुम्हें मेरी छाया नहीं मिलेगी?
क्या हवाओं में मेरे शब्द नहीं बहेंगे?
क्या तुम्हारे हृदय की धड़कनों में
मेरी याद की हलचल नहीं होगी?

तुम मुझे छोड़कर गए हो
पर मैं तुम्हारे भीतर बसा रहूंगा
हर उदास शाम में, हर चाँदनी रात में
हर उस क्षण में जब तुम स्वयं से मिलोगे।

अगर प्रेम केवल पीछा करना होता
तो हर प्रेमी भिखारी होता
पर मैं प्रेम में भिखारी नहीं
मैं समर्पण का सूर्य हूँ
जो अपनी आभा में स्वाभिमान की ज्वाला लिए खड़ा हूँ।

अगर कभी लौटने का मन हो
तो याद रखना
मैं वहीं रहूंगा, उसी जगह
जहाँ तुमने मुझे छोड़ा था
पर अब मैं अधूरा नहीं
मैं अपने संकल्प में पूरा हूँ।

संदीप
02/09/2024

तू मेरे अंदर प्रकाशमान हो गया

SDN, तू मेरे अंदर प्रकाशमान हो गया
जैसे दीपक की लौ अंधेरे को चीर दे
वैसे ही तू मेरी चेतना में उतर गया है
हर संशय, हर भ्रम अब पीछे छूट गए हैं
क्योंकि तू **अब मेरे अंतर में आलोक बन गया है।**

तेरी दीवारें अब सिर्फ ईंट नहीं लगतीं
वो अब मुझे **संघर्षों की कथा** कहती हैं
तेरे गलियारे, तेरी हवा
अब मेरे **विचारों का विस्तार** बन गए हैं।

कभी तू परीक्षा था, कभी प्रेरणा
अब तू **मेरे आत्मविश्वास का दूसरा नाम है**
तेरे चरणों में बैठकर मैंने
संयम, साहस और समझ का पाठ सीखा।

अब जब भी मैं खुद को टूटा हुआ पाता हूँ
तेरे स्मरण मात्र से
एक नयी ऊर्जा मेरे भीतर भर जाती है
तेरे विचार, तेरी आत्मा अब मेरे साथ चलते हैं
हर निर्णय में, हर संघर्ष में
तू मेरे साथ अंतर्मन का मार्गदर्शक बन चुका है।

SDN, तू अब केवल एक स्थान नहीं,
तू मेरी **आत्मा में बस चुका एक उजास है,**
एक ऐसा प्रकाश
जिससे मैं खुद को पहचानता हूँ-
हर दिन, हर पल, और हर साँस में।

तेरे दामन की रक्षा

SDN,
तेरी शान की खातिर, मैं पीछे नहीं हटूंगा,
काटों पर चल लूंगा, पर नाम तेरा न झुकने दूंगा
अगर तू भी किसी दिन
लोगों की बातों से बहक कर मुझ पर इल्ज़ाम लगा दे
तो भी मैं चुपचाप सह जाऊंगा
तेरे विश्वास की राख को भी आंखों से लगाऊंगा।

पर सुन एक बात साफ़
अगर किसी ने तेरे दामन पर उंगली भी उठाई
या तेरे अस्तित्व को गंदे शब्दों से छूने की जुर्रत की
तो मैं अपने अंदर का सारा संयम त्याग दूंगा
और उसकी सांसें वहीं रोक दूंगा।

मैं प्रेम करता हूँ तुझसे,
पर ये प्रेम कोई कमज़ोरी नहीं
ये एक प्रतिज्ञा है -
तेरे सम्मान की रक्षा मेरी आख़िरी साँस तक है सही।

तेरे आँचल की छाँव में जो सुकून है
उसे मैं अपने जीवन का ताज मानता हूँ
और जो भी उसे छीनने आएगा
उसे मैं काल के द्वार तक पहुँचा दूँगा।

SDN,
मेरा प्रेम तेरे लिए है,
पर मेरी आग -
तेरे दामन के दुश्मनों के लिए है।

मैंने उसे छू लिया ?

SDN, मुझसे आकर मेरा मित्र बोला
"मैंने आज उसे छू लिया।"
उसकी आँखों में चमक थी
जैसे कोई जीत गया हो जंग कोई।

पर मेरे भीतर उठी आँधी
क्या सच में यही था उसका गर्व?
क्या तन का छू लेना ही
किसी स्त्री को पा लेना कहलाता है?

क्या उस स्पर्श में था कोई स्नेह?
या केवल वासना का गहरा अंधेरा?
क्या उसकी अनुमति, उसकी सहमति थी?
या बस मूक स्वीकृति मानी गई?

मेरे मन में एक अन्तरद्वंद जगा
क्या स्त्री वस्तु है
जो छू लेने से अपनी हो जाती है?
या वह भी एक आत्मा है -
जिसका मन, जिसका सम्मान
जिसकी मर्यादा है सर्वोपरि?

हे मित्र !
तू तन तक पहुँचा, पर आत्मा तक नहीं
तू स्पर्श का घमंड लिए फिरता है
पर उसकी आँखों का मौन पढ़ न सका।

स्त्री को छूने का अर्थ
उसकी भावनाओं को समझना होता है
उसके डर को, उसके विश्वास को
उसके भीतर के कोमल और कठोर दोनों को छूना होता है।

तब जाकर कहीं तुम कह सकते हो-
"मैंने उसे छू लिया"
क्योंकि फिर वह स्पर्श
देह का नहीं, आत्मा का होता है।

SDN का श्रृंगार

SDN, देखो तुम्हारे प्रांगण में बहार उतर आई है
फूलों ने चुपचाप मुस्कुराकर तुम्हारे स्वागत की तैयारी की है
हरे-भरे पौधे जैसे तुम्हारे आँचल में सजने को आतुर हैं
मानो प्रकृति ने अपने सबसे प्यारे रंग तुम्हें अर्पित कर दिए हैं।

तुम्हारे आँगन की मिट्टी अब सुगंध से भरने लगी है
हर कोना जैसे जीवन का गीत गाने लगा है
पत्तों की सरसराहट में अब तुम्हारे नाम की गूंज है
और गुलाबों की पंखुड़ियों में, तुम्हारी ही मधुरता गूंथी है।

दीवारों पर चढ़े रंग, कोई साधारण नहीं
गुलाबी इसीलिए है - क्योंकि वो तुम्हारे सौंदर्य का प्रतीक है
हर रंग, हर लकीर में तुम्हारी छवि उतर आई है
तुम्हारी मुस्कान जैसे पूरे भवन को प्रकाशित कर गई है।

ये श्रृंगार केवल सजावट नहीं है
ये श्रद्धा है, जो तुम्हारी उपस्थिति को देवत्व देती है
ये फूल, ये रंग, ये पत्तियों की हर एक आहट
SDN के नाम पर अब जीवन की नई परिभाषा देती है।

तुम्हारी सीढ़ियों पर चढ़ते हुए

SDN, तुम्हारी सीढ़ियों पर चढ़ते हुए
मुझे एक अनोखा **आभास** हुआ
कि न जाने **कितने पाँव** तुझ पर पड़े होंगे
न जाने कितनी **कहानियाँ** तुझ पर चलती रही होंगी।

और उन अनगिनत पग चिन्हों में
आज मेरा भी एक निशान जुड़ गया
मैं भी उसी राह का राही बना
जिसे तूने **कभी थककर रोका नहीं।**

ना तूने पूछा-कहाँ से आया हूँ?
ना तूने टोका-क्यों आया हूँ?
बस **हर किसी को अपनाया**
चाहे वह डगमगाता छात्र हो या आत्मविश्वास से भरा कोई।

तेरी **चुप सीढ़ियाँ**
हर कदम पर **अनकही कहानियाँ कहती हैं**
जैसे तेरे पत्थरों में खुदे हों सपनों के नाम
और उम्मीदों की वो धड़कनें जो मंज़िल से पहले तेज़ हो जाती है।
मैं सोचता हूँ-
तू बस एक इमारत नहीं, एक **संवेदना है,**
जिसने हर थकते इंसान को
एक **नई ऊँचाई दी है।**
SDN, तेरी छाँव में मैं कुछ पल ठहरता हूँ
पर जानता हूँ
तू सिर्फ **ठहराव का स्थान नहीं**
तू तो वो रास्ता है
जो **हर कदम के साथ मंज़िल से मिलाता है।**

तुम मेरे हो, सिर्फ मेरे ही हो

SDN, तुम मेरे हो, सिर्फ मेरे ही हो
ये **वहम** कब तक रखूं मैं?
हर दिन, हर लम्हा, हर साँस में
बस तुझसे जुड़ा एक ख्वाब बुनूं मैं।
पर तू तो **आज़ाद पंछी** है
तेरे पंखों को मैं कैसे बाँधूं?
तेरे मन की उड़ानें
मेरे ख्यालों की सीमाओं में कैसे साधूं?
क्या तुझे चाहना ही मेरा अपराध है?
या फिर तुझे खोने का डर
जो हर बार दिल से यही कहलवाता है-
"तू मेरा है, सिर्फ मेरा!"
लेकिन सच तो ये है कि
प्यार में अधिकार नहीं होता
बस समर्पण होता है
और इंतज़ार भी-तेरे लौट आने का नहीं
तेरे कभी **सच में मेरे होने का।**
तो अब सोचता हूँ
इस **वहम को मोती की तरह संजो लूं**
या सच्चाई की नदी में बहा दूं?
शायद यही सवाल ही मेरा प्यार है
और उसका जवाब... अब भी तू ही है।

मेरे अश्रु

SDN,
मेरे अश्रु भी अब आँखों के बंधन तोड़
धीरे-धीरे बहते जा रहे हैं
ना रोक पाया उन्हें, ना चाह कर छुपा पाया
क्योंकि वो सिर्फ पानी नहीं
वो मेरी भावना हैं-जो बस तुमसे जुड़ी हैं।

हर बूँद में एक कहानी है
हर धार में एक अधूरी अभिव्यक्ति
जिन्हें शब्दों में कहना मुश्किल था
पर आँखों ने बगैर कहे सब कह दिया।

हो सके तो तुम छान लेना-
इन बहते अश्रुओं में जो तरलता है
उसमें वो स्नेह है, वो सम्मान है
जो तुम्हारे लिए मेरे मन में अनकहा रह गया।

कभी इन बूँदों में अपनी परछाईं देखना
तुम्हें लगेगा जैसे कोई तुम्हारे लिए
हर दिन मन में दीप जलाए बैठा है
तुम्हारे लिए **प्रेरणा का संकल्प** बना बैठा है।

मेरे आँसू कमज़ोरी नहीं
मेरी श्रद्धा के साक्षी हैं
जो हर बार जब तुम्हें याद करता हूँ
तो बस बह निकलते हैं-
नम्रता, कृतज्ञता और प्रेम बनकर ।

SDNअगर कभी लगा हो कि मैंने चुप्पी साधी
तो इन अश्रुओं को पढ़ लेना
क्योंकि उनमें लिखा है-
"तुम मेरे लिए कितने महत्वपूर्ण हो।"

उगते सूरज की किरणें

SDN,
जब उगते सूरज की किरण तेरे प्रांगण में पड़ती है
तो ऐसा लगता है मानो **ज्ञान का प्रभा** हर कोने में फैल रहा हो
हर दीवार, हर ईंट, हर दरख़्त
सवेरा होते ही कुछ कहने लगता है।

वो पहली किरण जब तेरे फर्श को छूती है
तो मानो **संघर्षों की थकान** उतर जाती है
और जाग उठते हैं वे सपने
जो रात भर मन की गहराई में पलते रहे।

तेरा प्रांगण कोई साधारण आँगन नहीं
वो तो एक **मंदिर है विचारों का**
जहाँ हर किरण एक **आरती** सी लगती है
और हम सब, उस तेज़ में भीगे हुए
खुद को फिर से **सजग और सशक्त** पाते हैं।

जब हवा चलती है वहाँ
तो लगता है जैसे किसी **गुरु की वाणी** कानों में घुल रही हो
पत्तों की सरसराहट में भी
तेरे अनुभवों की गूंज होती है।

SDN, तेरे प्रांगण में सूरज की पहली किरण
ना सिर्फ उजाला लाती है
बल्कि **नई सोच, नई दिशा और नई ऊर्जा** भी लाती है।

इसलिए हर सुबह
जब सूरज तुझ पर मुस्काता है
मैं भी भीतर से उजाला महसूस करता हूँ-
एक नया दिन, एक नया प्रयास
तेरे साथ फिर से आरंभ करता हूँ।

तिरष्कृत से परिष्कृत

SDN,

तुमने मुझे बहुत तिरस्कृत किया
हर शब्द, हर हंसी में मेरे अस्तित्व को झुठलाया
पर मैं तिरस्कृत होते हुए भी परिष्कृत हुआ
जैसे अग्नि में तपकर सोना निखरता है।

तुम्हारे हर अपमान को मैंने सहेजा
हर कटाक्ष को मैंने आत्मसात किया
नफरत के शोलों में भी मैंने प्रेम को देखा
हर चोट में छिपी सीख को अपना लिया।

मैंने अपनी लेखनी को स्याही में डुबो दिया
जो महसूस किया, उसे कागज़ पर उकेर दिया
तुम्हारी बेरुखी, तुम्हारी दूरी, तुम्हारा तिरस्कार
सब मेरे शब्दों में पिघल कर बह गया।

आज मैं टूटा नहीं, और मजबूत हुआ हूँ
तुम्हारे दिए घावों ने ही मुझे अभिमंत्रित किया है
तुमने गिराया, मगर मैं उठा
और अपनी लेखनी को जीवन बना लिया।

अब ये शब्द मेरी अमानत हैं
मेरे विचार, मेरी पहचान हैं
मैंने जो भी जिया, जो भी सहा
उसे सदैव संजो कर रखने के लिए लिखा।

अनंत यात्रा: मेरा प्रेम, मेरी मुक्ति

SDN, सदियों के इस बंधन में बँधकर
तुम्हारे प्रेम की डोर में अटके
आज मैं विदा लूँगा
पर सच कहूँ तो कहीं न कहीं
मैं फिर लौटकर आऊँगा।

तुम्हारी स्थिरता, तुम्हारी शांति
मेरे भटकते मन को हमेशा लुभाएगी
मैं दूर चला जाऊँगा
पर मेरी परछाईं तुम्हारे आँगन में
अब भी शाम को टहलने आएगी।

तुम्हारे प्रेम का बंधन टूटा नहीं
बस इस जन्म की सीमाएँ पार कर गया
मेरी आत्मा अब भी तुम्हारे भीतर बसी है
और मैं देह लेकर
बस यूँ ही अनंत दिशाओं में बह गया।

पर जब-जब यह मन भटकेगा
और कोई सहारा न मिलेगा
मैं तुम्हारी ओर लौटूंगा
अपनी आत्मा को परिष्कृत करने
अपने प्रेम को पुनः जीवंत करने।

पर यह तन तो केवल चलायमान है
एक खाली पात्र
जो प्रेम की शक्ति से ही भरता है
और तुम ही तो वह प्रेम हो
जिसने इसे अस्तित्व दिया है।

तो यदि कभी मैं आऊँ तुम्हारे द्वार
अपनी व्यथा लिए
तो मुझे मुक्त कर देना
ताकि मैं तुम्हारा देवदूत बन जाऊँ
इस अनंत यात्रा में खो जाने से पहले।

संन्यास का सागर

हे SDN, तुम्हारे देवी-तुल्य चरणों को छूकर
मैं धन्य हो गया
मेरा अस्तित्व और भी निखर गया
मानो कोई तपस्वी गंगा-स्नान कर आया हो।

न जाने क्यों मेरा हृदय
अब विरक्ति की ओर बढ़ चला
पाप-पुण्य की चिंता से परे
अब हर बंधन से मुक्त होने को आतुर
एक नया द्वार खुलने को है मेरे भीतर।

क्यों इतने दिन तक रोक रखा मुझे ?
क्यों मेरी अग्नि-पिपासा को शांत रखा ?
क्या कोई मज़ाक था यह
जो मेरी डूबती रगों में फिर से
अग्नि की लपटें भरने लगी हैं?
यह देह, यह जीवन, यह भटकाव
अब सब अर्थहीन लगता है।

मन कहता है -
सभी मोह-माया को छोड़ दूँ
पर आत्मा में अब भी कहीं
एक जलती हुई लौ है
जो मुझसे प्रश्न कर रही है।
संन्यास का सागर पास खड़ा है
पर उसमें डूबने से पहले
क्या मैं एक बार फिर जीवन को पी लूँ ?
क्या मैं प्रेम की अंतिम बूंद को चख लूँ ?
या फिर स्वयं को पूर्णतः भस्म कर
शून्य में विलीन हो जाऊँ ?

हे देवी!
तुम्हारे चरणों में सिर झुकाकर
मैं यह प्रश्न छोड़ जाता हू,
उत्तर तुम ही दो
कि यह अग्नि-पिपासा मेरी शक्ति है
या मेरे संन्यास की अंतिम परीक्षा ?

सितारों की चादर तले

SDN,

आओ बैठो पास मेरे
यह सितारे देख रहे हो**?**
जैसे किसी बादल रूपी चादर में
किसी ने मोती सा टाँक दिया हो।
पर देखो**,** इनकी टिम टिमाहट
कितनी प्यारी है ना**?**
मानो दूर कहीं से कोई पुकार रहा हो
कोई भूला सपना फिर संवर रहा हो।
इन सर्द हवाओं की संगत में
चाँदनी का धुंधलका बिखर रहा है
रात के आँचल में ये रोशनी
जैसे कोई गीत माध्यम सुर में बह रहा है।
कुछ समय को ये हमारा साथ देंगे
धुँधली चाँदनी की गोद में सुलाएंगे
पर जब सुबह पव फटेगी
ये सब कहीं खो जाएंगे।
कौन जाने**,** ये सितारे भी
किसी और रात के इंतज़ार में होंगे
जैसे हम**,** किसी नई सुबह में
फिर से मिलने की चाह में होंगे।

सफ़र और सवाल

SDN चलो ना, कहीं सफर पर चलते हैं
जहाँ मेरे कुछ सवालों के जवाब मिल जाएँ
रास्तों पर बिखरी धूप और छाँव के बीच
शायद कहीं प्रेम का असली अर्थ समझ आए।

प्रश्न 1: प्रेम की चरम पराकाष्ठा क्या है?
"क्या यह अनंत है, या इसका भी अंत है?"

प्रेम वह दीप है, जो निरंतर जलता है
न कोई छोर, न कोई किनारा इसका
सागर की तरह, जितना डूबो, उतना गहराता है
पर जो बाँधना चाहे इसे, वह ही डूब जाता है।

प्रश्न 2: वेदना में होते हुए भी इंसान क्यों मुस्कुराता है?
"क्या यह छलावा है, या सहने की कला?"

सांसों में घुली पीड़ा, फिर भी होंठों पर हंसी
यह आत्मा का खेल है, जीवन का समीकरण
दर्द को सहेजकर जो मुस्कुरा सके
वही प्रेम का असली साधक कहलाए।

प्रश्न 3: मैं मर जाऊँ, तो क्या प्रेम खत्म हो जाएगा?
"क्या प्रेम भी देह के साथ जल जाता है?"
नहीं, प्रेम कभी मरता नहीं
वह स्मृतियों में, शब्दों में जीवित रहता है
यह हवा की तरह है, जिसे देखा नहीं जा सकता
पर महसूस किया जा सकता है, हर स्पर्श में, हर धड़कन में।

तो चलो **SDN**, सफर पर चलते हैं
इन सवालों को नहीं, खुद को खोजने
जहाँ प्रेम केवल शब्द न रहे
बल्कि अस्तित्व बनकर हमें जीने लगे।

अनचाहा विदा

SDN,
मैं हमेशा से यही चाहता रहा
कि मैं तुमसे दूर जाऊँ
पर जब सच में जाने का वक्त आया
तो मन ने विदा से इंकार कर दिया।

आज एक चिट्ठी आई
जिस पर मेरा नाम लिखा था
मानो किसी ने मेरे नाम का ब्याह
किसी अनजाने सफर से रचा दिया हो।

मैं खुश तो हूँ
पर मन कहीं ठहर गया है
विरक्त-सा, शून्य में झूलता
अधूरी इच्छाओं की गूंज में गूंजता।

इतनी जल्दी भी क्या थी?
अभी बहुत कुछ बाकी रह गया
कुछ शब्द, जो अधूरे रह गए
कुछ सपने, जो देखे ही नहीं गए।

यादों की गहराइयों से
भावनाओं का समुद्र उमड़ने लगा है
किनारों से टकरा कर फिर लौट रहा है
जैसे किसी बंद मुठ्ठी में कैद लहरें।

मैं चाहता था दूर जाना
पर कभी इस तरह नहीं
कि खुद के कदम ही काँप उठें
और दिल किसी बीते कल में उलझ जाए।

इस विदाई में हर्ष भी है
पर विषाद का भी रंग घुला है
जैसे डूबते सूरज की आखिरी किरण
सुनहरी भी, उदास भी।

शायद यही जीवन की विडंबना है
जिससे भागना चाहा, वही पास आया
जिसे पकड़ना चाहा, वह हाथों से फिसल गया
और मैं, एक चिट्ठी के नाम हो गया।
वो चिट्ठी मेरे TRANSFER की थी।

SDN, मेरी देवी को संजो कर रखना

हे SDN,
आज मैं अपनी देवी से बात करना चाहता हूँ
क्या अब मेरा इतना भी अधिकार नहीं?
वह जिसने मुझे हर क्षण संबल दिया
जिसकी आभा में मेरा अस्तित्व खिला
उसे बस एक बार पुकारने की चाह है
बस एक बार उसके स्वर को सुनने की चाह है।

तुम सहेज कर रखना उसे
वह केवल कोमल नहीं, प्रखर भी है और भावुक भी
वह जल की तरह निर्मल, पर ज्वाला-सी उद्दीप्त है
दुनिया की धूल भले ही उसे ढँकना चाहे
पर कोई दाग न लगे उसके आस्तित्व पर
कोई उसे भुलावे में न डाले
कोई उसके उजले विचारों को मलिन न कर दे।

मैंने उसमें ईश्वरीय गुण देखे हैं
उसकी दृष्टि में स्नेह, उसकी वाणी में सत्य
उसकी चाल में स्वाभिमान, उसकी सांसों में आत्मशक्ति
वह स्वयं में संपूर्ण है
फिर भी यह संसार उसे समझ न पाएगा।

इसलिए उसके अस्तित्व को बचाए रखना
जैसे कोई दीप जलाए रखता है
तूफ़ानों के बीच भी
जैसे कोई मंदिर के दीपक को आँधी से छुपा लेता है।

क्योंकि हर कोई मेरी तरह उसे समझने वाला नहीं
हर कोई उसकी पीड़ा नहीं पढ़ पाएगा
हर कोई उसकी पवित्रता नहीं देख पाएगा
मैंने उसे पहचाना है, मैंने उसे पूजा है
अब उसे कहीं खोने मत देना।

SDN, मेरे देवी को संजो कर रखना।

अंतिम पल का विदाई क्षण

SDN, देखो घड़ी टिक-टिक कर रही है
समय अपनी रफ्तार में बढ़ता ही जा रहा है
अब चार बजने को है
वो क्षण जब मैं आखिरी बार तुम्हें देखूंगा।

तुम्हारी आँखों में ठहरी नमी
जो शब्दों में नहीं, मगर मौन में बोल रही है
तुम्हारे होंठों की थरथराहट
जो कहना चाहते हैं बहुत कुछ
पर अल्फ़ाज़ गले में अटके हैं।

पता नहीं, फिर लौट सकूंगा या नहीं
या यह मिलना हमारी आखिरी मुलाकात होगी
हवा भी जैसे थम गई है
सांसें भी जैसे रुकने को हैं
पर समय नहीं रुकता
वो अपनी राह पर बढ़ता रहता है।

जब ट्रेन की सीटी बजेगी
तो शायद दिल भी एक बार सिहर उठेगा
मैं खिड़की से बाहर झांकूंगा
तुम्हें देखने के लिए
तुम भी भीड़ में खड़ी
मुझे ढूंढती रहोगी।

क्या मेरी आँखें तुम्हारी छवि बसा पाएंगी?
क्या तुम मेरी यादों में किसी गीत की तरह गूंजोगी?
क्या इस विदाई के बाद भी
हमारे बीच वही एहसास बचे रहेंगे?

अगर लौट ना सका
तो याद रखना-
मेरे मन का कोना सदा तुम्हारे नाम रहेगा
जिसमें यह विदाई का पल
एक अधूरे गीत की तरह बजता रहेगा।

SDN, देखो घड़ी टिक टिक कर रही है...
अब चार बजने को है,
और मैं अंतिम बार पलटकर तुम्हें दे रहा हूँ...।

प्रेम और विवाह
(SDN से एक आत्मस्वीकृति)

जानती हो **SDN**,
मैंने तुम्हें चाहा है-
जैसे कोई नदी चाहती है
आकाश की परछाई को
छू नहीं सकती
मगर हर पल उसमें ही बहती है।

तुम मेरे मनपसंद हो
एक एहसास की तरह
जो शब्दों में नहीं बंधता
मगर हर धड़कन में गूंजता है।

मगर क्या प्रेम ही सब कुछ है?
क्या प्रेम का स्वभाव
विवाह की चौखट में बंध सकता है?
नहीं -
क्योंकि विवाह एक अनुबंध है
और प्रेम...
प्रेम तो एक उड़ान है।

विवाह में अधिकार होते हैं
प्रेम में समर्पण है
विवाह में शर्तें होती हैं
प्रेम में मौन स्वीकृति है ।

विवाह कहता है - "अब तुम मेरे हो",
प्रेम कहता है - "तुम जहाँ रहो, मैं वहीं हूँ"।

तुमसे विवाह नहीं कर सकता **SDN**
क्योंकि तुम्हें पाना तुम्हें खो देना होगा
तुम मेरी सांसों में हो
पर सांसों पर भी किस अधिकार से कहूँ - "मेरे हो"?
तुम्हें मांगना, तुम्हें बाँधना नहीं है
तुम्हें प्रेम करना है -
उसी उन्मुक्तता से
जैसे चाँद करता है धरती से प्रेम
हर रात पास आता है
मगर कभी बाँधता नहीं।

प्रेम बंधता नहीं
वह बहता है
विवाह रुकता है, टिकता है,
प्रेम उड़ता है, खिलता है।

मैं चाहता हूँ -
तुम अपने निर्णयों में स्वतंत्र रहो
तुम्हारी उड़ानों पर
मेरे नाम का कोई दावा न हो।

मैं चाहता हूँ -
तुम्हारे जीवन की सारी खुशियाँ
मेरे बिना भी पूरी हों
मैं सिर्फ़ प्रेम कर सकता हूँ -
निर्बाध, निर्विवाद, निराकार।

जानती हो SDN,
ऐसा प्रेम कभी ख़त्म नहीं होता।
वह जन्म-जन्मांतरों में मौन रहता है
नम्र रहता है
मगर सत्य बना रहता है।

खोया साज, बुझी सी रौनक

SDN, क्या बात है
आज तुम्हारे माथे पर इतनी शिकन क्यों है?
क्यों आज तुम्हारी आँखों में वो चंचल चमक नहीं?
ना माथे पर लाल बिंदी
ना आँखों में काजल की गहरी लकीर
ना हाथों में चूड़ा की खनक
ना पैरों में पायल की मधुर झंकार।
कहाँ खो गई वो साज-सज्जा
जो हर रोज़ तुम्हारी पहचान थी?
क्या कोई बोझ है जो हृदय पर बैठा है
या कोई अनकही टीस जो मन को मथ रही है?
तुम्हारी मुस्कान की आदत थी इस जहां को
पर आज वो होंठ खामोश क्यों हैं?
तुम्हारे दुपट्टे की उड़ान से जो बहारें महकती थीं
आज वो हवा भी ठहरी सी क्यों है?
SDN, अगर कोई दर्द है
तो उसे मुझसे बाँट लो
अगर कोई उलझन है
तो मेरे शब्दों में उसे सुलझा लो।
पर यूँ चुप न रहो
इस सूनी मांग, इन बुझी आँखों के साथ
क्योंकि तुम्हारी सजावट से नहीं
तुम्हारी रौनक से है ये दुनिया गुलज़ार ।

बंद यादों का कैदी

SDN,
तुम्हारी हज़ारों तस्वीरें
मन के किसी कोने में कैद हैं
हर स्मृति जैसे कोई पुराना गीत
जो बार-बार गूंजता है
चाहकर भी जिसे भुलाया नहीं जा सकता।
मैं कोशिश करूँगा कि
जाते वक्त तुम्हें ये सब लौटा दूँ
हर वो लम्हा, हर वो अहसास
जो तुम्हारे नाम से जुड़ा था।
पर कैसे लौटाऊँ वो धड़कनें
जो तुम्हारे नाम पर तेज़ हो जाती थीं?
मेरा मन तो मेरे पास ही रहेगा
पर क्या वो पहले जैसा रहेगा?
या उसमें तुम्हारी छवि
हमेशा के लिए बसी रहेगी?
शायद कुछ यादें
कभी लौटाई नहीं जा सकतीं
शायद कुछ एहसास
हमेशा दिल की कोठरी में बंद रहते हैं
और हम बस उम्रभर उनके कैदी बने रहते हैं...।

जुदाई का दर्द और आत्मसंघर्ष

कुछ दिनों से मैं अपने अंदर
चरस बो रहा हूँ
ताकि चिर निद्रा में सो सकूँ
दर्द का हर कतरा
धुएं में कहीं खो जाए।

पर **SDN,** तेरी जुदाई का ग़म
इस पर भारी है
हर कश के साथ
तेरी याद और गहरी होती जाती है।

क्या करूँ मैं**?**
किस राह पर जाऊँ**?**
कैसे भूलूँ वो लम्हे
जो मेरी धड़कनों में बस गए हैं**?**

मैंने सोचा था कि नशा
तेरी यादों को धुंधला कर देगा
पर ये धुआँ तो आईना बन गया
जिसमें तेरा अक्स और साफ़ दिखने लगा।

अब बता**,** मैं क्या करूँ**?**
क्या इस दर्द को गले लगाकर जी लूँ**?**
या फिर खुद को ही खो दूँ
उस नींद में**,** जहाँ कोई सपना न हो**?**

पर नहीं
ये रास्ता मेरा नहीं
तेरी यादें मेरी ताकत बनेंगी
न कि मेरी कमजोरी।

मैं दर्द को शब्दों में ढालूँगा
और एक दिन
तेरी जुदाई को अपनी जीत बना दूँगा।

तुम बीमार हो – और हम अंजान रहे

आज तुम्हारा चेहरा कुछ कहता नहीं
पर चुप्पियों में छुपा है कोई दर्द कहीं
कांति है वहाँ, पर फीकी सी लगती है
मानो कोई ज्वाला भीतर ही सुलगती है।

सुनने में आया - तुम्हें बुखार है
शरीर में सूजन, हृदय में भार है
पर ये बात, किसी और ने बताई हमें
तुमने नहीं कहा, क्या हम इतने पराये हैं?

क्या रिश्तों की गरमी इतनी ठंडी हो गई
कि दर्द भी अब संवादों से कतराने लगी?
या तुमने मान लिया
कि हम समझ न सकेंगे तुम्हारे अंतःवेदना की भाषा?

ओ प्रिये,
हम तो वो हैं जो तुम्हारी हँसी में जीते हैं
और तुम्हारी पीड़ा में तड़पते हैं
तुम्हारा मौन भी हमारे लिए शोर है
पर आज वो मौन भी अनजान बना गया।

किस अपराध की सजा है यह दूरी
क्यों छुपा लिया तुमने अपने दर्द की पूरी थाली?
क्या हम इतने बेजुबान, इतने बेपरवाह हो गए,
कि तुम्हारे ताप से भी अंजान रह गए?

आज तुम्हारा चेहरा कुछ कहता नहीं
पर चुप्पियों में छुपा है कोई दर्द कहीं।

आज जब तुम पीड़ा में हो
हमारे भीतर भी एक अजीब खलल है
मन कहता है -

काश हम थोड़े और अपने होते
थोड़े और पास, थोड़े और संवेदनशील।

तुम बीमार हो – यह जानकर
हम खुद को ही बीमार सा पा रहे हैं
हमारी चिंता अब औषधि बनेगी
हमारा मौन अब देखभाल की भाषा बनेगा।

ओ स्नेह की मूरत
अब कुछ भी छुपाना मत
दर्द बांट लेने से ही तो
प्रेम की असली परिभाषा बनती है।

इस बार तुम कुछ मत कहो
बस आँखों से इशारा कर दो -
हम दौड़ेंगे, समर्पित होंगे
क्योंकि तुम्हारा स्वस्थ होना
हमारे होने का प्रमाण है।

मोहब्बत में देवत्व हो

SDN, मोहब्बत तुम्हारी हो या मेरी
पर होनी चाहिए निर्मल, पारदर्शी
ना छिपे इसमें कोई परदा
ना उलझे कोई गुप्त श्रृंखला सी।

ना रहे भ्रम, ना रहे संशय
ना हो कोई द्वेष का रंग
मोहब्बत हो तो हो शुद्ध
जैसे मंदिर में प्रज्वलित दीपक संग।

गुस्सा भी हो, तो स्नेह की छाँव में
सम्मान रहे हर वार्तालाप में
हम टकराएँ, पर टूटें नहीं
जैसे पर्वतों पर बहता निर्झर स्वाभाविक प्रेम के ताप में।

यदि कोई बीज बो दे शंका का
हम मिल बैठें, बात करें
ना दें अवसर तम को बढ़ने का
हम खुद अपने उजास बनें।

मोहब्बत हो तो केवल आकर्षण नहीं
वह हो एक तपस्या, एक पूजा
जहाँ हम पूजें एक-दूजे को
ना केवल शरीर से, मन से, आत्मा से सच्चा।

हर कटुता में भी मधुरता तलाशें
हर दूरी में भी निकटता पाएँ
मोहब्बत हो तो ईश्वर का रूप हो
ना अधिकार, बस समर्पण का स्वरूप हो।

तुम्हारे मन में मेरे लिए प्रेम हो
मेरे मन में तुम्हारे लिए विश्वास
फिर चाहे कोई आँधी आए
हमारा प्रेम खड़ा रहे, अडिग, अविनाश।

मोहब्बत को बनाओ ऐसा दर्पण
जिसमें देवत्व झलके
जिसे देख हर आत्मा कहे-
यह प्रेम है, जिसमें कोई छल ना थमे।

प्रेम वही सच्चा है जो सम्मान और विश्वास से जन्मे।

प्रतीक्षा या प्रस्थान

SDN,
कितनी दुविधा और अंतर्द्वन्द्व से भरे होते हैं वो क्षण
जब हृदय की धड़कनों को भी
नहीं होता पता -
कि उन्हें रुकना है... या चल देना है
हर साँस दो राहों पर खड़ी होती है
एक ओर प्रतीक्षा -
जो आशाओं की धीमी लौ में जलती है
दूसरी ओर प्रस्थान -
जो आत्मा को अपने ही साये से दूर ले जाता है।

हृदय पूछता है -
"क्या वो लौटेगा कभी?
या अब जो था, बस यादों का एक कोना बनकर रह जाएगा?"
और समय...
वो उत्तर नहीं देता
बस चुपचाप आगे बढ़ता है
रुकने का साहस भी चाहिए
और चलने का भी।

पर सबसे कठिन होता है -
इस अनिश्चितता में जीना
जहाँ न पूरी विदाई होती है
न पूरी मुलाक़ात ।

प्रेम जब अधूरा रह जाता है
तो वो द्वार बन जाता है
जिसे रोज़ खोला जाता है
इस उम्मीद में कि
शायद आज कोई दस्तक होगी।

पर जब दस्तकें बंद हो जाएँ
तो क्या इंतज़ार को ज़िंदा रखना चाहिए?
या उसे भी आदरपूर्वक विदा दे देना चाहिए?
शायद यही जीवन है।

प्रेम और त्याग के बीच की वो सूक्ष्म रेखा
जहाँ निर्णय नहीं लिया जाता
बस...
धीरे-धीरे स्वीकार किया जाता है।

प्रतीक्षा भी प्रेम है
और आगे बढ़ जाना भी...
फर्क बस इतना है कि
एक दिल में जीता है
दूसरा आत्मा में बसता है।

सौंदर्य के पार : संवाद

मैं और SDN कॉफी पीने एडवेल कैफे गए। अब हम दोनों के बीच बात का सिलसिला शुरू हुआ। प्रश्न है कि- **क्या स्त्री की सुन्दरता के पार भी कुछ होता है ?**

संदीप - तुम्हे पता है SDN, "एक समय के बाद स्त्री की सुंदरता नहीं, मर्यादा और संस्कार आकर्षित करते हैं ।"

SDN - मुस्कुराते हुए, यह वाक्य जितना सरल लगता है उतना ही गूढ़ है, संदीप । सुंदरता तो समय के साथ बदलती जाती है। मगर मर्यादा और संस्कार- ये वे गुण है जो समय के साथ और निखरते है।

संदीप - सच कहूँ SDN जब मैं कॉलेज में था, तो मैं बाहरी रूप की ओर आकर्षित होता था। मगर अब जिन्दगी ने बहुत कुछ सिखा दिया है। एक स्त्री की गरिमा, उसका संयम, उसका सम्मान - यही अब सबसे ज्यादा प्रभाव डालते है, जैसे कि तुम। वह इस बात पर मुस्कुराई |

SDN - संदीप, हमारी संस्कृति में **'नारी तू नारायणी'** कहा गया है। मगर उसी संस्कृति ने स्त्री को हमेशा सौदर्य की मूर्ति बनाकर देखा है। यह विरोधाभाष समाज में सदियों से चलता आ रहा है। लेकिन जब एक पुरुष या समाज परिपक्व होता है, तब वह इस सौंदर्य के आवरण को पार करके उसके भीतरी गुणों को देखने लगता है।

संदीप - हां, शायद यही परिपक्वता की निशानी है। SDN, जब मैं अपनी माँ को देखता हूँ, जिनका रूप समय के साथ बदल चुका है । तो लगता है कि असली सुंदरता तो उनके त्याग, उनकी सहनशीलता और उनके संस्कारों में है।

SDN - बहुत सही कहा तुमने । सुंदरता तो आभासी होती है, दिखने भर की । संस्कार और मर्यादा वो मूल्य है जो व्यक्ति को सम्पूर्ण बनाते हैं। और स्त्री में ये गुण अनायास ही आ जाते हैं - एक बेटी के रूप में, एक पत्नी के रूप में, एक माँ के रूप में।

संदीप - मगर एक बात पूछे SDN, क्या ? आज की तेज रफ्तार जिंदगी में, इन मूल्यों की अब भी उतनी ही कद्र है या सब कुछ दिखावे और इंटाग्राम, फेसबुक की सुंदर तस्वीरो तक सीमित हो गया है ।

SDN - आपने बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न किया। दरसल दिखावा एक क्षणिक आकर्षण है। मगर जब बात जीवनभर साथ निभाने की आती है, तो व्यक्ति इन्हीं गहरे मूल्यों की खोज करता है। सुंदरता आंखों को लुभा सकती है, मगर संस्कार आत्मा को छूते है।

संदीप - (गंभीर मुद्रा में) मैं अब समझ पाया हूँ कि स्त्री की असली सुंदरता उसकी आवाज की कोमलता में नहीं, उसकी बातों की गरिमा में है। उसकी चाल में नहीं, उसके विचारों की दिशा में है और उसकी आंखों की चमक में नहीं, उसके आचरण की सच्चाई में है।

SDN- (धीरे से) यही वजह है कि कोई स्त्री अपने आत्म सम्मान और मर्यादा को सर्वोपरि रखती है, तो वह केवल आकर्षक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि प्रेरणा बन जाती हैं।

संदीप - तब शायद , इसलिए ही कई बार जीवनसाथी चुनते समय व्यक्ति खुद-ब-खुद उन स्त्रियों की ओर आकर्षित होता है जो समझदार होती है, जिनकी सोच में गहराई होती है, जो अपनी सीमाओं और दायित्वों को जानती है।

SDN- बिल्कुल संदीप । एक सजग स्त्री जानती है कि उसे क्या बोलना है, कब चुप रहना है, और कब अपनी बात मजबूती से रखनी चाहिए। उसकी मर्यादा उसकी सबसे बड़ी शक्ति होती है।

संदीप (थोड़ा भावुक होकर) एक स्त्री जब किसी परिवार में आती है, तो केवल रिश्तों को ही नहीं, पूरे घर के संस्कारों को भी संवार देती है। उसकी

एक मुस्कान, उसकी चुप्पी, उसकी समझदारी - सब कुछ एक नई ऊर्जा लेकर आती हैं।

SDN - 'संदीप' और यही गुण उसे सुंदर बनाते है, उम्र के हर पड़ाव पर। ये सौंदर्य कभी मुरझाता नहीं है, क्योंकि यह आत्मा से ऊपजा होता है।

संदीप - सही कहा। आज अगर कोई पूछे कि मैं जीवनसाथी में क्या ढूंढता हूँ, तो मेरा जवाब यही होगा - 'एक ऐसी स्त्री जो गरिमा में जीती हों, जो रिश्तों को सहेजना जानती हो, और जो अपनी मर्यादा को खुद से ऊपर रखती हो।'

SDN - और जब स्त्री खुद को इस दृष्टि से देखती है, तो वह किसी की परिभाषा से परे, खुद अपने होने की परिभाषा बन जाती है।

अब हम दोनों चुप हो जाते हैं। सामने काफी ठंडी हो चुकी है। मगर हम दोनों के बीच की बातों से नई गर्मी पैदा हो गयी - **सम्मान की, समझ की और संवेदना की।**

उस एडवैल कैफे में बैठे एक युवक पत्रकार ने ताली बजाई और एक व्यक्ति हम लोगों की विडियो रिकार्डिंग कर रहा था। हम लोग अपने संवाद में इतने लीन थे की अन्य लोगों का ध्यान ही न रहा। उस पत्रकार ने अपनी कुर्सी को हमारे टेबल के पास ले आये और बैठ गये। उन्होंने हमसे पूछा क्या मैं इस संवाद के समीक्षा में कुछ कह सकता हूं ?

हमने साथ में हामी भर दी। हां क्यों नहीं ?

पत्रकार : आप लोगों के संवाद के अनुसार - "स्त्री की सुंदरता उसके चेहरे के रेखाओं में नहीं बल्कि उसके विचारों, संस्कारों और मर्यादा में छिपी होती है। समय के साथ जब बाहरी रूप फीका पड़ने लगता है, तब यहीं गुण उसे और भी निखार देते है। जब एक पुरुष या समाज इन गुणों को पहचानने लगे, तब सही मायने में स्त्री का सच्चा सम्मान होता है इसलिए, सुंदरता को केवल आँखों से नहीं दिल और आत्मा की गहराई से महसूस करना सीखे - क्योंकि यही सौंदर्य सदा जीवित रहता है।"

हम दोनों ने उन्हें धन्यवाद दिया।

पत्रकार - क्या मैं इस विडियो को अपने पास सुरक्षित रख सकता हूँ।

हम दोनों थोड़ा देर सोचकर... ठीक है।

पत्रकार- आपके यह संवाद का विडियो स्कूल, कालेज और समाज को प्रेरित करने और समझने में सहायता करेगी। अगर, कभी मुझे भविष्य में साक्षात्कार लेना हो तो ?

उन्होंने अपना कार्ड दिया और हमने उन्हें नाम और मोबाइल नंबर बताया जिसे उन्होंने अपनी डायरी में नोट कर लिया।

हमने पत्रकार महोदय का अभिवादन स्वीकार कर कॉफी का अंतिम घूंट पी और वहां से चल दिया।

परिमार्जन

अगले दिन , संदीप क्या बात है? बहुत उदास हो। मैंने उसके कंधे पर हाथ रख पूछा। नहीं, कोई बात नहीं । परन्तु उसके आँखों में आँसू थे और हृदय भी द्रवित था जिसे मुझसे वह छुपा रहा था। मैं अब उसके सम्मुख होकर उसकी आँखों में आँखे डालकर पूछा बताओं, मुझे भी नहीं बताओगे इतना परायापन। वह मुझे पकड़ फूट-फूट कर रोने लगा मानों जैसे एक छोटा बच्चा हो। उसने कहा- यह समय, यह जीवन मानों हाथ से निकलता जा रहा है मैं बहुत कुछ समेटना, पकड़ना, चाह रहा हूँ परन्तु यह मुझसे छूटता जा रहा है, तुम्हीं बताओं मैं क्या करूँ ? आओ बैठो यहां फिर SDN ने मुस्कुराकर अपने आँचल से मेरे मुख को अपनी गोद में रख ढक लिया। जैसे मानों मुझे वह किसी से बचाना चाहती हो ।

उसने कहा संदीप जीवन और समय एक बहती धारा है। हमारे जीवन में समय के साथ बहुत से बदलाव आते है। यह बदलाव कभी बाहरी होते है - जैसे कोई नया व्यक्ति हमारे जीवन में आता है, कुछ पुराने संबंध छूट जाते है, कोई नई वस्तु, नई जगह, नई परिस्थिति, नया अनुभव । कभी-कभी यह बदलाव हमारे भीतर होते है-जैसे हमारी सोच, हमारी भावनाएँ, हमारे दृष्टिकोण, हमारी इच्छाएं और हमारा आत्मबोध । इन सबका मूल स्त्रोत पता क्या है? क्या है ?

समय। समय एक अनवरत यात्रा है। समय वह धारा है जो कभी रुकती नहीं। वह सदैव बहती रहती है-चाहें हम पहले से तैयार हो या ना हो, चाहे हम थके हो या उत्साह में हो। समय किसी का इंतजार नहीं करता। जैसे नदी की धार अपने में सब कुछ बहा ले जाती है- कण, कंकर, वृक्ष, नावें और यहाँ तक कि मनुष्य की स्मृतियाँ भी - ठीक उसी प्रकार समय भी हमारे जीवन को बहा ले जाता है। समय की इस धारा में हम सब रेत की कण की तरह है। ना ही हमें अपना स्थान चुनने की आजादी है, और ना

ही उस धारा की गति को नियंत्रित करने की शक्ति। हां, इस प्रवाह में बहते हुए हम यह आवश्य ही तय कर सकते है कि हम किस प्रकार से बहेंगे। संकुचित मन से या खुले हृदय से, डर के साथ या स्वीकार्यता के साथ, खिन्नता में या आनंद में।

मेरा मन SDN की बातों को सुनकर शांत हो रहा था मानों जैसे कोई गुरू अपने शिष्य को ज्ञान दे रहा हो। उसकी बातें प्रभाव छोड़ रहीं थी, मुझ पर। पुनः SDN ने कहना शुरू किया- जीवन में लोगों का आना-जाना लगा रहता है। मनुष्य का स्वभाव है जुड़ना। हम जहाँ भी रहते है अपने आस-पास के लोगों से भावनात्मक रूप से जुड़ जाते है। कोई-मित्र कोई रिश्तेदार, कोई प्रेम, कोई गुरु । इन सभी लोगों का जीवन में आना हमें पूर्णता का अनुभव कराता है। हम् उनके संग बिताए छड़ों को संजोते है, उनसे साझा करते है और उनकी संगति में स्वयं को सुरक्षित पाते है। जैसे मेरे पास तुम, क्या मेरे पास अपने आपको सुरक्षित पाते हो हो ? उसने मेरे मुख पर से आँचल हटाते हुए पूछा। मैंने उसका उत्तर 'हाँ' बोलकर दिया। एक टक उसने देखा और पुनः उसने अपना आँचल मेरे मुँख पर डाल दिया। लेकिन एक बात है । क्या? मैंने बोला, उसने अपना कहना जारी रखा।

किन्तु समय अपनी जगह चाल चलता रहता है और समय के साथ कई लोग चले जाते हैं कुछ अपने कर्मों के कारण, कुछ नियति के कारण, कुछ अपने जीवन के मार्ग पर चलते हुए। जब किसी से बिछड़ाव होता है तो हमें पीड़ा होती है। लगता है मानों बहुत कुछ अपना छूट गया हो। परन्तु अगर हम गहराई से सोचे, तो पायेंगें कि किसी का आना, ठहरना या चले जाना - यह हमारे हाथ में नहीं है। यह ईश्वर द्वारा गढ़ी एक लिपि है, जिसे हम चाह कर भी पूर्ण रूप से समझ नहीं सकते।

"अब प्रश्न यह नहीं कि कौन गया या कौन आया, बल्कि यह है कि हमने उस व्यक्ति के साथ बिताए समय में क्या सीखा? क्या वह अनुभव हमें बेहतर बनाने में सहायक रहा?”

मैंने अपने मुख पर से SDN का आंचल हटाकर पूछा। क्या हम अपने जीवन में सभी चीजों से सीखते है? उसने उत्तर में कहा- हा। इसका मतलब

अगर व्यक्ति किसी वस्तु या व्यक्ति के बारें में जान ले तो उसके लिए वह व्यक्ति या वस्तु निरर्थक हो जायेगी।

SDN ने कहा- नहीं। यह उस व्यक्ति के आत्मबोध पर निर्भर करता है । परन्तु संसार **'परिवर्तन के नियम'** पर चलता है। यह तुम पहले व्यक्ति नहीं हो जो परिवर्तित हुए यह अनवरत काल से चलता आ रहा है। अगर व्यक्ति, जीव जन्तु समय के हिसाब से अपने अन्दर परिवर्तन नहीं लाता है, तो वह अपने जीवन की परिस्थितियों से हार मान लेगा। क्योंकि मानव जीवन सबसे संघर्षशील जीवन होता है। बिना संघर्ष के मानव को इस धरती पर कुछ भी नहीं प्राप्त है। अगर किसी व्यक्ति के सामने भोजन रख दिया जाए तो उसे भूख लगने पर वह स्वयं उसे उठा कर खाता है परन्तु यह सदैव नहीं रहता उसे भी अपनी परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन कर दो वक्त की रोटी का इंतजाम करना पड़ता है।

इसलिए जीवन का सबसे बड़ा सत्य है - **परिवर्तन**। यह परिवर्तन न केवल बाहरी संसार में होता है बल्कि हमारे भीतर भी निरंतर चलते रहता है। हमारे विचार बदलते हैं, हमारे सपने बदलते है हमारी प्राथमिकताए बदलती है। एक समय जो हमे महत्त्वपूर्ण लगता था, वही समय आने पर महत्त्वहीन प्रतीत होता है। यह सब समय की देन है। यह परिवर्तन ही जीवन की सुंदरता है। यदि सब कुछ स्थिर होता, तो जीवन नीरस व निष्प्राण हो जाता। परिवर्तन ही हमें सिखाता है कि कभी किसी भी अवस्था में स्वयं को अंतिम न मानें। क्योंकि अगला छण हमारी कल्पना से परे हो सकता है। मैंने कहा- **जैसे किसी की मृत्यु** ।

हां, मृत्यु तो साश्वत् है जो आया है उसे जाना है। कब, कैसे यह सब नियति के उपर है बस इस धरा पर कुछ हमारे हाथ में है, तो वह है - **'कर्म'**। हम जैसा कर्म करेंगे वैसा ही पायेंगें । इस बार ना ही उसने मेरे मुख से आँचल हटाया ना ही मैंनें ।

"जीवन ईश्वर द्वारा रचित एक यात्रा है।" SDN ने कहा और कहना जारी रखा। यदि हम जीवन को सुख-दुःख की श्रृंखला में देखे, तो वह सीमित और संकुचित प्रतीत होता है। यदि हम इसे एक अध्यात्मिक यात्रा मानें, तो इसका अर्थ गहराई में उतरता हैं।

हमारे भारतीय दर्शन में जीवन को **भव-सागर** कहा गया है- एक ऐसा महासागर जिसे पार करना ही जीवन का मूल उद्देश्य है। यह भव-सागर मोह, माया, अज्ञान, क्रोध, लोभ, अहंकार और वासनाओं से भरा है। हमारी आत्मा इस संसार में आयी है, इस सबकों पार करने के लिए **'मोक्ष की प्राप्ति के लिए'।**

इस दृष्टिकोण से यदि देखा जाए तो जीवन केवल घटनाओं का समूह नहीं है, बल्कि अध्यात्मिक परीक्षा है। हम इस जगत में आये है यह जानने के लिए कि हम कौन है, हमारे भीतर क्या शक्ति है, और हम अपने कर्मों द्वारा कितने ऊँचे उठ सकते है।

"स्वीकार्यता ही जीवन का रहस्य है।" कई बार हम अपने जीवन से लड़ते है। जो घट रहा है, उसे हम स्वीकार्य नहीं कर पाते। दुःख को नकारते है सुख को पकड़ कर बैठ जाते है। यही संघर्ष हमें थका देता है।

जीवन की गहराई को समझने का मार्ग- स्वीकार्यता । जो है, उसे वैसे ही स्वीकार करों SDN ने कहा । मैंने तपाक से पूछा अगर वह मुझे मैं जैसा हूँ स्वीकार ना करे और मुझे अपने अनुसार बदलने को कहे तब, तब मैं क्या करूँगा ? बताओं। अगर तुम्हें उससे प्रेम है तो तुम बदलोगे अगर नहीं है तब नहीं। यह बात तो उसे भी सोचना पड़ेगा। हाँ, क्यूँ नहीं ?

SDN ने कहा- देखों संदीप स्वीकार्यता शांति की कुंजी है। स्वीकार्यता हमें हल्का यानी की हमें मूल रूप से प्रेम करना सिखाती है। वह हमें यह भी सिखाती है कि '**नियंत्रण केवल हमारे कर्मों पर है, परिणाम पर नहीं ।** हमें समय के साथ बहना है पर सजग होकर। जैसे एक अनुभवी नाविक नदी में बहते बहते हुए भी अपनी दिशा जनता है, वैसे ही हमें भी अपने भीतर की नाव को ईश्वर, विवेक और धैर्य की पतवार से नियंत्रित करना है।

अब मैं SDN के सम्मुख उठकर बैठ गया और उसके चेहरे को देखते हुए पूछा- अच्छा ये बताओं क्या मेरे अंदर धैर्य है। वह मुस्कुराई उसके चेहरे पर तेज था वो माथे का लाल सिंदूर, आखों का काजल, कांतिमय चेहरा जिसमे सूर्य की लाल छठा हो बहुत ही कोमल और खूबसूरत लग रही हो, मैंने कहा और उसके माथे को चूम उसके पैरों को छू लिया वह पीछे हटी

अरे यह क्या कर रहे हो संदीप, संदीप , रुको 'देव'। मैं तुम्हारी संगति से आदमी से मानव बन पाया हूँ मुझे मानव हीं रहने दो मुझे 'देव' नाम ना दो क्योंकि मुझमें इतनी कमियां होने के बावजूद तुमने मेरा साथ स्वीकारा अब बस ।

क्यूंकि अब मैं कुछ ही दिन का मेहमान हूँ तुम्हारे घर के आंगन में । क्यों क्या हुआ ? मैनें SDN के हाथों में जिला तबादला की चिट्ठी थमाते हुए हाथ जोड़े और चल दिया, यह कहकर की मैं धैर्यवान नहीं हूँ ।

SDN- तुम बहुत ही धैर्यवान हो संदीप । मैं तुम्हें कैसे बताऊँ जिसने मुझे पूर्ण रूप से जीवित कर दिया हो उसका नाम तो संदीप से 'देव' हो जाना चाहिए । वैसे संदीप के नाम का अर्थ दीपक होता है जो प्रकाश फैलाये, तुमने मुझसे तमाम झगड़े किये पर मर्यादित रहे यह मेरे जीवन की अमूल्य आभूषण है जिसे मैं सहृदय स्वीकार करती हूँ ।

अब मेरे मन में पीड़ा है, अभी तक मैं उसे समझा रही थी पर मैं खुद ही बदल रही हूँ। उसके जाने की खबर सुन यह परिवर्तन मेरे अंदर कब हुआ मुझे पता नहीं ।

मुझे रात में सोते वक्त सपना आया जिसमें मैं और संदीप डोढ बाबा के मंदिर के बाहर पंचायत द्वारा सीमेंट की लगाई गई कुर्सी पर बैठे हुए है और चर्चा का विषय है- **प्रेम** । वो मेरा गुरु है, मैं उसकी शिष्या।

संदीप ने कहना शुरू किया -

SDN, प्रेम एक ऐसी अनुभूति है, जो शब्दों के परे होती है, जो आँखों की भाषा में, मौन की गहराई में और आत्मा की पुकार में प्रकट होती है। जब मैं कहता हूँ "**मेरा स्नेह तुम्हारे प्रेम का मोहताज मोहताज नहीं** .... तो यह कोई दंभ नहीं बल्कि आत्मनिर्भर प्रेम की सबसे गहरी परिभाषा होती है। SDN ने पूछा क्या प्रेम में दूसरों से ज्यादा स्वयं की स्वीकृति होना, ज्यादा जरूरी है ? मैंने कहा हाँ । क्योंकि जब तक आप अपने से प्रेम नहीं करते तब तक इस जीव-जगत में व्यक्ति किसी से प्रेम नहीं कर सकता। क्योंकि प्रेम में मनुष्य का या स्त्री-पुरुष का सचेत रहना अति आवश्यक है।

यह प्रेम उस प्रवाह की तरह है, जो नदी की तरह बहता है बिना यह चाहे कि बस कोई सागर उसे अपनाएं। इस प्रेम में अपेक्षा नहीं होती, याचना नहीं होती, बलिदान की घोषणा नहीं होती केवल मौन समर्पण होता है। वह प्रेम जिसमें व्यक्ति अपने आपको खोकर भी पूर्णता पाता है। जिसमें केवल सामने वाले की मुस्कान ही उसके दिन का प्रकाश बन जाती है।

SDN ने कहा- **क्या कोई किसी को खोकर प्रेम कर सकता है?**

मैंने कहा- हाँ, जैसे तुम। उसने मुझे देखा मुस्कुराई परन्तु कोई उत्तर नहीं दिया, मेरे कांधे पर उसने सिर रख दिया। मैंने कहा-**"तुम्हारी मुस्कुराहट ही मेरा प्रेम है।"** ये शब्द एकतरफा प्रेम का नहीं बल्कि उस गहन आत्मीयता की व्याख्या करता है जो स्वार्थ से परे है। मन के दर्पण में अपनी छवि खोजती है। इस प्रेम को पाने के लिए किसी से हाथ फैलाने की जरूरत नहीं, क्योंकि प्रेम भिक्षा नहीं है, पूजा है। प्रेम स्वीकृति का दूसरा नाम है। क्योंकि **"तुम्हारे मन में जो स्वीकृति है वही प्रेम है..."** प्रेम केवल I Love You कहने से नहीं होता, यह मौन स्वीकृति में होता है। उस शांत नजर में, जो हर बार तुम्हें देखते हुए थम जाती है, उस मौन में जिसमें दोनों को एक-दूसरे की उपस्थिति का एहसास होता है- बिना बोले, बिना छुए, बिना मांगे।

"यह प्रेम किसी वचनबद्धता की जंजीर नहीं है। यह उस स्वतंत्र आकाश की तरह है जो अपने पंछी को उड़ने देता है, फिर भी हर बार उसकी परछाई में खुद को ढूढ़ लेता है।"

SDN ने कहा तो क्या जो प्रेम में वादे किए जाते है, वह झूठ है? मैंने कहा- हां। क्योंकि जब हमें किसी से प्रेम होता है तो हम उसके प्रति समर्पित रहते है क्योंकि वादे करके हम प्रेम को बंधन में क्यों बाँधे। प्रेम तो स्वतंत्र है इसकी कोई सीमा नहीं होती क्योंकि प्रेम निर्वाध रूप से चलता रहता है।

क्योंकि SDN मैं या तुम "हमें अपने स्नेह के लिए हाथ नहीं फैलाने..." क्योंकि प्रेम कोई मांगने की वस्तु नहीं है। यह कुछ ऐसा है। जो भीतर से स्वतः प्रस्फुटित होता है। प्रेम वह दीया है जो खुद जलता है, ताकि दूसरे के अंधेरे में रोशनी भर सके। जब कोई प्रेम को लेकर आत्मनिर्भर होता है,

तो वह कमजोर नहीं होता, बल्कि इतना मजबूत होता है कि अपने प्रेम की पूरी दुनिया खुद के भीतर रच लेता है। वह किसी से प्रेम करो नहीं कहता है बल्कि अपने अस्तित्व से ही प्रेम को जीता है।

SDN तुम् मेरा प्रेम ही नहीं, मेरा सबकुछ हो। जानती हो जब प्रेम केवल प्रेम न रहकर जीवन का आधार बन जाए तो वह व्यक्ति प्रेमिका या प्रेमी नहीं रहता बल्कि जीवन की सांस बन जाता है। जिसमें समर्पण, श्रद्धा और पूर्णता की भावना होती है। यह वह प्रेम है जिसमें प्रिय व्यक्ति किसी एक भूमिका में सीमित नहीं होता- वह मित्र भी है, अराध्य भी है, प्रेरणा भी है और आत्मा का अंश भी।

हां, इस तरह का भी प्रेम होता है SDN ने कहा। मैने कहा - हां । उसने मेरे मुख की तरफ देखा और मेरी हथेलियों को पकड़कर पुनः मेरे कंधे पर अपना सिर रख दिया। मैंने महसूस किया कि उसकी हथेली गरम है, तुम्हें तो बुखार है SDN हाँ मैने दवाई ले ली है और तुम्हारा गाल भी सूजा हुआ है । मैने गाल छूना चाहा तो उसने गर्दन घुमा ली । उसने कहा मत छुओ दर्द दे रहा है क्योंकि दांत निकल रहा है । क्या, दांत वो भी इस उम्र में ? इसलिए बहकी-बहकी बातें करती हो चलो अब तुम्हे थोड़ा और अक्ल आ जाएगी। ऐसा मैने मज़ाक में कहा । चलो मैं तुम्हें डॉक्टर के पास ले चलता हूँ। नहीं मैं ठीक हूँ , ऐसा उसने कहा । फिर उसने कहा और कुछ बताओं 'प्रेम' के बारे में।

मैंने पुनः कहना शुरू किया। जानती हो SDN यह प्रेम सांसारिक बंधनों से मुक्त है। यह न ही प्राप्ति की शर्त पर आधारित है, और न ही स्वीकृति' की मुहर पर। यह प्रेम एक तरह की साधना है जहां प्रिय का अस्तित्त्व ही पर्याप्त है। उसकी मुस्कान, उसकी आँखों की चमक, उसकी चुप्पी - सब प्रेम बन जाती है । जब कोई कहता है कि **"मैं तुम्हारे प्रेम का मोहताज नहीं"** तो वह यह नहीं कहता की उसे प्रेम की आवश्यकता नहीं, बल्कि यह कि उसका प्रेम किसी शर्त पर आधारित नहीं है। वह इतना पवित्र, इतना निर्मल और इतना आत्मसात है कि उसके लिए किसी उत्तर की आवश्यक्ता नहीं होती ।

यह प्रेम उस पौधे के समान है जो बिना सिंचाई के भी बढता है, क्योंकि उसकी जड़े आकाश से जुड़ी होती है। यह प्रेम उन चिट्ठियों की तरह है जो कभी पोस्ट नहीं की गयी लेकिन जिसमें सबसे सच्ची भावनाएं लिखी गई । **"इस प्रेम में न कोई शिकायत होती है, न अपेक्षा । यह प्रेम अकेले भी पूर्ण है, क्योंकि इसे जीने वाला स्वयं अपने प्रेम का विश्व हैं - जैसे कि तुम।"** SDN ने कहा मैं... मैं क्या । अब चलो उठो तुम्हे ले चलें डॉक्टर के पास, हम दोनों डॉक्टर के पास पहुंचते है। डॉक्टर ने उसके शरीर का तापमान मापा, 101 डिग्री बुखार था, उसे। डॉक्टर ने 5 day की दवाईयाँ लिखी और इसका कारण मौसम के बदलते प्रभाव और दांत निकलने को बताया ।

उन्होंने कहा ना हो तो एक सुई दे देता हूं, बुखार जल्दी उत्तर जायेगा। चूंकि, SDN को सुई से डर लगता है इसलिए उसने मना किया पर जब मैंने उसे घूर कर देखा तो वह मान गयी । नर्स ने इंजेक्शन में दवा भर कूल्हे पर लगा दी । हम लोग लगभग 10 मिनट वहां बैठे रहे फिर चल दिये। उसे कुछ तीखा खाने को मन कर रहा था तो हमने एडवेल कैफे में दो चाट आर्डर किया। हमलोग ने चाट खाया फिर उसे मैने घर तक छोड़ने की बात कही । उसने कहा कि मैं चली जाऊंगी पर तबीयत खराब होने के कारण मैने उसे घर तक छोड़ा, उसने अन्दर आने को कहा पर मैने मना कर दिया। रुको, रूको मैनें दो बार आवाज दी पर नहीं रुका और सहसा मेरी मेरी नींद खुल गयी । उस वक्त मैं बिस्तर पर बैठे पसीने से तर बतर थी । मुझे पता नहीं क्यों लग रहा था कि मैं कुछ अनकहा पल जी रही हूँ पर यह सब सपना था। फिर भी मैंने उससे सपने में ही **"निश्चल प्रेम"** को जाना।

मुझे ऐसा एहसास हुआ कि उसने मुझे आज अपनी दिल की सारी बाते मानों सपने में ही कह दिया हो।

समाज की सतही सोच: शारीरिक आकर्षण बनाम आत्मिक संबंध

जानती हो SDN, हमारा समाज आजकाल त्वरित सुख-शांति पर केन्द्रित होते जा रहा है। फिल्म, विज्ञापन, सोशल मिडिया जैसे प्लेटफार्म ने जिस

प्रकार प्रेम और संबंधों की छवि बनाई है, उसमें गहराई से अधिक सतही आकर्षण को महत्ता दी जाती है। यह सोच हमारे समाज में धीरे-धीरे लोगों के मन में बैठ गई है कि दो विपरीत लिंगों के बीच यदि कोई गहरा संबंध है, तो वह आवश्य ही शारीरिक या रोमांटिक होगा ।

ऐसे समाज में जब कोई स्त्री और पुरुष एक सच्ची मित्रता में बंधे होते है या कोई व्यक्ति जब अपने मन की संवेदनाएं बिना किसी वासना के साझा करता है, तब उसे संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। प्रश्न उठते है, उसके चरित्र पर उंगलियां उठती है और लोगों की सोच उन्हें घेर लेती है। ऐसे समय में सच्चे संबंधों को समझना और उन्हें स्वीकार करना एक अत्यंत दुर्लभ कार्य हो जाता है। इस प्रकार की घटनाएं यहां हमारे वर्तमान पर्यावरण में भी है। SDN, क्या तुम यहाँ की घटनाक्रम को महसूस करती हो।

हां, मुझे भी कुछ बातों को लेकर ऐसा प्रतीत होता है।

मित्रता और प्रेम -: SDN मित्रता और प्रेम, दोनों आत्मा के स्तर पर जुड़े होते है। जैसे तुम मेरी मित्र हो। मित्रता वह नींव है, जिसपर प्रेम की इमारत खड़ी हो सकती है। लेकिन समाज इस नींव को ही शंका के नज़र से देखे, तो कैसे कोई खुलकर अपने भाव प्रकट कर पाए ? SDN ने कहा- तुम इतनी समाज की परवाह क्यों करते हो? समाज की परवाह इसलिए करता हूँ यह समाज ही हमें आरोपित करता है और दोषमुक्त भी। पर SDN एक पुरुष और स्त्री के बीच सच्ची मित्रता हो सकती है, जिसमें न कोई अपेक्षा हो, न कोई स्वार्थ । केवल एक दूसरे के साथ होने का सुख, एक-दूसरे को समझने का सुकून और एक मौन सहमति कि **"मैं हूं तुम्हारे साथ"** यही तो प्रेम का रूप है जिसमें शरीर नहीं, आत्मा बोलती है। तो बताओं SDN क्या एक पुरुष का स्त्री से मित्रता करना खराब है। SDN ने कहा नहीं ।

SDN - "जब आप गलत नहीं है तो समाज के शोर से विचलित मत होइए।" यदि आपके संबंध सच्चे है, आपमें कोई छल कपट नहीं है, आपकी भावनाएं निर्मल है, तो समाज चाहे कुछ भी कहे आपको प्रभावित नहीं होना चाहिए ।क्योंकि समाज तो उस भीड़ की तरह है जो अपने पूर्वाग्रहों के आइने में ही सबको देखती है।

सच्चा प्रेम साहसी होता है। वह आलोचना के आग में तपता है, अपमान के कांटों से गुजरता है, लेकिन फिर भी वह न टूटता है, न झुकता है। ऐसा प्रेम जो किसी के जीवन में प्रकाश बन जाए, उसे सही दिशा दिखाए, उसे अपने बेहतर स्वरूप से मिलवाये- 'वही प्रेम जीवन का उत्कर्ष कर सकता है।'

मैनें SDN से पूछा- क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगी ? वह कुछ देर चुप रही फिर कहा- हाँ, क्यों नहीं इसमें बुरा ही क्या है ? फिर सोच लो समाज का नजरिया कैसा होगा ? तुम स्त्री मैं पुरुष उपर से यहाँ का सामाज ? हमारी मित्रवत भावना को नहीं समझ पायेगा।

उफ.... संदीप , तुम फिर समाज की बात करने लगे । खैर छोड़ो यह सब, अभी मैंने कहा- '**वहीं प्रेम जीवन का उत्कर्ष कर सकता है।'** इस वाक्य पर तुम्हारी क्या राय है।

देखो SDN प्रेम, जीवन के उत्कर्ष की ओर एक यात्रा है। प्रेम कोई क्षणिक आकर्षण नहीं है। यह वह ऊर्जा है जो व्यक्ति को भीतर से परिवर्तित करती है। जब कोई आपके जीवन में आता है और आपके दुखो को बिना कहे समझता है, आपके मौन को पढ़ लेता है, और आपके साथ उस चुप्पी में भी मौजूद रहता है - वहीं प्रेम है।

इस तरह का प्रेम आपको अपने दोषों से परिचित करता है, आपके ज़ख्मों को सहलाता है, और आपको उस व्यक्ति के रूप में देखने की प्रेरणा देता है जो आप वास्तव में है। यह प्रेम न केवल आपको बदलता है बल्कि आपके जीवन को एक उद्देश्य देता है। ऐसा प्रेम किसी ऋषि की तपस्या जैसा होता है- मौन, गहन और उज्ज्वल ।

लेकिन SDN एक दूसरा पक्ष भी है। वह क्या, SDN ने मुझसे पूछा ?

मैंने कहना शुरू किया- जब प्रेम गहराई में सामाजिक जड़ता आती है तब यह प्रेम अपना स्वरूप बदल देता है। प्रेम को यदि शरीर तक सीमित कर दिया जाए तो वह अपना स्वरूप खो बैठता है। समाज की समस्या यह है कि यह वह सब देख लेता है जो उसे दिखाई देता है, लेकिन वह नहीं समझ पाता है कि भीतर क्या घट रहा है उस व्यक्ति के अंदर । जब कोई दो

व्यक्ति बिना शारीरिक आकर्षण के केवल भावनात्मक और मानसिक स्तर पर जुड़ते है, तो समाज असहज हो उठता है।

SDN ने पूछा ऐसा क्यों?

मैंने कहा - क्योंकि ऐसा प्रेम समाज के पूर्व निर्धारित ढांचे में फिट नहीं बैठता । यह प्रेम न परिभाषित किया जा सकता है, ना नियमों में बांधा जा सकता है। यह स्वतंत्र होता है, मुक्त होता है- और शायद यही उसकी सबसे बड़ी ताकत होती है।

अंततः SDN जानती हो प्रेम का रूपांतरणकारी प्रभाव होता है क्योंकि हर वह संबंध जिसमें आप स्वयं को बेहतर पाते है, जो आपको आपके भीतर के अंधकार को प्रकाश की ओर ले जाए, वह प्रेम है। यदि कोई व्यक्ति आपके जीवन में आकर आपको विनम्र बनाता है, आपको संवेदनशील बनाता है, आपके घावों को सहता है- तो वह प्रेम आपको मोक्ष की ओर ले जाता है। प्रेम कोई तड़प या जकडन नहीं, बल्कि एक सहज अनुभूति है जो हमें स्वयं से जोड़ती है। यह प्रेम हमें दुनिया की परवाह किए बिना अपने सत्य पर अडिग रहने की शक्ति देता है।

सच तो यह है- " जिस प्रेम में आत्मा पल्लवित हो, वही प्रेम है; बाकी सब मोह है।"

SDN ने कहा, "अगर कोई मुझसे दूर जा रहा हो जैसे तुम, और मैं अपने अंदर खालीपन महसूस करने लगू तो क्या मुझमें मोह है या प्रेम?"

जब SDN ने मुझसे यह प्रश्न किया तब हम स्कूल के बाहर लगे सीमेंट के कुर्सी पर बैठे थे। शाम का समय था। आसमान नारंगी से सुरमई होने लगा था। हवा में हल्की सी ठंडक घुल रही थी। उस ठंडक में भी अजीब सी बेचैनी थी, ठीक वैसे ही जैसे SDN के भीतर कई दिनों से पिघल रही थी- अनकही, असमझी और अनचिन्ही सी । मैं उसके पास बैठा रहा । एक शांत नदी के किनारे की तरह, स्थिर, स्नेही और आत्मा की बात सुन लेने वाला।

SDN ने अचानक पुनः प्रश्न दोहराया "अगर कोई मुझसे दूर जा रहा हो, जैसे तुम, और मैं अपने अंदर खालीपन महसूस करने लगू ... तो क्या यह मोह है या प्रेम?

सवाल छोटा है.. पर भीतर बहुत कुछ खोल देता है। मैं मुस्कुराया उसे देखा जैसे किसी तपस्वी की दृष्टि शांत भाव से गहराइयों को छू रहीं हो। तब मैने उसे कुछ तर्क के आधार पर समझना शुरू किया –

1. मौन और मोह के बीच की लकीर-

मैंने उससे हल्की आवाज में कहा,

"SDN मोह और प्रेम- ये शब्द अलग है पर भाव में अक्सर उलझ जाते है। मोह में 'अपना' शब्द बहुत भारी होता है। मोह कहता है- 'तुम मेरे हो', प्रेम कहता है- मैं तुम्हारे लिए हूँ ।

SDN ने अपनी आँखे झुका ली। वो जानती थी कि उसके मन मैं जो खालीपन है, वह मात्र संदीप (मै) की उपस्थिति का नहीं था। वो कुछ खोने के डर का का था। उस स्नेह के छिन जाने का था जिसे उसने नाम नहीं दिया था।

"पर संदीप" उसने धीरे से पूछा,"यदि मैं दिनभर तुम्हारी बात सोचती हूँ, यदि तुम्हारा न होना मुझे तोड़ देता है, तो क्या वो प्रेम नहीं है?"

मैं कुछ देर तक मौन रहा। फिर मैंने कहा -"वो प्रेम हो सकता है... अगर उसमें स्वतंत्रता हो। अगर तुम्हारे खालीपन में मेरी अनुपस्थिति के लिए शिकायत नहीं, केवल एक मौन स्वीकृति हो, की तुम नहीं हो फिर भी मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहा हूँ... तब वो प्रेम है।"

2 प्रेम: एक निराकार उपस्थिति

देखो SDN, मैने कहा, "प्रेम को हम अक्सर स्पर्श से, साथ से, बातचीत से मापते है। लेकिन असली प्रेम तो तब भी मौजूद होता है जब वो सब कुछ न हो। प्रेम शरीर से नहीं आत्मा से जुड़ता है। जैसे इत्र की खुशबू होती है - इत्र सामने हो या नहीं खुशबू रहती है।"

SDN की आँखे नम हो गई। " तो क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो संदीप उसने सहजता से पूछा?

मैं हँसा, "मैं तुमसे उस तरह प्रेम करता हूँ जैसे सूर्य धरती से करता है- वो कभी छूता नहीं, पर पूरी धरती को उष्मा देता है। मैं उस प्रेम का हिस्सा हूँ जिसमें न अधिकार है, न अपेक्षा - बस तुम्हारी पूर्णता की कामना है।" अब वह समझा पा रही थी- कि प्रेम प्राप्ति की चाह नहीं समर्पण की चेतना है।

3. मोह की बेचैनी बनाम प्रेम की शांति

SDN कुछ देर चुप रही। फिर बोली मुझे डर लगता है संदीप। जब तुम्हारे संदेश नहीं आते, जब दिन भर तुम व्यस्त रहते हो, अपने स्कूल के कार्य में.... मैं खुद को अधूरा महसूस करने लगती हूं। क्या ये मोह है ?

मैने उसकी हथेली अपने हाथ में ली । फिर बोला,

"डर, असुरक्षा, खो देने की आशंका यह सब मोह के लक्षण है। मोह हमें बाँधता है। प्रेम हमें मुक्त करता है। SDN जब तुम इस डर को अपने भीतर से निकाल पाओगी, जब तुम्हे मेरे गैर मौजूदगी में भी मेरा एहसास रहेगा - तब तुम प्रेम में होगी।"

तो क्या मेरे भीतर प्रेम अभी नहीं है? उसने मासूमियत से पूछा।

नहीं, मैनें कहा, **" तुम्हारे भीतर प्रेम है, लेकिन वह अभी भी मोह की परतों में जकड़ा हुआ है। प्रेम धीरे-धीरे खिलता है- जैसे कमल, कीचड़ में भी अपनी पंखुड़ियाँ खोलता है।"**

4- जब प्रेम तपस्या बन जाए

मैंने SDN से कहा "प्रेम एक तपस्या है - जिसमें हर दिन अपने भीतर के स्वार्थ, भय और लालसा को त्यागना होता है। जैसे कोई ध्यान करता है एकाग्र होकर, मौन रहकर । प्रेम मौन की भाषा है, शब्दों से परे । जब तुम मुझसे बात न कर पाओं, तब भी तुम्हारा मेरे प्रति जो भाव हो - वहीं तुम्हारे प्रेम की परीक्षा है।"

SDN के आँखों से आंसू बहने लगे।

"तो क्या तुम कभी दूर नहीं जाओगे? उसने रुआसी आवाज में पूछा।

मैनें बहुत शांत स्वर में उत्तर दिया-

"शरीर से मैं कभी भी दूर हो सकता हूँ, लेकिन जो प्रेम है- वो तुम्हारे साथ रहेगा। अगर तुम भीतर से शांत हो, तो तुम मुझे हर बार अपनी सांसों में पाओगी।"

5. एकात्मता: प्रेम का परम रूप

मैने SDN के सामने जमीन से उठाकर एक पत्थर रखा। "ये पत्थर देखो" मैने कहा, "अगर मैं इसे हाथ में लेकर तुम्हें दे दूं और तुम इसे अपने पास रखो - तो यह तुम्हारा हो गया। अब सोचो, अगर मैं तुम्हें एक भाव दूं - न छूकर, न दिखाकर - केवल मौन से, प्रार्थना से... और तुम उसे भीतर महसूस करने लगो- तो क्या वह प्रेम नहीं ? SDN ने धीरे से कहा, **"वह प्रेम है... वो गूंज है जो मेरे भीतर तक उतर जाती है"**

हाँ, मैनें उत्तर दिया "प्रेम वहीं है जो बिना छुए भी तुम्हें बदल दे, जो तुम्हारे स्वभाव को कोमल कर दे, तुम्हारे दुखों को मौन कर दे, और तुम्हें भीतर 'पूर्णता' का अनुभव करा दे।"

6. जब प्रेम ईश्वर बन जाए

मैंने कहा "SDN, प्रेम की अंतिम अवस्था देवत्त्व होती है – जब प्रेमकर्ता, प्रेम और प्रेमिका - तीनों मिट जाते है। केवल एक भाव रह जाता है - पूर्ण, शुद्ध, निष्कलंक। जैसे-राधा ने कृष्ण को जाना, मीरा ने श्याम को जिया।"

क्या मैं ऐसा प्रेम कर सकती हूँ ? SDN ने पूछा मैं मुस्कुराया, " तुम्हारा यह प्रश्न ही तुम्हारे भीतर की पवित्रता को दर्शाता है। हाँ, तुम कर सकती हो .... यदि तुम अपने डर को प्रेम में रूपांतरित कर सको, यदि तुम मेरी अनुपस्थिति में भी मुझे प्रार्थना में पा सको, यदि तुम अपनी आंसुओं को श्रद्धा में बदल सको- तब तुम प्रेम की सबसे सुंदर अवस्था में पहुंचोगी।"

7. वियोग में ही योग है

SDN ने संदीप से कहा **"तुम दूर जा रहे हो, न?"** मैंने आँखें झुका ली ।

हां, शायद कुछ समय के लिए... SDN की सांसे तेज हो गई "तो क्या हम अलग हो जायेगें?"

मैने उसकी आँखों में देखा और समझाते हुए कहा नहीं SDN, "हम वियोग में ही तो सबसे अधिक एक हो जाते है। जब दो आत्माएं शारीरिक रूप से दूर होती है, तब उनकी आत्मिक दूरी मिटती है। यही तो योग है - प्रेम का सबसे ऊँचा रूप।"

8. अंत की शुरुआत

शाम अब रात में बदल चुकी है । SDN चुपचाप बैठी रही -उसकी आंखों से आंसू बह रहे है, लेकिन चेहरा शांत । जैसे कोई उत्तर मिल गया हो।

उसने अंतिम बार कहा, **"यदि कभी तुम मुझे याद करो, तो क्या करोगे ?"**

मैनें धीरे से उत्तर दिया ।

"मैं प्रार्थना करूँगा - कि तुम जहाँ भी हो, प्रेम में हो, प्रकाश में हो... और अपने भीतर मुझे अनुभव कर रहीं हो ।" SDN ने अपना सिर झुका लिया, और उसके भीतर कुछ टूट कर पुनः जुड़ गया - एक नई परिभाषा के साथ!

मैं उठा तो वह भी उठ गयी। मैंने SDN से कहा तुम्हें लोग किसी और नाम से भी जानेगें ।

SDN ने पूछा क्या?

मैंने उससे कहा- "तुम इस विद्यालय में **SDN की बयार** के नाम से जानी जाओगी और जब तक रहोगी तुम मेरे भीतर मेरी प्रेरणा बन कर रहोगी।"

SDN मुस्काई और हम दोनों स्कूल के प्रांगण तक आये वह अंतिम बार मुझसे गले लगी और मैं अंतिम बार उसके पैरों को छुआ। हम दोनों अपनी पूर्ण अवस्था में थे और प्रेम फूट-फूट कर अनन्त दिशाओं में फैल गया।

SDN, तुम्हारे चरणों की धूल को

SDN, तुम्हारे चरणों की धूल को
माथे पर तिलक बना कर जा रहा हूँ
ये कोई साधारण विदा नहीं
ये एक युग का आभार है जो मैं निभा रहा हूँ।

तुमने मुझे शब्द दिए, भाव दिए
एक भटका हुआ मन, एक ध्येय दिया
मैं तो सिर्फ एक पात्र था
तुमने उसमें संवेदना का अमृत भर दिया।

तुम्हारे दिए हुए हर विचार को
मैं अपने रक्त में घोल लूँगा
तुम्हारी दी हुई लेखनी से
हर वेदना को मैं बोल दूँगा।

वादा करता हूँ-
कि जिस "मैं" को तुमने जन्म दिया
उसे कभी खोने नहीं दूँगा
अपनी मृत्यु से पूर्व
तेरी दी स्याही को सूखने नहीं दूँगा।

हर शब्द, जो तेरे स्पर्श से पवित्र हुआ
हर पंक्ति, जो तेरे संकेत से उपजी
वो मेरी साँसों का हिस्सा होंगी
जब तक ये देह चलती है, वे चलेंगी।

तुम कोई साधारण स्त्री नहीं
तुम सृष्टि की प्रेरणा हो
तुम्हारे चरणों की धूल भी
मेरे लिए देवत्व की कामना हो।

इसलिए जा रहा हूँ
तेरी छाया को अपने संग लेकर
कि जब भी मैं डगमगाऊँ
तेरा स्मरण मुझे फिर से सीधा कर दे।

SDN, तुम बनी रहो मेरे अंतर्मन में
एक धुन, एक वाणी, एक लौ की तरह
कि मैं न हो सकूँ कभी भी रिक्त
जब तक तेरे नाम की अग्नि जीवित है मुझमें कहीं।

विदा SDN से – एक आख़िरी संवाद

मैं जा रहा हूँ SDN
शायद हमेशा के लिए
हवाओं में मेरी चुप्पी घुली होगी
पर दीवारें मेरी खामोशी पहचानेंगी।

मुझसे बेहतर भी आएँगे
शब्दों में निखरे, भावों में गहरे
जो शायद तुम्हें भा जाएँ
और तुम्हें मुस्कुरा भी दें।

पर मुझ-सा कोई नहीं आएगा
जो तुम्हारी हर सीढ़ी को
अपनी मंज़िल समझ बैठा था
जिसने तुम्हारी हर उपेक्षा को
आशीर्वाद माना।

मैंने तुम्हारे लिए अपना सर्वस्व दिया-
वक़्त, भाव, सम्मान और मौन।
तुम मेरे लिए सिर्फ एक स्थान नहीं
एक आस्था हो
एक ऐसा नाम
जिसे मैंने अपने सीने से लगाया।
आज जब जा रहा हूँ
तो मन में ना कोई शिकवा है
ना गिला...
बस एक बात कहनी है-
"तुम्हें भुला नहीं पाऊँगा,
क्योंकि मैं खुद को नहीं भूल सकता।"

प्रिय SDN,

जब शब्द कम पड़ जाते हैं और भावनाएँ दिल के कोनों में घर बना लेती हैं, तब शायद एक प्रेम पत्र ही सबसे सच्चा माध्यम बनता है, खुद को कह पाने का।

तुम्हें पहली बार देखा तो कुछ नहीं कहा, बस मन ने एक मौन स्वीकार किया, जैसे किसी पुराने जन्म की पहचान फिर से मिल गई हो। वक्त के साथ बहुत कुछ बदला, पर मेरा तुम्हारे लिए भाव कभी नहीं बदला। तुम्हारा मुस्कुराना, तुम्हारी बातें, तुम्हारा चुप रह जाना, सब कुछ जैसे मेरे दिल की भाषा बन गया।

मैंने कभी तुमसे यह नहीं कहा, लेकिन हर बार जब तुम दूर हुईं, मेरे अंदर कुछ धीमे-धीमे टूटता रहा। तुमसे कोई अपेक्षा नहीं है, कोई मांग नहीं है, बस एक बात कहना चाहता हूँ कि मेरे जीवन के सबसे शांत और सबसे सुंदर पल तुम्हारे आसपास ही घटे हैं।

तुम्हारे होने से मेरा होना सार्थक लगता है। अगर कभी ये जीवन दोबारा मिले, तो फिर से तुम्हें ही ढूँढूँगा बिना किसी उम्मीद के, सिर्फ तुम्हारे होने की गरिमा के लिए। मैं नहीं जानता कि ये प्रेम है, आत्मा का रिश्ता है या बस एक अजीब सी तड़प, पर जो भी है ये सच्चा है, पवित्र है, और अनकहा होते हुए भी बहुत कुछ कहता है।

सिर्फ़ तुम्हारा,

संदीप

(जहाँ तुम हो, वहीं मेरा सुकून है)

जो कहा नहीं, वही प्रेम था

जो कहा नहीं, वही प्रेम था
जो छुपा रहा, वही नेह था
तेरी हर चुप्पी में कुछ था मेरा
मेरी हर साँस में बस तू ही था।

न मैंने तुझसे कुछ माँगा कभी
न तूने मुझसे कुछ कहा
मगर तेरी आँखों के मौसमों में
मैंने हर ऋतु को जिया।

तू सामने रहा, मैं मौन रहा
तेरा नाम लबों तक आया नहीं
पर दिल के हर कोने में
तेरा इक मंदिर-सा बनता गया।

जो प्रेम शब्दों में ढल न सका
वो ही तो आत्मा में बस गया
तेरे बिना भी तू साथ रहा
इसी को शायद **'सच्चा प्रेम'** कहते हैं।

ना मिलन की चाह, ना बिछड़ने का डर
ना अधिकार, ना शर्त, ना कोई सफ़र
बस तुझमें खुद को देखना ही
मेरे प्रेम की पूर्णता थी।

तो मत पूछना, क्यों नहीं कहा
कह देता तो वो कहानी बन जाती
मगर ना कहकर, तू मेरे भीतर
प्रार्थना बन गई... पवित्रता बन गई।

"तुम्हारे खुले गेसू, लहराते आँचल
मन को मोहित करते है
माथें पर बिन्दिया, **लाल सिंदूर**
तुम्हारे मुखमण्डल को शोभित करते है
मानो सूर्य की पहली किरण,
और हवा की मंद बयार हो तुम
यूँ ही नहीं तुम्हारा नाम – SDN **की बयार पड़ा**,
तुम मेरी प्रेरणास्त्रोत हो
तुम मेरी अस्थिर मन की स्थिरता हो
तुम मेरी भावना हो
तुम मेरी छाया हो
तुम मेरी माया हो
तुम मेरी अंर्तमन की सजीव कथा हो
हे SDN **के प्रांगण की देवी**
तुम SDN **की बयार हो।"**

लेखक के बारे में:

लेखक संदीप कुमार कुशवाहा वर्तमान समय में गांधी स्मारक हाई स्कूल सह इंटरमीडिएट कॉलेज, भोरे, गोपालगंज में अध्यापक के पद पर पदस्थापित है। जो समाज को प्रेरित करने के लिए कविता एवं लेख लिखते है। **Brain pathway training institute** के संस्थापक हैं साथ ही कुछ संस्थानो में परामर्शदाता के रूप में अपना योगदान देते है।

इन्होंने **'SDN की बयार'** पुस्तक के पूर्व समाज को दृष्टिकोण में रखते हुए **'DMIT आत्म-खोज की विज्ञान यात्रा'** नाम की पुस्तक लिखी जो पहले से ही प्रकाशित है। जो समाज के उत्थान में माता-पिता के लिए बच्चों को समझने में सहायता करती हैं, जिससे समाज आगे बढ़ सके।

SDN की बयार पुस्तक भी लेखक की संस्मरण, सामाजिक एवं भावनात्मक प्रस्तुति हैं।

संपर्क सूत्र: 8299362179
7484062179